राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........ 9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, गुरुवार, 19 दिसंबर 2025

वर्ष 07,अंक 79, पृष्ट 12,मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

ट्रक ने मासूम को कुचला हुई मौत सड़क पार करते समय हुआ हादसा, चालक हिरासत में वाहन जब्त...03

अवैध अतिक्रमण पर प्रशासन सख्त गरजा बुलडोजर....12

चार घंटे की बैठक, गोलमोल जवाब...IndiGo से संतुष्ट नहीं संसदीय समिति, 15 दिन बाद फिर पेशी

● इंडिगो के जवाब से संसदीय समिति संतुष्ट नहीं है. डीजीसीए ने समिति के सवालों के ठीक जवाब नहीं दिए. समिति ने 15 दिन बाद फिर पेश होने के लिए कहा है. इंडिगो ने 2 दिसंबर से देशभर में कई दिनों तक सैकड़ों उड़ानें रद्द की थीं।

इंडिगो फ्लाइट क्राइसिस को लेकर संसदीय समिति ने एयरलाइन और डीजीसीए के अधिकारियों पर नाराजगी जताई है. सूत्रों के मुताबिक, इंडिगो के जवाब से संसदीय समिति संतुष्ट नहीं है. डीजीसीए और इंडिगो के अधिकारी संसद की समिति के सामने पेश हुए. इस दौरान उन्होंने समिति के सवालों के ठीक जवाब नहीं दिए. समिति ने 15 दिन बाद फिर पेश होने के लिए कहा है।

समिति के सामने इंडिगो की ओर से COO की अगुवाई में अधिकारियों की एक टीम पेश हुई जबकि डीजीसीए और नागरिक उड्डयन मंत्रालय की तरफ से सचिव समीर कुमार सिन्हा पेश हुए. बैठक में एयर इंडिया, एयर इंडिया एक्सप्रेस, स्पाइसजेट और आकाशा के प्रतिनिधि भी शामिल हुए. इंडिगो ने 2 दिसंबर से देशभर में कई दिनों तक सैकड़ों उड़ानें रद्द की थीं।

जेडीयू सांसद संजय झा की अध्यक्षता में बैठक

जेडीयू सांसद संजय झा की अध्यक्षता वाली परिवहन, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय से संबंधित संसदीय स्थायी समिति किसी नतीजे पर नहीं पहुंची और इंडिगो के उडानों के रद्द होने के चलते एयरपोर्ट पर मची अफरा-तफरी की जिम्मेदारी तय करने से पहले नागरिक उड्डयन मंत्रालय जांच रिपोर्ट का इंतजार करने का फैसला किया।

समिति ने 15 दिन बाद फिर पेश होने को कहा

सूत्रों के मुताबिक, बैठक में कुछ सदस्यों ने पूछा कि संशोधित फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन (FDTL) नियमों के लागू होने के बाद क्या मंत्रालय ऐसी हालात से निपटने लिए तैयार था और क्या पायलटों की ड्यूटी की नई व्यवस्था से छूट पाने के मकसद से इंडिगो ने ये दबाव बनाने की रणनीति के तहत किया. इंडिगो और डीजीसीए के प्रतिनिधियों ने संतोषजनक जवाब नहीं दिए।

इसके बाद समिति ने 15 दिन बाद फिर से दोनों (इंडिगो-DGCA) को पेश होने को कहा है. यात्रियों को हुई असुविधा पर माफी मांगने के बजाय दोनों ने सारा दोष मौसम समेत दूसरी तकनीकी समस्याओं पर मढ़ने की कोशिश की। समिति ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय की तरफ से गठित चार सदस्यीय समिति की रिपोर्ट आने का इंतजार करने का फैसला किया जिसकी रिपोर्ट 28 दिसंबर तक सौंपे जाने की उम्मीद है. संसदीय समिति की इस बैठक में इंडिगो के सीओओ, डीजीसीए और पायलट संघ के पदाधिकारियों को बुलाया गया था।

DGCA- IndiGo की जमकर हुई खिंचाई

समिति की बैठक में सदस्यों ने हवाई सेवाओं के कैंसिलेशन के चलते हजारों यात्रियों को हुई दिक्कतों को लेकर इंडिगो और डीजीसीए को जमकर खिंचाई की. सदस्यों ने ये भी कहा कि संसद सत्र के लिए दिल्ली में मौजूद सांसदों को भी इंडिगो की उड़ानों के रद्द होने और दूसरे एयरलाइनों की देरी का खामियाजा भुगतना पड़ा।

सदस्यों ने ये भी पूछा कि इंडिगो ने डीजीसीए को कब बताया कि वो पायलट ड्यूटी के नए नियमों को लागू नहीं कर पाएगा और डीजीसीए ने मंत्रालय को कब इसकी जानकारी दी?

सदस्यों ने ये भी पूछा कि एयरलाइन और यात्रियों के बीच फ्लाइट रद्दीकरण और लगेज को लेकर कंम्यूनिकेशन गैप क्यों रहा?

कई सदस्यों ने उडानों के कैंसिलेशन के चलते हवाई किराए बढ़ने के का मामला भी उठाया।

संसदीय समिति ने सरकार को दिए 2 महत्वपूर्ण सुझाव

समिति ने कहा कि भविष्य में ऐसे हालात फिर से ना हो. समिति ने इसके लिए DGCA और एयरलाइनों की कार्यप्रणाली पर कड़ी और निरंतर निगरानी की सिफारिश की है।

समिति ने सरकार को यह भी सुझाव दिया कि फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन (FDTL) के विषय में किसी अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ को शामिल करने पर भी विचार किया जाए और साथ ही कोई अंतिम फैसला लेने से पहले FDTL से जुड़े अंतरराष्ट्रीय स्तर के बेस्ट स्टैंडर्ड का भी अध्ययन किया जाए।

नीतीश ने पहली बार महिला विरोधी हरकत नहीं की है, बीजेपी बचाव में उतरी

ब्यूरो प्रयागराज। आयुष डॉक्टरों के नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में नीतीश कुमार एक मुस्लिम महिला डॉक्टर को पत्र सौंप रहे थे। वीडियो में साफ दिखता है कि उन्होंने महिला के चेहरे से हिजाब (या नकाब) नीचे खींच दिया, जिससे उनका मुंह सामने नज़र आने लगा। यह हरकत सार्वजनिक मंच पर हुई, और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। हजार से अधिक आयुष (आयुर्वेदिक, यूनानी और होम्योपैथिक) डॉक्टरों को नियुक्ति पत्र वितरित करने के दौरान हुई इस घटना को विपक्ष ने 'घिनौना,' 'बेशर्म,' और 'नीच कृत्य' बताते हुए इसकी निंदा की है। मुख्यमंत्री से तत्काल इस्तीफे की मांग की जा रही है। कई लोगों ने तर्क दिया कि इस तरह के अनुचित कार्य के लिए ऐसे पुरुषों को या तो जेल में होना चाहिए या यदि नीतीश कुमार का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो उन्हें पागलखाने में भेजा जाना चाहिए।

पूरा विवाद मुख्यमंत्री के 'संवाद' सचिवालय में आयोजित समारोह के एक छोटे से क्लिप पर केंद्रित है। जब महिला डॉक्टर, जो कि एक नव-नियुक्त यूनानी चिकित्सक थीं, अपना नियुक्ति पत्र लेने के लिए मंच के पास पहुंचीं, तो उन्होंने हिजाब पहन रखा था जिसने उनका चेहरा भी ढका हुआ था। रिपोर्टों और वीडियो फुटेज के अनुसार, 75 वर्षीय मुख्यमंत्री ने रुककर महिला की ओर देखा और कथित तौर पर कहा, 'यह क्या है?' इसके बाद उन्होंने ऊंचे प्लेटफॉर्म से झुककर तेजी से महिला के चेहरे से हिजाब नीचे खींच दिया।

महिला स्पष्ट रूप से परेशान दिख रही थी। उसे तुरंत साथ आए एक अधिकारी ने आगे बढ़ा दिया। कुमार के बगल में खड़े उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी कथित तौर पर मुख्यमंत्री की आस्तीन खींचने की कोशिश करते दिखे, जो उन्हें रोकने का एक स्पष्ट प्रयास था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दर्शकों में कुछ लोग, जिनमें स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे भी शामिल थे, महिला डॉक्टर के स्पष्ट रूप से व्यथित होने पर भी हंसते हुए देखे गए।

इस्लामी विद्वानः देवबंद (यूपी) के मौलवी कारी इशाक गोरा ने कहा , 'एक तरफ आप महिलाओं के सम्मान की बात करते हैं, और दूसरी तरफ आप एक महिला का अपमान करते हुए देखे जाते हैं। इस मामले में नीतीश कुमार को पूरे देश की महिलाओं से माफी मांगनी होगी। '

जम्मू कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने कहा- नीतीश जी को व्यक्तिगत रूप से जानने और उनका सम्मान करने के कारण, एक युवती का नक़ाब खींचते हुए देखकर मुझे गहरा सदमा लगा। क्या इसे बुढ़ापे का असर माना जाए या मुसलमानों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने की सामान्य स्थिति?

राजद के प्रवक्ताओं ने दावा किया कि यह कार्य 'मुस्लिम समुदाय के प्रति एनडीए सरकार के रवैये' को स्पष्ट रूप से उजागर करता है और धार्मिक स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी का उल्लंघन है। कांग्रेस पार्टी ने मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग की और इस कृत्य को 'निंदनीय' और 'अक्षम्य' बताया। उनके आधिकारिक ङ्क हैंडल पर कहा गया, 'यदि राज्य के सर्वोच्च पद पर बैठा व्यक्ति सार्वजनिक रूप से इस तरह का अपमानजनक व्यवहार करता है, तो कोई केवल यह कल्पना कर सकता है कि राज्य में महिलाएं कितनी सुरक्षित हैं। नीतीश कुमार को इस घिनौने कृत्य के लिए तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। '

शिवसेना (यूबीटी) नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने इस कार्रवाई को 'सार्वजनिक उत्पीड़न' करार दिया और कहा कि 'किसी महिला का घूंघट जबरदस्ती खींचना एक मुख्यमंत्री द्वारा महिला का सार्वजनिक उत्पीड़न के अलावा और कुछ नहीं है।

संक्षिप्त ख़बरें

सुने घर से चोरों ने नकदी और आभूषण पर किया हाथ साफ

क्राइम

नैनी, प्रयागराज। औद्योगिक क्षेत्र में एक घर में चोरी की घटना सामने आई है। शादी समारोह से लौटे परिवार ने देखा कि उनके घर का ताला टूटा हुआ था और सामान बिखरा पड़ा था। चोर घर से आभूषण और नकदी लेकर फरार हो गए।मिली जानकारी के अनुसार महुवारी गंगोत्री पुरम रेलवे लाइन के पास रहने वाले विवेक कुमार सेन पुत्र आशाराम सेन ने बताया कि वह एक शादी के कार्यक्रम में शामिल होने बिलासपुर गए हुए थे। जब वे वापस लौटे, तो उन्होंने अपने घर का इंटरलॉक टूटा हुआ पाया।घर के अंदर सामान बिखरा पड़ा था और जांच करने पर पता चला कि कुछ आभूषण और नकदी गायब है। पीड़ित ने तत्काल औद्योगिक क्षेत्र थाने में तहरीर दी।पुलिस ने बताया कि पीड़ित की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और चोरों को पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

दुकानों का आवंटन दिनांक 26 दिसंबर को पूर्वाह्न 11:00 बजे से प्रयागराज मेला प्राधिकरण के कार्यालय में होगा

ब्यूरो प्रयागराज। माघ मेला 2025-26 के अवसर पर मेला क्षेत्र के सेक्टर-3 (परेड क्षेत्र) में त्रिवेणी रोड-जगदीश रैम्प के क्रासिंग पर अस्थायी दुकानों का आवंटन 'पहले आओ, पहले पाओ' (First Come, First Serve) के आधार पर किया जाना है। दुकानों का आवंटन दिनांक 26-12-2025 को पूर्वाह्न 11:00 बजे से प्रयागराज मेला प्राधिकरण के कार्यालय में किया जायेगा। अस्थायी दुकानों के आवंटन की प्रक्रिया एवं नियम एवं शर्तो की जानकारी दिनांक 18-12-2025 को अपरान्ह 04:00 बजे से प्रयागराज मेला प्राधिकरण कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर प्राप्त की जा सकती है।

डिपो के संविदा चालक ने वरिष्ठ केंद्र प्रभारी पर लगाए गंभीर आरोप, जांच की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- हमीरपुर डिपो में कार्यरत संविदा चालक वीरेंद्र सिंह ने वरिष्ठ केंद्र प्रभारी पर गंभीर आरोप लगाते हुए हड़कंप मचा दिया है। चालक का आरोप है कि उनके किलोमीटर भुगतान में कई महीनों से हेराफेरी की जा रही थी। जब उन्होंने इसकी शिकायत की तो उनसे 2000 रुपये की अवैध मांग की गई और पैसे न देने पर गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी गई। वीरेंद्र सिंह के अनुसार, 17 दिसंबर 2025 को सुबह करीब 11:50 बजे उन्होंने हमीरपुर डिपो के वरिष्ठ केंद्र प्रभारी विनोद कुमार मिश्रा से अपने किलोमीटर भुगतान में हो रही गड़बड़ी की शिकायत की थी। चालक का कहना है कि शिकायत के बाद मिश्रा ने उनका भुगतान कराने के एवज में 2000 रुपये की मांग की। जब उन्होंने रुपये देने से इनकार किया तो उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया और जान से मारने की धमकी देते हुए डिपो से भगा दिया गया।

चालक का यह भी आरोप है कि वरिष्ठ केंद्र प्रभारी ने यह कहते हुए उन्हें अपमानित किया कि वह उनके डिपो का चालक नहीं है। इस

घटना से आहत वीरेंद्र सिंह ने मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है। उन्होंने दावा किया है कि पूरी घटना की वीडियो रिकॉर्डिंग उनके पास मौजूद है, जिसे वह आवश्यकता पड़ने पर अधिकारियों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। वहीं, इस प्रकरण में दैनिक भास्कर द्वारा वरिष्ठ केंद्र प्रभारी विनोद कुमार मिश्रा से संपर्क करने पर उन्होंने सभी आरोपों को सिरे से नकार दिया। मिश्रा का कहना है कि वह वीरेंद्र सिंह को नहीं जानते और वह उनका चालक नहीं है। उन्होंने चालक को पत्रकार बताते हुए मामले पर कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया। मामला सामने आने के बाद परिवहन विभाग में चर्चा का विषय बना हुआ है। अब देखना होगा कि उच्च अधिकारी इस गंभीर आरोपों की जांच कर क्या कार्रवाई करते हैं।

पहली शादी समाप्त नहीं तो पार्टनर से भरण-पोषण का दावा नहीं कर सकती महिला', इलाहाबाद हाईकोर्ट की टिप्पणी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बुधवार को अहम फैसला सुनााया. कहा कि अगर किसी महिला की पहली शादी अभी समाप्त नहीं हुई है तो वह अपने साथ रहने वाले पार्टनर से सीआरपीसी की धारा 125 के तहत भरण-पोषण का दावा नहीं कर सकती है कोर्ट ने कहा कि शादी जैसा लंबा रिश्ता भी उसे 'पत्नी' का कानूनी दर्जा नहीं देता, अगर उसने अपने पहले पति से तलाक नहीं लिया है. न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह ने कहा कि अगर समाज में ऐसी प्रथा की इजाजत दी जाती है, जहां एक महिला कानूनी तौर पर एक आदमी से शादीशुदा रहती है।

फिर भी पहली शादी खत्म किए बिना दूसरे आदमी के साथ रहती है, उसके बाद दूसरे आदमी से मेंटेनेंस मांगती है तो सीआरपीसी की धारा 125 का मकसद और पवित्रता खत्म हो जाएगी. शादी की संस्था अपनी कानूनी और सामाजिक अखंडता खो देगी. कोर्ट ने एक महिला द्वारा दायर पुनरीक्षण याचिका खारिज करते हुए यह टिप्पणी की. याचिका में ट्रायल कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी थी जिसने उसकी भरण पोषण याचिका खारिज कर दी थी. याचिकाकर्ता ने दावा किया कि उसने जून 2009 में विपक्षी से शादी की थी, जब उसने बताया था कि उसने अगस्त 2005 में एक समझौते के जरिए अपनी पहली पत्नी से संबंध खत्म कर लिए।

उसने बताया कि वे लगभग 10 वर्षों तक पति-पत्नी की तरह साथ रहे. उसकी पत्नी के तौर पर उसका स्टेटस उसके आधार कार्ड और पासपोर्ट जैसे सरकारी दस्तावेजों में दर्ज है. उसने आरोप लगाया कि 10 साल बाद मार्च 2018 में उसके साथ क्रूरता की गई. उसे छोड़ दिया गया, इसलिए उसे भरण पोषण के लिए कोर्ट जाना पड़ा।

दूसरी ओर विपक्षी ने उसके दावे का विरोध करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता उसकी दूर की रिश्तेदार है. उनके बीच कोई वैध शादी नहीं हुई. यह भी कहा गया कि याचिकाकर्ता ने अपने पहले पति से तलाक कभी नहीं लिया. इस तरह वह उससे भरण पोषण नहीं मांग सकती क्योंकि वह कानूनी तौर पर किसी दूसरे आदमी की पत्नी है।

तर्कों के आधार पर हाईकोर्ट ने मामले के रिकॉर्ड की जांच की और पाया कि याचिकाकर्ता पहले से ही शादीशुदा थी. हालांकि उसने तलाक की याचिका दायर की, लेकिन उसे डिफॉल्ट रूप से खारिज कर दिया गया. कोर्ट ने कहा कि कानून की नजर में उसकी पहली शादी अभी भी कायम है. कोर्ट ने यह भी कहा कि विपक्षी भी पहले से ही एक महिला से शादीशुदा था और वह शादी भी खत्म नहीं हुई।

कोर्ट ने कहा कि चूंकि दोनों पक्ष अन्य व्यक्तियों से शादीशुदा थे, इसलिए उनका रिश्ता उनके बीच पति और पत्नी का कानूनी दर्जा नहीं बना सकता. कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता ने खुद माना कि उसकी शादी अभी भी कायम है और तलाक का कोई आदेश नहीं मिला है. कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के भरण-पोषण का आवेदन खारिज करने का आदेश बरकरार रखते हुए याचिका खारिज कर दी।

गुरुद्वारे मे लंगर वितरित किया गया

नैनी,प्रयागराज। राम नगर चौराहे के समीप रात में संग्रांद के अवसर पर गुरुद्वारे मे लंगर वितरित किया गया। जिसमे सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। समाजसेवी जितेन्द्र कुमार सिंह ने बताया की हर माह यह लंगर वितरित किया जाता है। लंगर वितरित करने वालों में बंटी सिंह, जितेन्द्र कुमार सिंह, सुरेन्द्र सिंह, मनप्रीत सिंह, पतविन्दर सिंह, आदि रहे।

दिल्ली दंगा केस में कोर्ट का बड़ा फैसला, ठोस प्रमाण न होने पर 5 आरोपी बरी

» कड़कड़डूमा कोर्ट ने पांच आरोपियों को किया बरी

» चांद बाग इलाके में दंगे का था मामला

» सबूतों के अभाव में अदालत का फैसला

नई दिल्ली। कड़कड़डूमा स्थित अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश की अदालत ने वर्ष 2020 दिल्ली दंगों से जुड़े एक मामले में पांच आरोपितों को सभी आरोपों से बरी कर दिया। इन आरोपियों पर चांद बाग इलाके में दंगा, आगजनी और तोड़फोड़ करने का मामला दर्ज था। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश परवीन सिंह ने आरोपित अब्दुल सत्तार, मुहम्मद खालिद, हुनैन, तनवीर और आरिफ को मामले में बरी करते हुए कहा कि अभियोजन अपनी बात संदेह से परे साबित नहीं कर पाया। न्यायाधीश ने सभी आरोपितों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। शिकायतकर्ता तरुण ने दावा किया था कि भजनपुरा पेट्रोल पंप पर भीड़ ने उस पर हमला किया और उसकी बाइक को आग लगाई। लेकिन अदालत ने पाया कि शिकायतकर्ता घायल अवस्था में पेट्रोल पंप पर नहीं बल्कि भजनपुरा चौक पर मिला। गवाहों और साक्ष्यों की शंकाओं के कारण अदालत ने यह निर्णय लिया कि अभियोजन की ओर से कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं कि आरोपित ही घटना के आरोपित थे। यह मामला फरवरी 2020 का है, जब चांद बाग इलाके में पत्थरबाजी और आगजनी की घटना हुई थी। इस मामले में भजनपुरा पुलिस स्टेशन में आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

अनमोल बिश्नोई-हैरी बॉक्सर गैंग के 5 शूटर गिरफ्तार; चंडीगढ़, अमृतसर और पंचकूला में हत्याकांडों के हैं आरोपी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने कुख्यात गैंग्स्टर अनमोल बिश्नोई-हैरी बॉक्सर व अरजू सिंडिकेट से जुड़े पांच शूटरों को गिरफ्तार किया है। चंडीगढ़ के सेक्टर-26 में इंदरप्रीत सिंह पैरी हत्याकांड, अमृतसर, पंजाब के आशु महाजन हत्याकांड और पंचकूला, हरियाणा के सोनू नोल्टा हत्याकांड में ये पांचों शूटर शामिल थे। इन तीनों राज्यों की पुलिस इन्हें ढूंढ रही थी। पांचों दिल्ली में किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने आए थे। ये अपने सरगना से आदेश मिलने का इंतजार कर रहे थे इससे पहले स्पेशल सेल ने इन्हें दबोच कर इनकी योजना पर पानी फेर दिया।

चार सेमी ऑटोमैटिक पिस्टल व 26 कारतूस बरामद

एडिशनल पुलिस कमिश्नर स्पेशल सेल के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए बदमाशों के नाम कुंवर बीर सिंह, कपिल, लवप्रीत सिंह उर्फ लव, पीयूष पिपलानी और अंकुश सोलंकी है। एसीपी धर्मेंद्र कुमार के नेतृत्व में स्पेशल सेल की टीम ने दो अलग-अलग ऑपरेशन में पांचों को गिरफ्तार किया। इनमें तीन को रिंग रोड शांति वन और दो को सराय काले खां से गिरफ्तार किया गया। पुलिस का दावा है कि इनकी गिरफ्तारी से अरजू, अनमोल बिश्नोई व हैरी बाक्सर सिंडिकेट की ताकत को नुकसान पहुंचा है। इनके कब्जे से चार सेमी ऑटोमैटिक पिस्टल व 26 कारतूस बरामद किए गए हैं।

पुराने अपराधी हैं सबके सब

पुलिस ने बताया कि पीयूष पिपलानी, पंचकूला, हरियाणा का रहने वाला है। इसके खिलाफ हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में पहले के छह केस दर्ज हैं। एक दिसंबर को सेक्टर 26, चंडीगढ़ में हुए इंदरप्रीत सिंह उर्फ पैरी की हत्या में वह मुख्य शूटर था। उसके खिलाफ सेक्टर 26, थाना चंडीगढ़ में केस दर्ज है। पांच जून को उसने पिंजौर, पंचकूला में हुए राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी सोनू नोल्टा की हत्या में भी शामिल था। पिंजौर, पंचकूला थाने में केस दर्ज है। सेल को सूचना मिली कि इंदरप्रीत सिंह पैरी हत्याकांड में शामिल अपराधियों में से एक वहां की पुलिस से बचने के लिए पहाड़गंज इलाके में आया हुआ है। सेल की टीम ने जांच पड़ताल कर कुंवरबीर सिंह, कपिल और लवप्रीत सिंह को रिंग रोड, शांति वन के पास से गिरफ्तार कर लिया।

सभी बदमाश आने वाले थे दिल्ली

पूछताछ और डाटा क्रॉस-रेफरेंसिंग व प्रोफेशनल रोल-प्ले से पता चला कि गिरफ्तार किए गए तीनों बदमाश के कुछ और साथी भी उनके साथ दिल्ली आने वाले हैं। जिसके बाद सराय काले खां बस अड्डा के पास से पीयूष पिपलानी और अंकुश सोलंकी को गिरफ्तार कर लिया गया।अंकुश सोलंकी, पंचकूला, हरियाणा का रहने वाला है। वह इंदरप्रीत सिंह उर्फ पैरी की हत्या और सोनू नोल्टा की हत्या में शामिल था।

इस मामले में उसके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी है। इसके खिलाफ हरियाणा के विभिन्न थाने में पहले के छह केस दर्ज हैं। कुंवरबीर, अमृतसर का रहने वाला है। वह इंदरप्रीत सिंह की हत्या के मामले में वांटेड था। वह उस टेल और गेटअवे कार का ड्राइवर था जिसमें पीयूष और अंकुश इंदरप्रीत सिंह को मारने के लिए बदमाश आए थे। इसके खिलाफ भी पंजाब में पहले के छह केस दर्ज हैं। लवप्रीत सिंह, नारायणगढ़, पंजाब का रहने वाला है। वह हाल ही में जमानत पर रिहा हुआ था। इसके खिलाफ पंजाब में पहले के दो केस दर्ज हैं। संतोख उर्फ कपिल खत्री, तरन तारन, पंजाब का रहने वाला है। सितंबर में अमृतसर, पंजाब में लायन बार एंड रेस्टोरेंट के मालिक आशुतोष महाजन उर्फ आशु की हत्या के मामले में वह वांछित था।

संक्षिप्त खबरें

ठंड व कोहरे के कारण विद्यालय समय परिवर्तन की मांग,शिक्षको ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

बस्ती। बस्ती जिले के उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जनपदीय अध्यक्ष चंद्रिका सिंह व मंत्री बालकृष्ण ओझा के नेतृत्व में शिक्षकों ने जिला अधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को अत्यधिक कोहरे व ठंड के कारण परिषद के विद्यालयों में समय परिवर्तन हेतु सौपा ज्ञापन ।ठंडके कारण विद्यालय में बच्चों की सुरक्षा को लेकर यह कदम उठाया गया है जिससे बच्चों को ठंडी के मौसम में विद्यालय का समय परिवर्तन किया जाए जिससे शिक्षक और बच्चे समय से विद्यालय पर पहुंच सके और ठंडी का बचाव हो सके जिला मंत्री बालकृष्ण ओझा ने बताया कि वर्तमान समय में ग्रामीण अंचलों में कोहरे का प्रभाव बढ़ गया है। शिक्षकों को विद्यालय आने-जाने में भी अत्यधिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण अंचलों में कोहरे की वजह से बच्चे भी विद्यालय में देरी से आ रहे हैं तथा उनकी संख्या भी निरंतर घटती ही जा रही है।

अखिलेश बने अध्यक्ष, धीरेन्द्र मंत्री चुने गये

लालगंज, प्रतापगढ़। उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ प्रतापगढ़ के तत्वावधान में छत्रधारी इण्टर कालेज लखपेड़ा कोटा भवानीगंज की इकाई का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मत से अखिलेश कुमार शुक्ल को अध्यक्ष, धीरेन्द्र प्रताप सिंह मंत्री, अनिल कुमार मिश्र कोषाध्यक्ष तथा सुरेश बहादुर सिंह को आय व्यय निरीक्षक मनोनीत किया गया। इस मौके पर प्रधानाचार्य राजेन्द्र पाण्डेय, अनिल कुमार सिंह, अरविन्द कुमार सिंह, अभयानंद द्विवेदी आदि शिक्षकों ने खुशी जतायी है।

घायल युवक की इलाज के दौरान मौत, मचा कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। नाले में अचेतावस्था में लहूलुहान पड़े मिले युवक की बुधवार को इलाज के दौरान मौत हो गयी। मौत की जानकारी होने पर परिवार में कोहराम मच गया। लालगंज कोतवाली के पूरे तिलकराम इलाके में तिनमोहनिया के समीप एक नाले में मंगलवार की सुबह करीब दस बजे युवक के अचेतावस्था में पड़े होने की सूचना ग्रामीणों ने पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस घायल युवक को इलाज के लिए ट्रामा सेंटर ले आयी। यहां हालत गंभीर देख घायल को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। उधर पुलिस की छानबीन में युवक की पहचान लीलापुर थानान्तर्गत सरायताल सरैंया मकई निवासी 44 वर्षीय दिनेश वर्मा पुत्र रामेश्वर वर्मा के रूप में हुई थी। घायल युवक ईरिक्शा चलाकर जीविकोपार्जन करता था। सोमवार की सुबह वह घर से ईरिक्शा लेकर निकला था। इसके बाद वापस घर नही लौटा था। परेशान परिजन उसकी तलाश कर रहे थे। परिजनों ने युवक की हत्या का प्रयास करने की आशंका जतायी है। स्वरूप रानी अस्पताल प्रयागराज में बुधवार को दोपहर करीब पौने तीन बजे घायल दिनेश वर्मा की इलाज के दौरान मौत हो गयी। मौत की जानकारी होने पर परिजनों में कोहराम मच गया। कोतवाल आलोक कुमार का कहना है कि घायल युवक की मौत हो गयी है। मृतक के पुत्र अंकुश वर्मा की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है।

सिपाही की तहरीर पर मारपीट का केस दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। दो पक्षों में हुई मारपीट की घटना में पुलिस की तहरीर पर आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। लालगंज कोतवाली मे तैनात सिपाही श्रवण कुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती सोलह दिसंबर को वह सिपाही मुकेशचंद्र गुप्ता के साथ पूरे नैन टोडरपुर इलाके में गश्त पर था। इसी दौरान टोडरपुर गांव में बीती पन्द्रह दिसंबर की रात उमाकांत पाण्डेय पुत्र स्व0 ज्ञानपाल पाण्डेय तथा उमाकांत की पत्नी सरिता एवं विपक्षी वैभव पाण्डेय उर्फ सत्यम तथा इनके पिता संजय पाण्डेय के बीच बंटवारे को लेकर विवाद हुआ। जिसमें दोनों पक्षो के बीच मारपीट की सूचना मिली। जांच में सूचना सही पाये जाने पर दोनों पक्षों के आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार का कहना है कि सिपाही की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है।

सरकारी समिति से मिल रही यूरिया खाद में ईट और कंकड़, किसानों के साथ खुला धोखा

●खाद की किल्लत और मिलावटी यूरिया से कैसे होगी किसानों की आय दोगुनी कोई जिम्मेदार अधिकारी शिकायत सुनने को तैयार नहीं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले की सरकारी समितियों से किसानों को उपलब्ध कराई जा रही यूरिया खाद की गुणवत्ता को लेकर गंभीर आरोप सामने आए हैं। एक किसान, जो बस्ती जिले का ही निवासी है बताया कि समिति से मिलने वाली यूरिया खाद में भारी मात्रा में ईट,कंकड़ और पत्थर मिले हुए हैं। ऐसी मिलावटी खाद किसानों को मजबूरी में खेतों में डालनी पड़ रही है, जिससे फसलों को नुकसान होने की आशंका बढ़ गई है।किसान का कहना है कि एक ओर सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के दावे कर रही है, वहीं दूसरी ओर खेती के लिए सबसे जरूरी खाद ही शुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं हो पा रही है। खाद की किल्लत इतनी अधिक है कि किसान घंटों लाइन में खड़े रहने के बाद भी खाद नहीं पा रहे हैं। और जिन किसानों को किसी तरह खाद मिल भी जाती है, उसकी गुणवत्ता बेहद खराब है।किसानों के अनुसार मिलावटी खाद से बुवाई करने पर न तो फसल की सही बढ़वार होती है और न ही अपेक्षित उत्पादन मिलता है। इससे किसानों की लागत बढ़ रही है और मुनाफा घटता जा रहा है। मजबूरी में किसान यही खाद इस्तेमाल करने को विवश हैं, क्योंकि निजी दुकानों पर खाद या तो उपलब्ध नहीं है या फिर ऊंचे दामों पर ब्लैक में बेची जा रही है।अब सवाल यह उठता है कि इस पूरे मामले की जिम्मेदारी किसकी है–सरकार की या प्रशासन की? क्या संबंधित विभाग और अधिकारी खाद की गुणवत्ता की नियमित जांच नहीं कर रहे हैं, या फिर लापरवाही के चलते यह मिलावट किसानों तक पहुंच रही है? यदि सरकारी समिति से ही मिलावटी खाद वितरित हो रही है, तो यह पूरे तंत्र की विफलता को दर्शाता है। कई किसानों ने मांग की है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो और सरकारी समितियों से किसानों को समय पर शुद्ध एवं पर्याप्त मात्रा में यूरिया खाद उपलब्ध कराई जाए। किसानों का कहना है कि जब तक उन्हें सही गुणवत्ता की खाद नहीं मिलेगी, तब तक किसानों की आय दोगुनी करने की बात सिर्फ नारे तक सीमित रह जाएगी। यह मामला बस्ती जिले के किसानों की समस्याओं को उजागर करता है और अब सबकी निगाहें प्रशासन की कार्रवाई पर टिकी हैं कि वह इस गंभीर मुद्दे पर कब और क्या ठोस कदम उठाता है।

पहल वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा संचालित बलरामपुर रसोई के द्वारा किया गया विशाल भंडारा

बलरामपुर – जनपद बलरामपुर के विकासखंड हरैया सतघरवा के ग्राम पंचायत लखनीपुर भुसैलिया में पहल वेलफेयर फाउंडेशन के चेयरमैन प्रमोद तिवारी द्वारा संचालित बलरामपुर रसोई के माध्यम से विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। बलरामपुर रसोई समय-समय पर विशाल भंडारा का आयोजन करती है एवं बलरामपुर स्थित समय माता मंदिर धुसाह में असहाय गरीबों के लिए निशुल्क प्रतिदिन भोजन भरपेट की व्यवस्था किया जाता है। बलरामपुर रसोई में प्रतिदिन सैकड़ो लोग खाना खाते हैं। विशाल भंडारे के आयोजन में क्षेत्रवासी ग्रामवासी बढ़ चढ़कर प्रसाद ग्रहण किया।

बस्ती में भयानक सड़क हादसा, चार की मौत, दो दर्जन घायल

●टोल बचाने के चक्कर में यात्रियों की जान आफत मे

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले में ज्यादातर वाहन टोल टैक्स बचाने के चक्कर में हादसे हो रहे हैं। बड़ेवन टोल प्लाजा से पहले गोरखपुर और लखनऊ की तरफ से आने वाले वाहन हरदिया से चौराहे से मुड़ जा रहे हैं। ऐसा तब हो रहा है जब बस्ती मे लोगों को दो जगह टोल देना पड़ रहा है। शासन प्रशासन इसको लेकर गंभीर नही है। कोतवाली थाना क्षेत्र मे हरदिया के पास सोमवार रात करीब 11 बजे हुये भयानक सड़क हादसे में 4 लोगों की दर्दनाक मौत हो गयी जबकि दो दर्जन लोग से ज्यादा घायल हैं। मृतकों की पहचान अब्दुल्ला (60) निवासी बस्ती, मुख्तार अली (75) निवासी बस्ती, संदीप पांडेय (32) (बस चालक), निवासी बस्ती और शिवराज सिंह (ट्रक चालक) के रूप में हुई है। घायलों का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। दरअसल सोमवार को संतकबीर नगर से एक प्राइवेट बस यात्रियों को लेकर अजमेर शरीफ के उर्स में शामिल होने जा रही थी। बस जैसे ही हरदिया के पास पहुंची, सामने से आ रहे ट्रक से उसकी जोरदार टक्कर हो गई। हादसे के बाद दोनो वाहनों का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त होकर चिपक गया। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस फोर्स ने तुरन्त रेस्क्यू शुरू किया। हादसे मे चार लोगों की मौत हुई है। बस में करीब 60 लोग सवार थे। घटना की सूचना पाकर डीआईजी संजीव त्यागी, जिलाधिकारी कृतिका ज्योत्सना, पुलिस अधीक्षक अभिनंदन और एडीएम प्रतिपाल सिंह चौहान मौके पर पहुंचे। भारी संख्या में पुलिस बल तैनात कर यातायात को नियंत्रित किया गया प्रशासन ने परिजनों को हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया है।

डीएम ने किया रक्तदान व निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले के जिला अधिकारी द्वारा शिविर का उद्घाटन किया1971 के भारत पाक युद्ध में अपने अदम्य साहस, शौर्य का पराक्रम दिखाते हुये ऐतिहासिक विजय का परचम फहराने वाले मां भारती के अमर जवानों की याद मे मनाये जाने वाले विजय दिवस के अवसर पर रेडक्रास सोसायटी की बस्ती शाखा की ओर से राजेश कुमार ओझा के संयोजन में सैनिक कल्याण एवं पुनर्वावास कार्यालय परिसर में रक्तदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी कृत्तिका ज्योत्सना तथा मुख्य चिकिसधिकारी राजीव निगम ने फीता काटकर शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर 37 यूनिट रक्तदान किया गया और सैकड़ों लोगों ने स्वास्थ्य परीक्षण करवाकर निःशुल्क परामर्श व दवाइयों का लाभ उठाया। उक्त जानकारी देते हुये सोसायटी के सचिव रंजीत श्रीवास्तव ने बताया कि शिविर में कुल 350 से ज्यादा लोगों ने निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ लिया। इसमे ईसीजी, एलएफटी, केएटी, पीएफटी, सुगर, बीपी, लिपिड प्रोफाइल आदि जाचें शामिल थीं। इस अवसर पर कई लोगों ने रेडक्रास सोसायटी की सदस्यता भी ली। राजेश कुमार ओझा ने इंडियन रेडक्रास सोसायटी के बारे मे लोगों को विस्तार से जानकारी देते हुये सदस्यता ग्रहण करने का आवाह्न किया।

सोसायटी के उपसभापति डा. एलके पाण्डेय ने कहा रक्तदान हमे कई गंभीर रोगों के खतरे से बचाता है। सोसायटी के चेयरमैन डा. प्रमोद कुमार चौधरी ने सभी सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होने कहा रक्तदान से घबराना नही चाहिये। स्वस्थ रहने के लिये रक्तदान जरुरी है। शिविर मे प्रमुख रूप से डा. अनिल कुमार श्रीवास्तव, डा. विनोद अग्रहरि, डा. मनोज सिंह, डा. संजय, सतेन्द्र दूबे, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, रणविजय सिंह, तथा आयोजन समिति के जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल देविन्द्र गोहानी, लेफ्टिनेंट कर्नल दिनेश कुमार सिंह, डॉक्टर राम गोपाल सिंह पूर्व प्रधानाचार्य, ओएन उपाध्याय, कैप्टन आर के यादव, कैप्टन दिनेश सिंह, राम जी गौड़, केके श्रीवास्तव, नरसिंह प्रसाद, विजयपाल, महेंद्र सिंह आदि का सहयोग रहा।

बस्ती के अस्पताल में जन्मा दुर्लभ बीमारी से ग्रसित नवजात, डॉक्टरों ने शुरू की गहन जांच

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले के एक अस्पताल में जन्मे नवजात की शारीरिक बनावट सामान्य से अलग होने के कारण कुछ देर के लिए अस्पताल में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। बच्चे की स्थिति देखकर डिलीवरी के समय मौजूद डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ भी हैरान रह गए। शुरुआती क्षणों में सोशल चर्चाओं के बीच इसे लेकर तरह-तरह की अटकलें लगाई जाने लगीं, हालांकि चिकित्सकों ने स्पष्ट किया कि यह मामला किसी दुर्लभ चिकित्सकीय स्थिति से जुड़ा हो सकता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार लालगंज थाना क्षेत्र के खदरा गांव की एक 25 वर्षीय महिला ने बस्ती मेडिकल कॉलेज कैली हॉस्पिटल के में सर्जरी द्वारा विकृति बच्चे(हार्लेक्विन इचथियोसिस युक्त बेबी) को जन्म दिया है। डॉ. सहित अन्य लोगों ने जब इस बच्चे को देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गए।

डॉक्टरों के अनुसार, प्रारंभिक जांच में यह आशंका जताई जा रही है कि नवजात हार्लेक्विन बेबी सिंड्रोम जैसी दुर्लभ त्वचा संबंधी बीमारी से प्रभावित हो सकता है। इस स्थिति में त्वचा का विकास असामान्य रूप से होता है, जिससे शरीर पर मोटी, खिंची हुई परतें दिखाई देती हैं। बच्चे की हालत को देखते हुए डॉक्टरों ने तत्काल बायोप्सी और केराटिन (Keratin) टेस्ट कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विशेषज्ञों का कहना है कि प्रोटीन और म्यूकस लेयर में गड़बड़ी तथा त्वचा की असामान्य वृद्धि के कारण इस तरह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अस्पताल प्रशासन और चिकित्सकों ने साफ किया है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद ही नवजात की वास्तविक बीमारी और इसके कारणों की पुष्टि हो सकेगी। फिलहाल बच्चे को विशेष निगरानी में रखा गया है और उसे उच्च स्तरीय चिकित्सकीय देखरेख उपलब्ध कराई जा रही है। डॉक्टरों ने लोगों से अपील की है कि किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें और जांच पूरी होने तक धैर्य बनाए रखें। पूरा मामला बस्ती जिले के एक अस्पताल से जुड़ा बताया जा रहा है।

शुकुल बाजार में प्रशासन के अलाव नहीं जले, ठंड से ठिठुरते रहे व्यापारी व राहगीर

●चौराहों व सार्वजनिक स्थानों पर अलाव जलवाने की उठी मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शुकुल बाजार अमेठी। कड़ाके की ठंड के बीच शुकुल बाजार क्षेत्र में प्रशासन की ओर से ठंड से बचाव के लिए जलवाए जाने वाले अलाव न जलने से आमजन को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कस्बे के प्रमुख चौराहों और सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था न होने से सुबह और रात के समय व्यापारियों, राहगीरों और रिक्शा-ऑटो चालकों को ठंड में ठिठुरना पड़ रहा है।स्थानीय व्यापारियों का कहना है कि हर वर्ष ठंड के मौसम में प्रशासन द्वारा बाजार, अस्पताल के आसपास और प्रमुख चौराहों पर अलाव जलवाए जाते हैं, लेकिन इस बार अब तक कहीं भी अलाव जलता नजर नहीं आ रहा है। सुबह-सुबह दुकान खोलने वाले व्यापारी और देर रात तक कारोबार करने वाले दुकानदार ठंड से सबसे अधिक प्रभावित हैं।राहगीरों और दैनिक मजदूरों ने भी अपनी व्यथा बताते हुए कहा कि सुबह और शाम के समय ठंड काफी बढ़ गई है। बस का इंतजार करने वाले यात्रियों और बाजार से गुजरने वाले लोगों को ठंड से बचने के लिए कहीं कोई व्यवस्था नहीं है। मजबूरी में लोग जलावन इकट्ठा कर खुद आग जलाने का प्रयास करते हैं, जिससे हादसे की आशंका भी बनी रहती है।स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि शुकुल बाजार के प्रमुख चौराहों, बाजार क्षेत्र, अस्पताल और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर तत्काल अलाव जलवाए जाएं, ताकि ठंड से राहत मिल सके। लोगों का कहना है कि यदि जल्द व्यवस्था नहीं की गई तो बुजुर्गों, बच्चों और गरीब तबके के लोगों की परेशानी और बढ़ जाएगी।इस संबंध में तहसीलदार ने कहा ठंड को देखते हुए जितने भी स्थानों का चयन हुआ है वहां अलाव की व्यवस्था जल्द शुरू कराई जाएगी। फिलहाल लोगों को उम्मीद है कि प्रशासन शीघ्र संज्ञान लेकर ठंड से बचाव के आवश्यक इंतजाम करेगा।

अमेठी के क्रिकेटर प्रशांत वीर तिवारी की चमकी किस्मत, लगी 14.20 करोड़ की बोली

●गांव में जश्न का माहौल, बांटी मिठाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेठी। आईपीएल 2026 के मिनी ऑक्शन में संग्रामपुर के सहजीपुर गांव निवासी युवा ऑलराउंडर प्रशांत वीर तिवारी की किस्मत चमक गई। 30 लाख रुपये के बेस प्राइस के साथ नीलामी में उतरे प्रशांत वीर को चेन्नई सुपर किंग्स ने बड़ी बोली लगाकर अपने खेमे में शामिल किया। इसके साथ ही वह इस ऑक्शन के सबसे महंगे अनकैप्ड खिलाड़ी बन गए। प्रशांत वीर जिले की ब्लॉक संग्रामपुर के सहजीपुर गाँव के निवासी हैं। उनके पिता का नाम रामेंद्र तिवारी है। छोटे से गांव से निकलकर आईपीएल जैसे बड़े मंच तक पहुंचना न सिर्फ अमेठी बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गर्व की बात है। मंगलवार को अबू धाबी के एतिहाद एरिना में हुई नीलामी के दौरान जैसे ही प्रशांत वीर का नाम पुकारा गया, कई फ्रेंचाइजियों के बीच जबरदस्त मुकाबला देखने को मिला। प्रशांत वीर ने हाल के घरेलू सत्र में बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2025-26 में प्रभावशाली खेल दिखाया, वहीं उत्तर प्रदेश टी20 लीग 2025 में नोएडा सुपर किंग्स की ओर से खेलते हुए उन्हें उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए 'एमर्जिंग प्लेयर ऑफ द सीजन' का खिताब भी मिला।

वहीं, आईपीएल 2026 मिनी ऑक्शन में कई अन्य बड़ी बोलियां भी चर्चा में रहीं। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे विदेशी खिलाड़ी बने, जिन्हें कोलकाता नाइट राइडर्स ने 25.2 करोड़ रुपये में खरीदा। श्रीलंका के तेज गेंदबाज मथीशा पथिराना को भी केकेआर ने 18 करोड़ रुपये में अपने साथ जोड़ा। भारतीय खिलाड़ियों में वेंकटेश अय्यर पर सबसे बड़ी बोली लगी, जिन्हें रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 7 करोड़ रुपये में खरीदा। आईपीएल 2026 के लिए हो रही इस मिनी नीलामी में कुल 369 खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें 240 भारतीय और 110 विदेशी खिलाड़ी हैं। अमेठी के गूजीपुर गांव से निकलकर पिता रामेंद्र तिवारी के बेटे प्रशांत वीर की यह उपलब्धि आने वाली पीढ़ी के खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बन गई है।

आयुष्मान कार्ड के नाम पर जमीन हड़पने वाला गिरोह गिरफ्तार

●बलरामपुर पुलिस ने 25 लाख की जमीन की धोखाधड़ी का किया खुलासा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। थाना गैण्डास बुजुर्ग क्षेत्र में आयुष्मान कार्ड बनवाने के नाम पर एक व्यक्ति की करोड़ों की जमीन हड़पने के मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि अभियुक्तों ने धोखाधड़ी, बेईमानी व छल-कपट से कूट रचित दस्तावेज तैयार कर मात्र 25 हजार रुपये खाते में भेजकर लगभग 25 लाख रुपये बाजार मूल्य की जमीन का बैनामा करा लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 16 दिसंबर 2025 को वादी शत्रोहन पुत्र भागीरथ निवासी ग्राम नन्दौरी, थाना गैण्डास बुजुर्ग ने थाने पर शिकायती प्रार्थना पत्र दिया। तहरीर में आरोप लगाया गया कि गांव के ही सियाराम पुत्र भग्गन, मुन्नूलाल पुत्र कुद्दुर तथा शब्बीर अहमद पुत्र अब्दुल शकुर निवासी ग्राम मझांरी तप्पाबांक, थाना कोतवाली उतरौला द्वारा एक साजिश के तहत आयुष्मान कार्ड बनवाने के बहाने उसकी जमीन का कूट रचित दस्तावेजों के माध्यम से बैनामा करा लिया गया। विरोध करने पर गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी भी दी गई। तहरीर के आधार पर थाना गैण्डास बुजुर्ग में मु0अ0सं0 115/2025 धारा 318(4)/ 338/ 336(3)/ 340(2)/ 352/ 351(3) बीएनएस के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया। पुलिस अधीक्षक बलरामपुर के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पाण्डेय एवं क्षेत्राधिकारी उतरौला राघवेन्द्र सिंह के पर्यवेक्षण में थानाध्यक्ष राजीव कुमार मिश्र के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित की गई।

दिनांक 17 दिसंबर 2025 को पुलिस टीम ने मुखबिर की सूचना पर बहद ग्राम हासिमपारा, शराब भट्ठी मोड़ के पास से तीनों नामित अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में अभियुक्तों ने स्वीकार किया कि शत्रोहन अकेले रहते थे और बीमार रहते थे। इसी का फायदा उठाकर आपस में साजिश रचते हुए आयुष्मान कार्ड बनवाने के बहाने 6 मई 2024 को उन्हें उतरौला ले जाकर बैनामा करा लिया गया। रजिस्ट्री कार्यालय के बाहर बैठे एक व्यक्ति को 80 हजार रुपये देकर कर्मचारियों की मदद से यह फर्जीवाड़ा कराया गया। पुलिस के अनुसार जिस जमीन का बैनामा मात्र 2 लाख रुपये में दिखाया गया, उसका जिलाधिकारी द्वारा निर्धारित सर्किल रेट 7.40 लाख रुपये है, जबकि वास्तविक बाजार मूल्य लगभग 25 लाख रुपये आंका गया है।

गिरफ्तार अभियुक्तः–

1. सियाराम पुत्र भग्गन, उम्र करीब 50 वर्ष, निवासी ग्राम नन्दौरी
2. मुन्नूलाल पुत्र कुद्दुर, उम्र करीब 44 वर्ष, निवासी ग्राम नन्दौरी
3. शब्बीर अहमद पुत्र अब्दुल शकुर, उम्र करीब 60 वर्ष, निवासी ग्राम मझांरी तप्पाबांक

गिरफ्तारी टीमः– उप निरीक्षक किसलय मिश्र, उप निरीक्षक शरद कुमार अवस्थी, कांस्टेबल देवाशीष मिश्र, नीरज यादव, अविनाश तिवारी व श्रीकान्त। पुलिस ने तीनों अभियुक्तों को न्यायालय में पेश करने की प्रक्रिया पूरी कर ली है। मामले में रजिस्ट्री कार्यालय से जुड़े अन्य संदिग्धों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

योगी सरकार की खेल नीति को मिल रहा धरातली स्वरूप - सुरेश पासी

●जगदीशपुर में ग्रामीण खेल लीग दौड़ प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ विधायक ने दिखाई हरी झंडी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जगदीशपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन में युवा कल्याण एवं प्रान्तीय रक्षक दल विभाग द्वारा आयोजित उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीग (2025-2026) के अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र जगदीशपुर में दौड़ प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक सुरेश पासी ने बच्चों को हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर खेल मैदान उत्साह, जोश और अनुशासन से सराबोर नजर आया।प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर विधायक सुरेश पासी ने कहा कि योगी सरकार की प्राथमिकता ग्रामीण अंचलों की प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ाने की है। ग्रामीण खेल लीग उसी दिशा में एक सार्थक पहल है, जिससे गांवों में छिपी खेल प्रतिभाओं को मंच मिल रहा है। उन्होंने कहा कि खेल केवल शारीरिक विकास का माध्यम नहीं हैं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का भी निर्माण करते हैं।विधायक ने प्रतिभागी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि मेहनत, लगन और निरंतर अभ्यास से ही सफलता मिलती है। योगी सरकार खेल और खिलाड़ियों को हरसंभव सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। आज ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं, जो सरकार की खेल नीति की सफलता को दर्शाता है।इस अवसर पर आयोजित दौड़ प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली।

खेल मैदान पर दर्शकों की भारी भीड़ मौजूद रही, जिन्होंने खिलाड़ियों का तालियों से उत्साहवर्धन किया।युवा कल्याण विभाग के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीग का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में खेल संस्कृति को बढ़ावा देना तथा युवाओं को नशा और कुरीतियों से दूर रखते हुए सकारात्मक दिशा में प्रेरित करना है। प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागियों को आगे जिला एवं मंडल स्तर पर खेलने का अवसर मिलेगा।कार्यक्रम के दौरान खेल विभाग द्वारा खिलाड़ियों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई थीं। चिकित्सा सुविधा, जलपान एवं सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम रहे। प्रतियोगिता को सफल बनाने में स्थानीय प्रशासन, खेल विभाग के कर्मचारियों, शिक्षकों एवं स्वयंसेवकों की सराहनीय भूमिका रही।स्थानीय जनप्रतिनिधियों और गणमान्य नागरिकों ने भी ग्रामीण खेल लीग की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजनों से गांवों में खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और युवा अपनी ऊर्जा का सही उपयोग कर सकेंगे।कार्यक्रम के समापन पर विधायक सुरेश पासी ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हार-जीत खेल का हिस्सा है, लेकिन मैदान में उतरकर प्रयास करना ही सबसे बड़ी जीत है। उन्होंने आश्वासन दिया कि क्षेत्र में खेल सुविधाओं के विकास के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे।ग्रामीण खेल लीग के इस आयोजन ने यह स्पष्ट कर दिया कि उत्तर प्रदेश अब खेलों के क्षेत्र में भी नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है और गांव का युवा भी अपने हुनर से प्रदेश और देश का नाम रोशन करने के लिए तैयार है। विधायक ने कहा बच्चों में खेल भावना, अनुशासन एवं आत्मविश्वास के विकास की इस सराहनीय पहल हेतु सरकार का आभार व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ।

घर में घुसकर हजारों की चोरी, दी तहरीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज, प्रतापगढ़। घर में घुसकर हजारों के जेवरात व कीमती सामान चोर उठा ले गये। पीड़ित ने पुलिस को घटना की तहरीर दी है। लालगंज कोतवाली के फतेशाहपुर सराय जानमती गांव निवासी हरकेश वर्मा पुत्र सूरज वर्मा ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती 16 दिसंबर की रात वह परिवार के साथ घर में सो रहा था। इसी बीच अज्ञात चोर घर में घुस आये और बाक्स का ताला तोड़कर हजारों के जेवरात व अन्य कीमती सामान उठा ले गये। मंगलवार की सुबह परिवार के लोग जब सोकर उठे तो घर में बिखरा सामान देख आवाक रह गये। छानबीन में घर से कुछ दूर स्थित खेत में चोरी किया गया बक्सा पड़ा मिला और उसमें से कीमती सामान गायब थे। पीड़ित ने पुलिस को अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी है। प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार का कहना है कि जांच के बाद उचित कार्रवाई की जायेगी।

संक्षिप्त खबरें

तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से साइकिल सवार बुजुर्ग गंभीर घायल

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के रायबरेली रोड स्थित बाल्हेमऊ नहर पुलिया के पास बुधवार को तेज रफ्तार बाइक सवार ने साइकिल सवार बुजुर्ग को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बुजुर्ग गंभीर रूप से घायल हो गए।जानकारी के अनुसार पिलखा गांव निवासी जुगुल किशोर (60) साइकिल से रेल कोच फैक्ट्री की ओर जा रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही वह सड़क पर गिर पड़े और गंभीर रूप से घायल हो गए।आसपास के लोगों की मदद से घायल बुजुर्ग को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां चिकित्सकों ने हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

रंजिश में ईंट मार कर सिर फोड़ा

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के पूरे विजई मजरे मेंरुई गांव में बुधवार को पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्षो में मारपीट हो गई। मारपीट में एक व्यक्ति के सिर पर गंभीर चोटे आ गई। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को तहरीर दी है। गांव निवासी राजेंद्र यादव ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि वह सुबह दरवाजा साफ कर रहा था। पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही मुन्ना यादव व उनकी बेटी कोमल गाली गलौज करने लगी एतराज करने पर लाठी डंडे और ईंट के प्रहार से उसका सिर फोड़ दिया। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर कार्रवाई की गई है।

ट्रक चालक पर लापरवाही से वाहन चलाने का केस दर्ज

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के डलमऊ रोड पर डिहवा चौराहे के पास हुई सड़क दुर्घटना के मामले में घायल महिला की बेटी की शिकायत पर पुलिस ने ट्रक चालक के विरुद्ध लापरवाही से वाहन चलाने का केस दर्ज किया। पूरे लालबेग मजरे बहाई कृष्ण कुमारी ने पुलिस को तहरीर बताया कि गत शनिवार को उसकी मां श्यामा देवी (60) पिता छत्रपाल के साथ साइकिल से बाजार से लौट रही थीं। डिहवा चौराहे के पास पीछे से आए बेकाबू ट्रक ने तेज रफ्तार में साइकिल में टक्कर मार दी।टक्कर लगते ही उसकी मां सड़क पर गिर गई। ट्रक का पहिया उसके बाएँ हाथ पर चढ़ गया। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर जांच की जा रही है। ट्रक पुलिस के कब्जे में है।

सीसीटीवी कैमरों से रखी जाएगी रैन बसेरों पर नजर, नोडल अधिकारी और केयर टेकर की होगी व्यवस्था

लखनऊ। निराश्रित व बेसहारा लोगों को ठंड से बचाने के लिए बनाए गए रैन बसेरों की सीसीटीवी कैमरे से निगरानी की जाएगी। स्थानीय निकाय निदेशक अनुज कुमार झा ने सभी जिलाधिकारियों को रैन बसेरा की सुविधाओं पर नजर रखने के लिए सभी जगह सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि अधिकतर रैन बसेरों से चादर व कंबल की धुलाई, शौचालयों की नियमित सफाई न होने की शिकायतें आती हैं। इसलिए अब व्यवस्थाओं की निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगवाएं जाएं। इससे किसी तरह की गड़बड़ी होने की संभावना नहीं रहेगी। यदि कुछ होगा भी तो उसे तुरंत ठीक कराया जा सकेगा।

उन्होंने सभी रैन बसेरों के लिए नोडल अधिकारी नामित करने, निकाय अधिकारियों को रैन बसेरों में देखभाल के एक व्यक्ति की तैनाती के भी निर्देश दिए हैं। उनका नाम, मोबाइल नंबर रैन बसेरे के गेट पर लिखा जाएगा। उन्होंने रैन बसेरा व शेल्टर होम में रहने वालों को ठंड से बचाव साफ चादर, तकिया, कंबल, गरम पानी, शौचालय, प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

ट्रक ने मासूम को कुचला हुई मौत सड़क पार करते समय हुआ हादसा, चालक हिरासत में वाहन जब्त

● ट्रक ने मासूम को कुचला हुई मौत सड़क पार करते समय हुआ हादसा, चालक हिरासत में वाहन जब्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के पिसावां थाना क्षेत्र में बुधवार सुबह एक सड़क हादसे में दो वर्षीय मासूम की मौके पर ही मौत हो गई। यह हादसा महोली-बरगावां मार्ग पर रमखेड़ा गांव के पास हुआ जहां सड़क पार करते समय एक ट्रक ने बच्चे को कुचल दिया। पुलिस ने आरोपी ट्रक चालक को हिरासत में ले लिया है और वाहन जब्त कर लिया है। सेज खुर्द गांव निवासी महेंद्र का दो वर्षीय बेटा कान्हा बुधवार सुबह घर के पास दुकान से नमकीन लेने सड़क पार कर रहा था इसी दौरान बरगावां की ओर से महोली की तरफ जा रहे एक ट्रक ने उसे टक्कर मार दी, जिससे कान्हा की मौके पर ही मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ट्रक तेज रफ्तार में था घटना की सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंचे। रमखेड़ा गांव निवासी छोटकने, जो बच्चे के नाना हैं, ने थाने में तहरीर दी। उन्होंने बताया कि कान्हा करीब 15 दिन पहले अपनी मां के साथ ननिहाल आया था और अक्सर घर के पास खेलता था परिजनों ने ट्रक चालक पर लापरवाही का आरोप लगाया है हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलने पर पिसावां थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। थाना प्रभारी वीरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि पुलिस ने मौके से ट्रक (नंबर यूपी 14 जीटी 6348) को बरामद कर लिया है। चालक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है मासूम के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का मुकदमा दर्ज कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है!!

बीएड टीईटी 2011 मामले में सुप्रीम कोर्ट के रुख से अभ्यर्थियों में जगी नई उम्मीद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। बीएड टीईटी 2011 से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट के सकारात्मक रुख के बाद लंबे समय से संघर्ष कर रहे अभ्यर्थियों में एक बार फिर उम्मीद की किरण जगी है। नियुक्ति की संभावना को लेकर बीएड टीईटी अभ्यर्थियों में सक्रियता बढ़ गई है। संगठन स्तर पर बैठकों का दौर शुरू हो गया है। इसी क्रम में कस्बे के निराला नगर में बुधवार को बीएड टीईटी संघर्ष मोर्चा की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मोर्चा के नेता मान बहादुर सिंह ने की। बैठक में सुप्रीम कोर्ट में चल रहे मामले की ताजा स्थिति पर विस्तार से चर्चा की गई। मान बहादुर सिंह ने कहा कि उनका संगठन वर्ष 2011 से लगातार नियुक्ति की मांग को लेकर संघर्ष कर रहा है। उन्होंने बताया कि वर्षो बाद सुप्रीम कोर्ट ने बीएड टीईटी से जुड़े विभिन्न संगठनों की याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई की है, जो अभ्यर्थियों के लिए राहत भरी खबर है। कोर्ट द्वारा सरकार से इस मामले में पक्ष मांगे जाने को उन्होंने सकारात्मक संकेत बताया। उन्होंने कहा कि यदि सरकार का पक्ष अभ्यर्थियों के हित में आता है तो नियुक्ति का रास्ता साफ हो सकता है।

यही कारण है कि याचिकाकर्ता बने अभ्यर्थी अब अपने अपने संगठनों और ग्रुप के नेताओं से लगातार संपर्क कर रहे हैं। अभ्यर्थी आगे की रणनीति पर चर्चा कर रहे हैं। बैठक में अभ्यर्थियों ने एकजुट रहकर कानूनी लड़ाई को मजबूती से लड़ने का संकल्प लिया। साथ ही निर्णय लिया गया कि सुप्रीम कोर्ट की अगली सुनवाई तक संगठन पूरी तरह सक्रिय रहेगा। बैठक में रोहित सिंह, संजय कुमार, संजीव, अखिलेश सिंह, आशीष, बसंत तिवारी पवन द्विवेदी सहित कई अभ्यर्थी मौजूद रहे।

भदोही में गांजा बरामद, एक तस्कर गिरफ्तार

भदोही जिले के गोपीगंज थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग पर पुलिस ने मंगलवार शाम एक ट्रक से तीन क्विंटल 78 किलोग्राम अवैध गाजा बरामद कर एक तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। एक पुलिस अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि बरामद गांजा की कीमत 80 लाख रुपये से अधिक आंकी गई है। अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) शुभम अग्रवाल ने बताया कि शाम को यहां राष्ट्रीय राजमार्ग -19 पर गोपीगंज थाना क्षेत्र में एक ढाबा के निकट वाहन जांच के दौरान ट्रक कंटेनर को रोक कर जांच की गई, जिस पर कई बोरों में भरा कुल तीन क्विंटल 78 किलोग्राम अवैध गांजा मिला। बरामद गांजा की कीमत कुल 81 लाख है। उन्होंने बताया कि कंटेनर के चालक सोन पाल समेत कुल पांच के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। अग्रवाल ने बताया की पकडे गए सोन पाल ने शुरुआती पूछताछ में बताया कि एटा जिले के रहने सलीम और चमन खान गांजा ओडिशा से तस्करी कर लाए हैं।

दो बाइक सवार भाइयों को तेज़ रफ़्तार अनियंत्रित ट्रक ने मारी टक्कर एक की मौके पर मौत दूसरा घायल

महराजगंज/रायबरेली। हरदोई जा रहे दो बाइक सवार भाइयों को आगरा एक्सप्रेस वे पर तेज़ रफ़्तार अनियंत्रित ट्रक ने मारी टक्कर एक की मौके पर मौत दूसरा घायल। मौत की सूचना पर परिजनों में कोहराम व क्षेत्र में शोक की लहर। मंगलवार शाम को पूरे चोप सिंह मजरे सिकंदरपुर गांव निवासी रंजीत सिंह अपने छोटे भाई प्रदीप सिंह के साथ बाइक से किसी कार्य वश हरदोई जिला जा रहे थे 7 शाम लगभग पांच बजे उन्नाव जिले के बेहटा के पास आगरा एक्स्प्रेस वे पर तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी बाइक में पीछे से टक्कर मार दी 7 टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि रंजीत सिंह की मौके पर ही मौत हो गई वहीं दूसरा बाइक सवार प्रदीप सिंह घायल हो गया। इस दर्दनाक हादसे की सूचना मिलते ही परिजन देर रात उन्नाव जिला मुख्यालय स्थित मर्चरी पहुंचे। इस हादसे की जानकारी होते ही मृतक के परिजनों सहित समूचा क्षेत्र सदमे में हैं। हादसे के बाद पुलिस ने ट्रक सहित चालक को हिरासत में ले लिया है। ग्राम प्रधान डब्बू सिंह ने बताया कि शव का अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव में ही किया जाएगा।

शिक्षणेत्तर कर्मचारी 16 जनवरी को विधान भवन करेंगे घेराव, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय शिविर कार्यालय पर दिया धरना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर संघ ने संयुक्त रूप से बुधवार को माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के शिविर कार्यालय पर धरना दिया। संघ ने चेतावनी दी कि यदि लंबित समस्याओं का शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो 16 जनवरी को विधानसभा घेराव और जेल भरो आंदोलन किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक हरिश्चंद्र दीक्षित ने कहा कि कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर कई बार ज्ञापन दिया जा चुका है, लेकिन अब तक ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। संघ का मांग पत्र शिक्षा निदेशक के प्रतिनिधि के रूप में अपर शिक्षा निदेशक मनोज कुमार द्विवेदी ने लिया। उन्होंने वार्ता के दौरान प्रदेश महामंत्री शिव बहादुर यादव के अवरुद्ध वेतन के मामले को गंभीरता से लिया।

जिला विद्यालय निरीक्षक, कानपुर नगर से फोन कर वेतन प्रकरण का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। संघ पदाधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यदि तय समय सीमा में समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन किया जाएगा। वहीं, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षणेत्तर संघ के प्रदेश अध्यक्ष नीरज पंवार ने प्रमुख मांगें रखते हुए कहा कि योग्यताधारी शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को एलटी ग्रेड में शिक्षक पदों पर पदोन्नति दी जाए और सेवानिवृत्त कर्मचारियों के अर्जित अवकाश का नकदीकरण किया जाए।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रबंध समिति की बैठक संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। आज दिनांक 17.12.2025 को पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय रायबरेली में बहुप्रतिक्षित, विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक जिलाधिकारी महोदया की अध्यक्षता में संपन्न हुई समिति के सदस्यों में अपर जिलाधिकारी न्यायिक, उप जिलाधिकारी महराजगंज, प्रतिनिधि मुख्य चिकित्साधिकारी रायबरेली, अधिषासी अभियंता (विद्युत वितरण खण्ड-2) रायबरेली, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक षिक्षाधिकारी प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय, प्राचार्या एस0जे0एस पब्लिक स्कूल महराजगंज, प्राचार्य डॉ एस0 पी0 त्रिपाठी सदस्य सचिव, उप-प्राचार्य डॉ यज्ञनाथ मिश्रा, जी0 पी0 मिश्रा, बिनीत कु0 पाठक,श्रीमती शफक शमसी, वरिष्ठ, सुनील कुमार सिंह, कार्या0 अधी0, अभिभावक राजू मिश्रा, विनीता सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ, दीप प्रज्जवलन एवं स्वागत गीत से हुआ।

बैठक में प्रबंध समिति की जिलाधिकारी महोदया की अध्यक्षता में विभिन्न बिन्दुओं पर प्राचार्य महोदय ने चर्चा की। जैसे विद्यालय में टूटी हुई सड़कों के निर्माण के संबंध में, ओवर हेड के विषय में, नव निर्मित छात्रावास की चहारदीवारी, बिजली के तारों के नवीनीकरण, छात्रावास में आरो मेगा प्लान्ट, 65 केवीए जेनसेट उपलब्ध कराने के बारे में चर्चा हुई साथ ही विद्यालय के निकट बनी देषी शराब की दुकान हटाने के संबंध में तथा विद्यालय परिसर से बाहर की विद्यालय के जमीन पर अतिक्रमण को हटाने, विद्यालय परिसर में बने क्षतिग्रस्त स्टेडियम को बनवाने का आष्वासन दिया। जिलाधिकारी महोदया प्रषासन को उचित कार्रवाही करने के लिए संबंधित अधिकारियों को तुरंत निर्देषित किया।छात्रों द्वारा विज्ञान प्रदर्षनी का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। छात्रों द्वारा ताइक्वाडों की प्रस्तुतीकरण की गयी एवं छात्रों ने अपने द्वारा बनायी गई पेंटिग को जिलाधिकारी महोदया को प्रदान किया। छात्रों द्वारा प्रस्तुत सभी कार्यक्रमों को जिलाधिकारी महोदया एवं सम्मिलित सभी अधिकारियों ने सराहना की। अंत में विद्यालय के प्राचार्य डॉ एस0पी0त्रिपाठी ने जिलाधिकारी महोदया तथा इस बैठक में सम्मिलित सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

लैब टेक्नीशियन की मौत पिता बोले- बेटे की हत्या हुई, एपीटीसी में वेतन विवाद पर धक्का देने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर में मंगलवार को कोतवाली नगर इलाके में स्थित एपीटीसी परिसर में निर्माणाधीन बिल्डिंग से गिरकर लैब टेक्नीशियन मनीष साहू की मौत का मामला गरमा गया है बुधवार को मृतक के परिजन पुलिस अधीक्षक से मिले और पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच कराकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

परिजनों ने इसे हादसा नहीं बल्कि हत्या बताते हुए न्याय की गुहार लगाई है। परिजनों का आरोप है कि मनीष साहू अवंतिका कांट्रेक्टर कंपनी में लैब टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत थे। निर्माणाधीन भवन में कार्य के दौरान उन्हें तीसरी मंजिल पर ले जाया गया, जहां से कथित तौर पर धक्का देकर नीचे गिरा दिया गया इस घटना में मनीष गंभीर रूप से घायल हो गए थे, जिन्हें जिला अस्पताल लाया गया, लेकिन इलाज से पहले ही उनकी मौत हो गई। मृतक के पिता सुरेश साहू, जो जनपद ललितपुर के निवासी हैं, ने कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर एम.एस. रेड्डी और मैनेजर रमन्ना पर गंभीर आरोप लगाए हैं उन्होंने बताया कि उनके बेटे को लगातार मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था और बीते चार महीनों से वेतन नहीं दिया गया था जिसे लेकर आए दिन विवाद होता रहता था पिता के अनुसार, घटना वाले दिन भी वेतन को लेकर बहस हुई थी, जिसके बाद दोनों आरोपितों ने मनीष को ऊंचाई पर ले जाकर धक्का दे दिया। परिजनों ने यह भी आरोप लगाया कि एपीटीसी परिसर में बन रही ऊंची इमारतें बिना किसी सुरक्षा मानकों के बनाई जा रही हैं।

निर्माण स्थल पर न तो सेफ्टी गार्ड, हेलमेट और अन्य जरूरी उपकरण उपलब्ध थे और न ही श्रमिकों की सुरक्षा को लेकर कोई ठोस इंतजाम किए गए थे इसी लापरवाही के चलते पहले भी कई बार हादसों की आशंका जताई गई थी। परिजनों ने पुलिस अधीक्षक से मांग की है कि पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए, आरोपित अधिकारियों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया जाए और पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए वहीं, पुलिस अधिकारियों ने परिजनों को निष्पक्ष जांच का आश्वासन दिया है पुलिस का कहना है कि सभी आरोपों की जांच की जा रही है!!

नई दुल्हन घर आने पर सुअर की दी बलि केस दर्ज, वीडियो पर बदायूं के पशु प्रेमी ने की शिकायत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर 26 नवंबर वर्ष 2023 में चूहे का पोस्टमॉर्टम कराकर सुर्खियों में आए बदायूं के पशु प्रेमी और पेटा इंडिया के सदस्य विकेंद्र कुमार ने सीतापुर की नगर कोतवाली में पशु बलि देने की एफआईआर दर्ज कराकर एक बार सुखियों में आ गए है। मामला कोतवाली नगर इलाके का है। कोतवाली नगर में दर्ज एफआईआर में पशु प्रेमी विकेंद्र ने आरोप लगाया है कि बीती 23 नवंबर 2025 को दोपहर करीब 1 बजे मोहल्ला गोदियाना मन्नी चौराहा में अज्ञात व्यक्ति के घर नई नवेली दुल्हन के आने पर सुअर की बच्चे बलि दी जाने की प्रथा को अंजाम दिया गया शिकायतकर्ता ने तहरीर के साथ एक वीडियो भी पुलिस को दिया है, जिसमें दो युवक सुअर के बच्चे को पटक पटक कर मारने के बाद उसे घर के अंदर ही जिंदा दफना देते है।

एसपी ने पशु प्रेमी की शिकायत पर मामले का संज्ञान लेते हुए मामले में कोतवाली नगर इलाके में मंगलवार देर रात मुकदमा दर्ज कराया है। शिकायतकर्ता विकेंद्र कुमार का आरोप है कि पुलिस को घटना के दिन ही मामले की जानकारी दी गई थी लेकिन अगर पुलिस ने उसी दिन तत्परता दिखाई होता तो शायद एक बेजुबान की जान बच जाती हालांकि वायरल वीडियो और पशु की जान लेने वालो को पकड़ना और उसकी पहचान करना बड़ी चुनौती है पशु प्रेमियों की लगातार शिकायतों के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू करदी है!!

माघ मेले में किसकी लगेगी ड्यूटी? अभी से हो गया तय, पुलिसकर्मियों की लिस्ट होने लगी तैयार

लखनऊ। प्रयागराज में अगले वर्ष तीन जनवरी से शुरू होने वाले माघ मेले में नशा न करने वाले पुलिस कर्मियों की तैनाती की जाएगी। इस संदर्भ में पुलिस मुख्यालय ने पीएसी के सभी सेनानायकों और जिला पुलिस से उन पुलिसकर्मियों की सूची मांगी है जो पूरी तरीके से फिट हैं और नशा नहीं करते हैं। जिन पुलिस कर्मियों के घरों में शादी जैसा कोई बड़ा समारोह है उन्हें ड्यूटी से दूर रखा जा सकता है। मेले में 50 वर्ष से अधिक उम्र वाले पुलिसकर्मियों की भी तैनाती नहीं की जाएगी, क्योंकि ड्यूटी के दौरान प्रत्येक पुलिस, पीएसी व अन्य सुरक्षा बल के जवानों को मेडिकल किट के अलावा शस्त्रों से लैस रहना होगा। वहीं पुलिस के वाहन चालकों का मेडिकल कराने के निर्देश भी दिए गए हैं। जो वाहन चालक नशा करते होंगे उन्हें भी ड्यूटी पर तैनात नहीं किया जाएगा। मेला स्थल पर दंगा निरोधक दस्ते को भी तैनात किया जाएगा।

AHTU टीम ने प्राथमिक विद्यालय में चलाया जागरूकता अभियान

● मिशन शक्ति, बाल श्रम उन्मूलन व 'बचपन बचाओ' पर बच्चों व अभिभावकों को दी जानकारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। जनपद में महिलाओं, बच्चों एवं कमजोर वर्गों की सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे अभियानों के तहत थाना AHTU बलरामपुर द्वारा गुरुवार को थाना कोतवाली गैसड़ी क्षेत्र में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम मिशन शक्ति अभियान, बाल श्रम/भिक्षावृत्ति उन्मूलन अभियान तथा 'बचपन बचाओ' आंदोलन के अंतर्गत संपन्न हुआ।

पुलिस अधीक्षक बलरामपुर विकास कुमार के निर्देशन में तथा अपर पुलिस अधीक्षक श्री विशाल पाण्डेय एवं क्षेत्राधिकारी नगर श्रीमती ज्योति श्री (नोडल अधिकारी–AHT) के पर्यवेक्षण में, थाना ॥ञ्ञ प्रभारी श्री सूरज कुमार के नेतृत्व में मिशन शक्ति 5.0 एवं बाल तस्करी से आज़ादी 3.0 अभियान के तहत यह जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

चौपाल लगाकर बच्चों से किया संवाद

आज दिनांक 17 दिसंबर 2025 को थाना कोतवाली गैसड़ी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय रजडेरवा थारू में चौपाल लगाकर छात्र-छात्राओं एवं उपस्थित ग्रामीणों से सीधा संवाद किया गया। इस दौरान मिशन शक्ति, बाल श्रम, भिक्षावृत्ति, बाल विवाह, बंधुआ मजदूरी एवं मानव तस्करी जैसे गंभीर विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई।

पुलिस टीम द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया कि बाल श्रम कराना कानूनन दंडनीय अपराध है और ऐसा पाए जाने पर संबंधित के विरुद्ध कठोर विधिक कार्रवाई की जाएगी। साथ ही बच्चों से शिक्षा को प्राथमिकता देने और किसी भी प्रकार के शोषण से दूर रहने का आह्वान किया गया।

बाल विवाह न करने की दिलाई शपथ

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को बाल विवाह न करने की शपथ दिलाई गई तथा किसी भी आपात स्थिति में सहायता हेतु विभिन्न टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबरों 1098, 112, 1930, 1090, 1076, 108 एवं 181 की जानकारी दी गई।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर प्रभारी थाना दुर्विजय, कांस्टेबल संजीत तिवारी, महिला कांस्टेबल ज्योति गुप्ता, आरक्षी चालक असलम सिद्दीकी सहित थाना कोतवाली गैसड़ी की पुलिस टीम मौजूद रही। पुलिस प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी लोग आगे आएं और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें।

प्रोजेक्ट संवर्धन के तहत वीएचएसएनडी सत्र का डीएम ने किया निरीक्षण

● 300 पंचायत भवनों में 300 अधिकारियों की निगरानी में चला विशेष सघन अभियान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। महिलाओं एवं बच्चों के पोषण स्तर में सुधार को लेकर जनपद में संचालित विशेष अंतर्विभागीय अभियान 'प्रोजेक्ट संवर्धन' के अंतर्गत जिलाधिकारी श्री विपिन कुमार जैन ने बुधवार को विकास खंड श्रीदत्तगंज के ग्राम पंचायत ढोवाडाबर स्थित पंचायत भवन में आयोजित वीएचएसएनडी (Village Health, Sanitation and Nutrition Day) सत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने गर्भवती महिलाओं एवं 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को दी जा रही स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाओं का गहन जायजा लिया। उन्होंने टीकाकरण, वजन एवं लंबाई मापन, पोषण परामर्श तथा स्वास्थ्य जांच की व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए उपस्थित महिलाओं से संवाद किया और योजनाओं के लाभ के बारे में जानकारी प्राप्त की।

डीएम ने सत्र स्थल पर उपलब्ध दवाइयों, टीकाकरण सामग्री, वजन मशीन, इन्फेंटोमीटर सहित अन्य आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता की जांच की। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए सभी पात्र लाभार्थियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं।

जिलाधिकारी ने कहा कि सत्रों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं एवं छोटे बच्चों का नियमित टीकाकरण, वजन-लंबाई जांच के साथ सैम एवं मैम बच्चों का चिन्हांकन कर उनका समय से उपचार एवं पोषण प्रबंधन सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कुपोषण की रोकथाम और मातृ-शिशु स्वास्थ्य सुधार को शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में बताया।

डीएम ने आशा, आंगनबाड़ी एवं स्वास्थ्य कर्मियों से अपेक्षा की कि वे ग्राम स्तर पर सक्रिय सहभागिता निभाते हुए हर गर्भवती महिला और बच्चे तक योजनाओं का लाभ पहुंचाएं तथा कुपोषित बच्चों की पहचान कर उन्हें आवश्यक उपचार दिलाएं।

उल्लेखनीय है कि प्रोजेक्ट संवर्धन अभियान के तहत जनपद के 300 पंचायत भवनों में विशेष वीएचएसएनडी सत्रों का आयोजन किया गया है, जिनका 300 अधिकारियों द्वारा प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण किया जा रहा है। इन सत्रों में स्वास्थ्य विभाग एवं आईसीडीएस विभाग के समन्वय से सभी आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। 'हर बच्चा स्वस्थ, हर माँ सुरक्षित' के लक्ष्य के साथ यह अभियान जनपद में पोषण सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।.

सफलता का अँधेरा: जब सब कुछ है, पर कुछ भी नहीं

[सफलता की असली परीक्षा: अकेलापन और रिश्ते]

[सच्ची सफलता: केवल ऊँचाई नहीं, साथ देने वाले हाथ]

सफलता, एक ऐसा शब्द जो सुनते ही आँखों में चमक भर देता है। मंच पर रोशनी, तालियों की गूँज, महँगी गाड़ियाँ, आलीशान घर और हर तरफ़ तारीफों की बारिश। समाज इसे केवल मुकाम नहीं, बल्कि मुकुट समझता है। जिसे यह मिल जाए, वही पूर्ण माना जाता है। लोग सफलता को सबसे बड़ी दौलत मानते हैं, और इसके लिए इंसान अपनी ज़िंदगी की हर छोटी ख़ुशी को पीछे छोड़ देता है। लेकिन इस चमकदार तस्वीर के पीछे एक अनकहा साया भी चलता है, जिसे बहुत कम लोग देखना चाहते हैं। सफलता की ऊँचाई पर पहुँचते ही इंसान एक अजीब खामोशी में खो जाता है। आवाज़ें दूर चली जाती हैं, हँसी फीकी पड़ जाती है, और भीतर एक ठंडी, सुनसान रात उतर आती है। यही वह क्षण है जब चमक के बीच अकेलेपन का अँधेरा धीरे-धीरे फैलने लगता है, और इंसान अपने भीतर की खोई हुई दुनिया से रूबरू होता है।

सोचिए उस व्यक्ति की कहानी जिसने अपने सपनों को सच करने के लिए खुद को भुला दिया। दिन काम में डूबे रहे, रातें बेचैन रहीं, रिश्ते 'कल' पर टलते गए। परिवार पास था, पर दूरी महसूस होती रही; दोस्त साथ थे, पर उनकी बातें सुनी नहीं गईं। हर पल काम और लक्ष्य के लिए समर्पित रहा, और अपनी ज़रूरतों, अपनी भावनाओं, अपनी खुशियों को पीछे छोड़ दिया। आज वही व्यक्ति सफलता की ऊँचाई पर है—नाम, दाम और पहचान सब उसके पास हैं। लेकिन जब दिन की रोशनी बुझती है, तो वह अपने ही घर में अजनबी बन जाता है। फोन में अनगिनत नंबर हैं, लेकिन कोई नहीं जो दिल की हालत पूछे। सफलता ने उसे बहुत कुछ दिया, लेकिन बदले में उससे वह सब छीन लिया जो उसे इंसान बनाता था—वो अपनापन, वो सहजता, वो बिना शर्त की हँसी और रिश्तों की गर्माहट।

यह अकेलापन किसी विशेष पेशे या वर्ग तक सीमित नहीं है। पर्दे पर चमकते सितारे, मैदान में जीतते खिलाड़ी, किताबों में अमर लेखक, या प्रयोगशालाओं में इतिहास रचते वैज्ञानिक- सभी इस सन्नाटे का सामना करते हैं। जब तालियाँ थम जाती हैं, कैमरे हट जाते हैं, तब बचता है सिर्फ़ एक इंसान और उसकी खामोशी। रिश्ते अब भावनाओं से नहीं, उपलब्धियों से जुड़े होते हैं। लोग साथ चलते हैं, लेकिन कदम सफलता के साथ मिलाते हैं, इंसान के साथ नहीं। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती है, साथ चलने वाले कम होते जाते हैं। इस अकेलेपन में सबसे दर्दनाक बात यह है कि यह दिखाई नहीं देता। बाहर मुस्कान होती है, भीतर टूटन। व्यक्ति खुद को मजबूत दिखाने के लिए दर्द छिपाता है, और यही छिपा दर्द धीरे-धीरे उसे खोखला कर देता है। यादें बार-बार लौटती हैं—माँ की आवाज़, दोस्तों की हँसी, बिना मतलब की बातें। सब कुछ है, लेकिन वह अपनापन नहीं जो कभी बिना माँगे मिल जाता था। सफलता ने जीवन बड़ा कर दिया, लेकिन दिल को छोटा और सूना छोड़ दिया।

समाज इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करता। हम मान लेते हैं कि जो सफल है, वह खुश होगा। उसकी थकान नहीं देखते, उसकी चुप्पी नहीं सुनते। पैसा सुविधा दे सकता है, सम्मान दिला सकता है, लेकिन किसी का इंतज़ार नहीं कर सकता, किसी के कंधे पर सिर रखकर रो नहीं सकता। जब इंसान जीवन के अंतिम मोड़ पर पीछे मुड़कर देखता है, तो उसे उपलब्धियों से ज़्यादा रिश्तों की कमी खलती है। तब एहसास होता है कि जीत सब कुछ नहीं होती; कुछ हारें ऐसी होती हैं जो जीवन भर चुभती रहती हैं। यही वह सच है जो समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। जीत को देखकर हम केवल चमक देखते हैं, पर उसकी असली कीमत और कीमत चुकाने वाला अकेलापन नहीं।

कल्पना कीजिए, अगर कल सुबह आपकी सारी सफलता गायब हो जाए, तो क्या कोई ऐसा होगा जो फिर भी आपके पास बैठना चाहेगा? अगर उत्तर 'हाँ' है, तो आप सच में सफल हैं। और अगर 'न' है, तो समझ लीजिए कि आपने मंज़िल तो पा ली, लेकिन रास्ते में खुद को खो दिया। सफलता के पीछे नहीं, बल्कि सफलता के साथ चलना ज़रूरी है- रिश्तों को थामे हुए, अपनापन बनाए रखते हुए। जीवन की असली पहचान ऊँचाई नहीं, बल्कि वे हाथ हैं जो अँधेरे में भी आपका साथ नहीं छोड़ते। यही वह सफलता है जो दिल को भर देती है, और जीवन को वास्तविक अर्थ देती है। सफलता की चमक और अकेलेपन की खामोशी— ये दोनों जीवन के अनिवार्य हिस्से हैं। इसे समझना ही असली परिपक्वता है। जो व्यक्ति केवल मुकाम की ओर भागता है, वह कभी पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता। वही वास्तव में अमर बनता है, जो रिश्तों और अपनापन को साथ लेकर चलता है। सफलता केवल बाहरी दुनिया की मान्यता नहीं है; यह भीतर की संतुष्टि, आत्मीयता और उन रिश्तों में है, जो अँधेरे में भी आपका हाथ थामते हैं और आपका साथ नहीं छोड़ते। यही वह अनमोल सीख है, जिसे हर सच्चा सफल व्यक्ति अपने जीवन भर अपने साथ रखता है।

और सबसे अहम बात—सफलता की असली कसौटी यह नहीं कि आप कितनी ऊँचाई पर पहुँच गए, बल्कि यह कि मुश्किल समय में आपके साथ कौन खड़ा है। यही वह सच्चाई है, जिसे समझकर जीवन में स्थायित्व और सच्चा संतोष मिलता है। पैसा, शोहरत, नाम और सम्मान मायने रखते हैं, लेकिन वे अकेलेपन और दिल की खालीपन को नहीं भर सकते। इसलिए सफलता के साथ हमेशा उन लोगों को थामे रखें, जिन्होंने आपकी शुरुआत से ही आपका साथ दिया। यही वह अद्वितीय सफलता है, जो केवल आपकी चमक ही नहीं, बल्कि आपके दिल को भी रोशन करती है।

प्रो. आरके जैन

घुंघट हो या हिजाब गरिमा का सार्वजनिक उल्लंघन

भारतीय समाज में सदियों से महिलाएँ अपने अस्तित्व और सम्मान के लिए संघर्ष करती रही हैं। पितृसत्तात्मक समाज में उम्मीद थी कि अब महिलाओं को सम्मान मिलेगा, लेकिन हाल की घटना ने एक साथ कई प्रतिष्ठित पुरुषवादी चेहरों का सच उजागर कर दिया। हाल ही में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। पटना में आयुष डॉक्टरों को नियुक्ति पत्र वितरण के एक सरकारी कार्यक्रम में, जब नवनियुक्त महिला डॉक्टर मंच पर अपना पत्र लेने आई, तो नीतीश कुमार ने उनके चेहरे से हिजाब (या निकाब) खींचकर नीचे कर दिया। वीडियो में साफ दिखता है कि मंच पर मौजूद अन्य लोग, जिन्हें सभ्य कहा जाता है, हँसने लगते हैं। कुछ लोग इसे सुरक्षा कारणों से जोड़कर बचाव कर रहे हैं और कहते हैं कि मुख्यमंत्री शायद पहचान सत्यापित करना चाहते थे। लेकिन सवाल यह है कि क्या इसके लिए किसी महिला की व्यक्तिगत पसंद और गरिमा का सार्वजनिक उल्लंघन जायज है?

कल्पना कीजिए, अगर उस महिला डॉक्टर की जगह मंच पर हँसने वाले पुरुषों की बेटी, बहू या पत्नी होती, तो क्या उन्हें हँसी आती? शायद नहीं, क्योंकि वे अपनी महिलाओं की गरिमा समझते हैं। दूसरी कल्पना कीजिए: अगर महिलाओं से भरे मंच पर कोई महिला नेता पुरुष को सम्मान दे रही होती और इसी तरह का व्यवहार करती, तो क्या प्रतिक्रिया होती?

सबसे पहले, यह कार्यक्रम मुख्यमंत्री सचिवालय में था, जहाँ सुरक्षा की सख्त व्यवस्था होती है। नियुक्ति पत्र लेने वाले हर व्यक्ति की आईडी, नाम और फोटो पहले से सत्यापित होते हैं। महिला सुरक्षाकर्मी कपड़ों की जाँच करती हैं। अगर कोई खतरा होता, तो महिला को मंच पर पहुँचने ही नहीं दिया जाता। पहचान पुष्टि के लिए हिजाब हटाने की जरूरत नहीं थी, उन्हें इशारे से या अलग से कहा जा सकता था। खुद हाथ बढ़ाकर खींचना बदतमीजी ही है।

दूसरे, यह महिला की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और धार्मिक अधिकार का मामला है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता देता है, अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार और अनुच्छेद 21 सम्मानजनक जीवन का अधिकार। घूँघट हो या हिजाब, महिला को छूना या खींचना अपराध है। सार्वजनिक मंच पर ऐसा व्यवहार निजता का हनन है।

तीसरे, सत्ता में बैठे व्यक्ति से अधिक संवेदनशीलता की उम्मीद होती है। नीतीश कुमार महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करते हैं। बिहार में लड़कियों की शिक्षा और साइकिल योजना उनके क्रेडिट पर हैं। लेकिन यह घटना उन दावों पर सवाल उठाती है। मंच पर हँसते लोग और मुख्यमंत्री का व्यवहार महिलाओं के प्रति पुरुषों की तुच्छ सोच दर्शाता है। और तो और, एनडीए के एक सहयोगी मंत्री ने इस घटना पर बचाव करते हुए बेहद घटिया बयान दिया - 'नकाब ही तो खींचा है, इतना हो गया... कहीं और छू देते तो क्या होता?' यह बयान हंसते हुए दिया गया, जो महिलाओं के प्रति घोर असंवेदनशीलता और पुरुषवादी मानसिकता को पूरी तरह उजागर करता है। ऐसे शब्द न केवल अपमानजनक हैं, बल्कि समाज में महिलाओं की गरिमा को और कमजोर करते हैं। यह न केवल एक महिला का अपमान है, बल्कि पूरे समाज को गलत संदेश देता है। समाज में महिलाओं की गरिमा और स्वतंत्रता का सम्मान हर हाल में जरूरी है। सत्ता का दुरुपयोग कभी स्वीकार्य नहीं हो सकता। केवल तभी हम सचमुच एक सशक्त और समावेशी समाज की ओर बढ़ सकेंगे।

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

सरकारी खजाने पर बोझ सांसद विधायकों के वेतन में भारी वृद्धि

एक समय था जब तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री अपनी पत्नी लालता शास्त्री से अपनी धोती को पुरानी हो जाने पर तुरपाई करवा कर पहन लेते थे लेकिन देश के नागरिकों के टैक्स से आए धन का एक पैसा भी अपने फिजूलखर्ची के लिए लेना पाप समझते थे। इतना ही नहीं वह अपने कपड़े धोने प्रेस करने जैसे घरेलू कार्य के लिए भी पत्नी की मदद लेते थे और सरकारी स्टाफ का निजी घरेलू काम काज मे इस्तेमाल नहीं करते थे लेकिन आज हालात बदल चुके हैं हमारे जन प्रतिनिधि अपना अधिकार और हक मान कर सरकारी धन को खसोटने में लगे हुए हैं अधिकाधिक वेतन वृद्धि यात्रा व दूसरे भत्ते और विदेश यात्रा पर फिजूलखर्ची कर कर्ज में डूबते देश को आर्थिक नुकसान पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं । पहले सेवा के लिए लोग राजनीति में आते थे लेकिन अब ऐसा नहीं है समय बीतने के साथ-साथ आज हमारे जनप्रतिनिधि कथित सेवा की पूरी कीमत वसूली करने की कोशिश कर रहे हैं, इसका सबसे ताजा उदाहरण ओडिशा विधानसभा द्वारा पारित विधेयक है।

ओडिशा विधानसभा ने मंगलवार को अपने सदस्यों का मासिक वेतन तीन गुना से अधिक बढ़ाकर 1.11 लाख रुपये से 3.45 लाख रुपये कर दिया है, जो देश में जनप्रतिनिधियों को मिलने वाले सबसे अधिक सैलरी स्ट्रक्चर में से एक होगा. संसदीय कार्य मंत्री मुकेश महालिंग ने बताया कि 17वीं विधानसभा के गठन (जून 2024) से यह संशोधित वेतन प्रभावी होगा. इन संशोधनों के लिए सदन ने सर्वसम्मति से चार विधेयक पारित किए।

मुख्यमंत्री, मंत्रियों, विधानसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष और पूर्व विधायकों की पेंशन में भी लगभग तीन गुना वृद्धि की गई है. विधेयकों में यह भी प्रावधान है कि किसी भी वर्तमान विधायक की मृत्यु पर उसके परिवार को 25 लाख रुपये की सहायता राशि दी जाएगी. साथ ही हर पांच वर्ष में वेतन, भत्ते और पेंशन में वृद्धि का प्रावधान भी शामिल है. एक विधेयक यह भी अनुमति देता है कि भविष्य में ऐसी बढ़ोतरी अध्यादेश के माध्यम से भी की जा सकेगी। इससे ओडिशा के विधायक देश में सबसे अधिक वेतन पाने वाले बन जाएंगे। उन्हें मिलने वाली रकम केरल, पंजाब, सिक्किम और गोवा के विधायकों के संयुक्त मासिक वेतन के बराबर और एक दर्जन राज्यों की प्रति व्यक्ति आय के दोगुना से अधिक हो जाएगी। उनका मूल मासिक वेतन 35,000 रुपये से बढ़कर लगभग 90,000 रुपये हो जाएगा। पूर्व विधायकों को पेंशन के रूप में 1.20 लाख रुपये मिलने वाले हैं। 10 दिसंबर को राज्य विधान सभा के शीतकालीन सत्र के अंतिम दिन यह विधेयक सर्वसम्मति से पारित हो गया। संसदीय कार्य मंत्री मुकेश महालिंग ने कहा कि आठ साल के अंतराल के बाद हुई वेतन वृद्धि में मुद्रास्फीति को ध्यान में रखा गया है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी को लिखे एक पत्र में विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने कहा कि वह अपने वेतन एवं भत्तों में हुई वृद्धि 'राज्य के गरीब लोगों के कल्याण के लिए' छोड़ देंगे। गौरतलब है कि असम, हिमाचल प्रदेश, गोवा, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान और दिल्ली सहित कई राज्यों ने या तो समितियों का गठन किया है या विधायकों के वेतन बढ़ाने के प्रस्ताव पेश किए हैं। गोवा जैसे कुछ राज्यों ने वेतन बढ़ाने से परहेज किया है मगर भत्तों में जरूर इजाफा किया है। विशेषज्ञों ने कहा कि ओडिशा का फैसला इन राज्यों के लिए भी विधायकों का वेतन बढ़ाने का रास्ता साफ कर सकता है।

अब आपको जानकारी देते हैं ओडिशा के बाद तेलंगाना (लगभग 2.7 लाख रुपये), महाराष्ट्र (2.6 लाख रुपये), मणिपुर (2.5 लाख रुपये) और उत्तर प्रदेश (2.4 लाख रुपये) इसमें आगे हैं। नौ राज्यों की विधान सभाओं में विधायक 2 लाख रुपये प्रति माह से अधिक वेतन लेते हैं जबकि 17 राज्यों में वेतन 1 से 2 लाख रुपये के बीच है। केरल के विधायकों का वेतन लगभग 70,000 रुपये प्रति माह है जो देश में सबसे कम है। इसके बाद पंजाब (84,000 रुपये) और सिक्किम, गोवा और दिल्ली आते हैं जहां वेतन 1 लाख रुपये से थोड़े कम हैं। प्रति व्यक्ति आय के लिहाज से वेतन में यह बढ़ोतरी मेल नहीं खाती है। मसलन ओडिशा की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1.6 लाख रुपये है जो राष्ट्रीय औसत से थोड़ा ऊपर है मगर राज्य रैंकिंग में निचले पायदान पर है। सिक्किम देश का सबसे अमीर राज्य है जहां प्रति व्यक्ति आय लगभग 5.8 लाख रुपये है। वहां विधायकों को लगभग 90,000 रुपये मासिक वेतन मिलता है। इस रैंकिंग में दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाले गोवा और दिल्ली भी विधायकों को अधिक वेतन देने वालों में शुमार नहीं हैं वहीं, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे गरीब राज्य विधायकों को अपेक्षाकृत अधिक वेतन देते हैं। मध्यप्रदेश में विधायकों और अन्य माननीय पदाधिकारियों की सैलरी बढ़ाने की तैयारी पूरी हो चुकी है. सरकार ने उनके वेतन और भत्तों में बदलाव करने का फैसला लिया है, जिससे राज्य के सभी चुने हुए प्रतिनिधियों की आय में बड़ा इजाफा होगामध्यप्रदेश के विधायकों के वेतन में अब 60 हजार रुपए की बढ़ोतरी की जा रही है. पहले उन्हें जो वेतन मिल रहा था, उसमें बढ़ोतरी के बाद उनकी नई सैलरी 1 लाख 70 हजार रुपए प्रति माह हो जाएगी. यह बढ़ोतरी विधायकों को मिलने वाले वेतन, भत्तों और सुविधाओं को ध्यान में रखकर की गई है।

सरकार ने न केवल विधायकों की सैलरी बढ़ाई है, बल्कि पूर्व विधायकों के पेंशन भत्ते में भी वृद्धि की गई है. पहले उन्हें जो राशि मिलती थी, अब उसे बढ़ाकर 58 हजार रुपए प्रति माह करने पर सहमति बन चुकी है।

गौरतलब है कि विधायक उन विधेयकों पर मतदान करते हैं जो उनके वेतन-भत्तों में इजाफा करते हैं। यह कवायद अमूमन एक समिति की सिफारिशों के बाद शुरू हो जाती है। मूल वेतन के अलावा उन्हें कार्यालय और निर्वाचन क्षेत्र के खर्चों के लिए भत्ते, निःशुल्क आवास सुविधा, यात्रा रियायतें और बैठकों में भाग लेने के लिए दैनिक भत्ते भी मिलते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर सांसदों के वेतन में मार्च में 24 प्रतिशत वृद्धि की गई जिससे 1 अप्रैल 2023 से उनका मासिक वेतन लगभग 1.24 लाख रुपये हो गया है। यह बढ़ोतरी वित्त अधिनियम, 2018 में पेश किए गए संशोधनों बाद हुआ जिनके तहत सांसदों के वेतन को लागत मुद्रास्फीति सूचकांक के माध्यम से मुद्रास्फीति से जोड़ा गया और प्रत्येक पांच वर्षों में इसमें संशोधन अनिवार्य किया गया। लोकसभा के पूर्व सचिव पी डी टी आचार्य अनुसार विधायकों के वेतन के लिए कोई एक समान या अनिवार्य मानदंड नहीं है। उन्होंने कहा कि संसद की तरह प्रत्येक विधान सभा के पास अपने सदस्यों के वेतन तय करने का अधिकार है। आम तौर पर थोड़ा बहुत विरोध होता है मगर ऐसे संशोधन सर्वसम्मति से पारित हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय आर्थिक स्थितियों और व्यापक वेतन संरचनाओं पर विचार किया जाना चाहिए। संसद हो या विधानसभाएं वहां मुद्दों को लेकर जब बहस या चर्चा शुरू होती है तो उस दौरान पक्ष और विपक्ष जिस तरह का व्यवहार करते हैं उसको देखकर कई बार तो जनसाधारण भी शर्मसार हो जाता है। लेकिन जब अपने वेतन और भत्ता को बढ़ाने का प्रस्ताव आये तो वह सर्वसम्मति से पारित होता है। यह बदलाव की बयार है जिसमें सेवा की कम और सुविधा व वेतन वसूली की भावना शीर्ष पर है अब देश के जनता से चुने नुमाइंदे घर फूंक तमाशा देखने का जोखिम नहीं उठाते बल्कि सरकारी सुविधाओं का भरपूर दोहन कर अधिकाधिक सुविधा व विलासिता पूर्ण जीवन जीने की अपेक्षा रखते हैं वही येन-केन प्रकरेण सात पीढ़ियों के लिए इंतजाम करने की जुगुप्सा में नैतिकता को तिलांजलि देने से भी नहीं चूक रहे हैं।

मनोज कुमार अग्रवाल

संपादकीय

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस- संवैधानिक सुरक्षा से सामाजिक सद्भाव तक

लोकतंत्र की सक्षमता और उसकी परिपक्वता का सबसे सटीक पैमाना यह होता है कि वह अपने अल्पसंख्यकों के साथ कैसा व्यवहार करता है। प्रतिवर्ष 18 दिसंबर को मनाया जाने वाला अल्पसंख्यक अधिकार दिवस केवल एक वार्षिक औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह उस संकल्प को दोहराने का अवसर है जो हमारे संविधान निर्माताओं ने आज़ादी की दहलीज पर लिया था। इसी दिन 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 'अल्पसंख्यकों के अधिकारों की घोषणा' को अंगीकार किया था, जिसने वैश्विक स्तर पर एक ऐसे मानक की आधारशिला रखी जहाँ बहुमत के शोर में अल्पसंख्यक समुदायों की पहचान, भाषा और संस्कृति कहीं गुम न हो जाए।

भारत जैसे एक विशाल, बहुलवादी और विविधतापूर्ण देश में इस दिवस की प्रासंगिकता और भी गहरी हो जाती है क्योंकि यहाँ का लोकतंत्र अपनी संस्थागत मजबूती के लिए नहीं, बल्कि अपनी समावेशी समावेशिता के लिए जाना जाता है। भारतीय संविधान के निर्माण के समय से ही अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा को एक वैकल्पिक उदारता नहीं, बल्कि एक अनिवार्य संवैधानिक दायित्व के रूप में देखा गया। डॉ. बी.आर. अंबेडकर और संविधान सभा के अन्य सदस्यों ने यह स्पष्ट समझा था कि एक वास्तविक लोकतंत्र केवल संख्याओं का खेल नहीं है, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपने सबसे छोटे समुदायों को कितना सुरक्षित महसूस कराता है। इसी विज़न का परिणाम है कि आज भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 अल्पसंख्यकों को अपनी विशिष्ट लिपि, संस्कृति और भाषा के संरक्षण के साथ-साथ अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने का अटूट अधिकार देते हैं।

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो भारत ने 1992 में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम पारित करके अपनी प्रतिबद्धता को कानूनी रूप दिया। 2004 में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय का अलग से गठन होना इस दिशा में एक और बड़ा कदम था, जिसने योजनाओं को कागजों से निकालकर धरातल पर लाने का प्रयास किया। मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी समुदायों की विशिष्ट पहचान को सुरक्षित रखते हुए उन्हें राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में जोड़ना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। आज जब हम इस दिवस को मनाते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि चुनौतियां केवल संवैधानिक ढांचों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं में भी समाया हुआ है। 2011 की जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि मुस्लिम समुदाय में साक्षरता दर 68.5 प्रतिशत के आसपास है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। इसी तरह आर्थिक भागीदारी के मोर्चे पर भी कई विसंगतियां नजर आती हैं। सच्चर समिति (2006) की रिपोर्ट ने अल्पसंख्यकों की, विशेषकर मुसलमानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का जो खाका खींचा था, वह आज भी नीति-निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु बना हुआ है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम और नई शिक्षा नीति के माध्यम से इन अंतरालों को पाटने की कोशिश की गई है, लेकिन अभी एक लंबा सफर तय करना बाकी है।

भारत के अल्पसंख्यक समुदायों ने देश के गौरव में जो योगदान दिया है, वह अतुलनीय है। चाहे वह पारसी समुदाय का औद्योगिक योगदान हो, सिख समुदाय का शौर्य और सेवा भाव हो, या फिर ईसाई मिशनरियों द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किया गया कार्य—इन सबके बिना आधुनिक भारत की कल्पना अधूरी है। लेकिन विकास के इस सफर में 'डिजिटल डिवाइड' और महामारी के बाद उत्पन्न हुई आर्थिक असमानता ने नई जटिलताएं पैदा कर दी हैं। कोविड-19 के दौर में जिस तरह से हाशिए पर खड़े समुदायों के रोजगार और शिक्षा प्रभावित हुए, उसने हमें याद दिलाया कि समावेशी विकास के लिए केवल नीतियां पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि उनके क्रियान्वयन में संवेदनशीलता और गति की भी आवश्यकता है। इसके साथ ही, हाल के वर्षों में बढ़ते धार्मिक ध्रुवीकरण और लिंचिंग जैसी घटनाओं ने एक असहज वातावरण सृजित किया है, जो देश के सांप्रदायिक सद्भाव के ताने-बाने के लिए चिंता का विषय है। अल्पसंख्यक अधिकार दिवस का वास्तविक महत्व तभी सार्थक होगा जब हम केवल प्रतीकात्मक सेमिनार और प्रकाशनों तक सीमित न रहकर, जमीनी स्तर पर एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण सुनिश्चित करें।

वैश्विक संदर्भ में देखें तो अल्पसंख्यक अधिकार अब केवल किसी एक देश का आंतरिक मामला नहीं रह गए हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी 10) का उद्देश्य भी असमानता को कम करना है। भारत ने हमेशा से 'वसुधैव कुटुंबकम' के विचार को प्राथमिकता दी है, लेकिन इस वैश्विक छवि को बनाए रखने के लिए घरेलू स्तर पर आंतरिक सुरक्षा और सामाजिक न्याय के पैमानों को और अधिक सख्त करना होगा। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को अधिक स्वायत्तता और संसाधन प्रदान करना समय की मांग है ताकि वह केवल एक सलाहकार संस्था बनकर न रह जाए। इसके अलावा, डेटा की कमी एक बड़ी बाधा है; बिना सटीक और अद्यतन अल्पसंख्यक-विशिष्ट जनगणना के, कल्याणकारी योजनाओं का सटीक लक्ष्यीकरण असंभव है। आज के डिजिटल युग में शिकायत निवारण प्रणालियों को अधिक सुलभ और पारदर्शी बनाना अनिवार्य है, ताकि सुदूर इलाकों में बैठा कोई भी अल्पसंख्यक नागरिक अपने अधिकारों के हनन पर तुरंत आवाज़ उठा सके।

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस वास्तव में बहुमत और अल्पमत के बीच एक स्वस्थ सेतु बनाने का दिन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि एक सुदृढ़ राष्ट्र वही होता है जहाँ धर्मनिरपेक्षता केवल एक राजनीतिक नारा न होकर एक सामाजिक संस्कार हो। 'सबका साथ, सबका विकास' और 'सबका विश्वास' के नारे को चरितार्थ करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उन समुदायों के भय को दूर करें जो स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं। कौशल विकास, छात्रवृत्ति योजनाओं का बेहतर विस्तार और अंतर-धार्मिक संवाद के माध्यम से ही हम उस बहुलवादी समाज को बचा सकते हैं जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया था।

अंततः, अल्पसंख्यक अधिकारों का संरक्षण कोई विशेष सुविधा नहीं है, बल्कि यह उस न्यायपूर्ण समाज की नींव है जहाँ पहचान को खतरा नहीं, बल्कि सम्मान का प्रतीक माना जाता है। भारत की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, और इस शक्ति को सुरक्षित रखना हम प्रत्येक नागरिक का साझा दायित्व है। समावेशी भारत की ओर बढ़ते कदम ही हमारे लोकतंत्र को दुनिया के सामने एक मिसाल के रूप में पेश करेंगे।

महेन्द्र तिवारी

टूटती उम्मीदों का समाज और आत्महत्या का बढ़ता संकट, सभ्य समाज के लिए करुणाजनक स्थिति

स्कूल के बच्चों से लेकर सुरक्षाबलों के जवानों तक आत्महत्या की घटनाएं आज भारतीय समाज की सबसे पीड़ादायक और चिंताजनक सच्चाइयों में शामिल हो चुकी हैं। यह केवल किसी एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती बल्कि पूरे परिवार के लिए ऐसा कुठाराघात बन जाती है, जिसकी भरपाई जीवन भर नहीं हो पाती। हाल के वर्षों में सामने आए आंकड़े बताते हैं कि यह समस्या अब किसी एक वर्ग या आयु समूह तक सीमित नहीं रही, बल्कि किशोरों, युवाओं, विवाहित महिलाओं, कर्मचारियों और देश की सुरक्षा में तैनात जवानों तक फैली हुई है।

गृह मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार बीते तीन वर्षों में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में 438 जवानों ने आत्महत्या की। हालांकि सरकार का कहना है कि आत्महत्या के मामलों में हाल के वर्षों में कमी आई है। 2023 में जहां 157 आत्महत्याएं दर्ज की गई थीं, वहीं 2025 में यह संख्या घटकर 133 रह गई। यह गिरावट राहत देने वाली लग सकती है, लेकिन समस्या की गंभीरता को कम नहीं करती। इसके साथ ही 2014 के बाद से अब तक 23,360 जवानों द्वारा इस्तीफा दिया जाना यह संकेत देता है कि सुरक्षाबलों के भीतर मानसिक दबाव, कार्यस्थल तनाव और पारिवारिक समस्याएं गहराई से मौजूद हैं।

इस्तीफों के आंकड़े भी चिंताजनक तस्वीर पेश करते हैं। सबसे अधिक इस्तीफे सीमा सुरक्षा बल और असम राइफल्स से जुड़े हैं। बीएसएफ में 7,493, सीआरपीएफ में 7,456 और सीआईएसएफ में 4,137 जवानों ने सेवा छोड़ी। केवल 2025 तक ही 3,077 इस्तीफे दर्ज किए गए जिनमें से 1,157 बीएसएफ से हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि अनुशासन, देशसेवा और सम्मान के बावजूद जवान भी इंसान हैं, जिनकी भावनाएं, पारिवारिक जिम्मेदारियां और मानसिक सीमाएं होती हैं। लगातार तनावपूर्ण ड्यूटी, लंबी तैनाती, परिवार से दूरी और पदोन्नति या छुट्टी से जुड़ी समस्याएं धीरे-धीरे उन्हें भीतर से तोड़ देती हैं।

आत्महत्या की समस्या केवल सुरक्षाबलों तक सीमित नहीं है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2023 में देशभर में 1,71,418 लोगों ने आत्महत्या की। यह संख्या हर दिन औसतन 470 से अधिक मौतों को दर्शाती है। इन आत्महत्याओं का एक बड़ा कारण शादी और वैवाहिक जीवन से जुड़ी परेशानियां बताई गई हैं। वैवाहिक कलह, दहेज उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, अवैध संबंधों का शक, तलाक की आशंका और सामाजिक दबाव कई लोगों को मानसिक रूप से इतना कमजोर बना देते हैं कि वे जीवन समाप्त करने जैसा कठोर कदम उठा लेते हैं।

महिलाओं के लिए यह दौर विशेष रूप से निराशाजनक बनता जा रहा है। पढ़ी-लिखी और आत्मनिर्भर होने के बावजूद सामाजिक अपेक्षाएं, पारिवारिक दबाव और रिश्तों में सम्मान की कमी उन्हें भीतर से तोड़ देती है। कई मामलों में महिलाएं लंबे समय तक मानसिक पीड़ा सहती रहती हैं, लेकिन समाज और परिवार उनकी वेदना को गंभीरता से नहीं लेता। जब कोई रास्ता नहीं दिखता, तब आत्महत्या उन्हें एकमात्र समाधान प्रतीत होने लगती है। इसे केवल व्यक्तिगत कमजोरी कहना नैतिक, कानूनी और संस्थागत विफलता को छिपाने जैसा है।

सबसे अधिक चिंता का विषय किशोरावस्था में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति है। स्कूल जाने वाले बच्चे और टीनेजर आज जिस मानसिक दबाव से गुजर रहे हैं, वह पहले कभी इतना गहरा नहीं था। पढ़ाई में प्रतिस्पर्धा, परीक्षा में अच्छे अंक लाने का दबाव, माता-पिता की अपेक्षाएं, सोशल मीडिया पर तुलना, साइबर बुलिंग और भावनात्मक अस्थिरता किशोरों को अंदर ही अंदर तोड़ रही है। इस उम्र में मस्तिष्क और भावनाएं दोनों विकास की अवस्था में होती हैं, इसलिए छोटी-छोटी असफलताएं भी उन्हें जीवन की सबसे बड़ी हार लगने लगती हैं।

कई किशोर अपने माता-पिता से खुलकर बात नहीं कर पाते। डर रहता है कि डांट पड़ेगी, तुलना होगी या उनकी बातों को हल्के में लिया जाएगा। स्कूलों में काउंसलिंग की व्यवस्था अब भी सीमित है और जहां है भी, वहां मानसिक स्वास्थ्य को लेकर झिझक बनी रहती है। परिणामस्वरूप बच्चे अपने दर्द को भीतर दबाते रहते हैं, जो किसी एक क्षण में विस्फोट बनकर आत्महत्या का कारण बन जाता है। आत्महत्या के कारणों पर गौर करें तो यह साफ दिखता है कि यह किसी एक वजह से नहीं होती। आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, कर्ज, पारिवारिक कलह, प्रेम संबंधों में असफलता, सामाजिक अपमान, अकेलापन, अवसाद और नशे की लत जैसे कई कारण मिलकर व्यक्ति को इस अंधेरे रास्ते की ओर धकेलते हैं। किशोरों के मामले में पहचान का संकट, अस्वीकृति का डर और भविष्य को लेकर अनिश्चितता प्रमुख कारण बनते हैं।

इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए केवल कानून बनाना या आंकड़े पेश करना पर्याप्त नहीं है। जरूरत है लोगों के मन की वेदना को समझने की। परिवार को पहला सहारा बनना होगा। माता-पिता को बच्चों की उपलब्धियों के साथ-साथ उनकी असफलताओं को भी स्वीकार करना सीखना होगा। तुलना की जगह संवाद को महत्व देना होगा। स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि बच्चे अपनी भावनाओं को पहचानना और व्यक्त करना सीख सकें।

सरकारी और निजी स्तर पर काउंसलिंग सेवाओं को सुलभ और सामान्य बनाना समय की मांग है। सुरक्षाबलों में नियमित मानसिक स्वास्थ्य जांच, तनाव प्रबंधन कार्यक्रम और परिवार से जुड़े मुद्दों पर संवेदनशील नीतियां अपनानी होंगी। जवानों को यह भरोसा दिया जाना चाहिए कि मानसिक परेशानी कमजोरी नहीं है, बल्कि एक मानवीय स्थिति है, जिसका समाधान संभव है।

महिलाओं के लिए मजबूत सामाजिक समर्थन तंत्र तैयार करना होगा। घरेलू हिंसा और वैवाहिक उत्पीड़न के मामलों में त्वरित न्याय और सुरक्षित वातावरण देना जरूरी है। समाज को यह समझना होगा कि आत्महत्या किसी एक व्यक्ति की समस्या नहीं बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है। आत्महत्या रोकथाम के उपाय तभी सफल हो सकते हैं जब हम संवेदनशीलता, संवाद और सहयोग को प्राथमिकता दें। जीवन की किसी भी कठिन घड़ी में यह संदेश हर व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए कि वह अकेला नहीं है और उसकी पीड़ा सुनी जाएगी। उम्मीद की एक किरण कई बार किसी की पूरी जिंदगी बचा सकती है। जब समाज यह जिम्मेदारी समझेगा, तभी टूटती उम्मीदों के इस दौर में जीवन को फिर से संबल मिल सकेगा।

कांतिलाल मांडोत

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

उरुवा थाना गेट पर बनाई गई रील वायरल, पुलिस की कार्रवाई के बाद चर्चा तेज

गोलाबाजार गोरखपुर। गोला तहसील क्षेत्र अंतर्गत उरुवा थाना गेट पर बनाई गई एक रील सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। इसी बीच हाल ही में सिकरीगंज थाना परिसर में रील बनाने वाले एक अन्य युवक पर पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई के बाद यह मामला और भी चर्चा में आ गया है। प्राप्त विवरण के अनुसार वायरल रील थाना गेट के सामने बनाई गई है, जिसे लेकर लोग सवाल उठा रहे हैं कि क्या थाना परिसर या उसके आसपास इस तरह की रील बनाना नियमों के दायरे में आता है। सिकरीगंज थाने में हुई कार्रवाई के बाद अब उरुवा थाना गेट पर बनी इस रील को भी उसी कड़ी में देखा जा रहा है। स्थानीय लोगों और सोशल मीडिया यूजर्स के बीच इस रील को लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। वहीं, पुलिस प्रशासन की ओर से अभी तक इस मामले में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है, लेकिन माना जा रहा है कि वायरल वीडियो की जांच की जा सकती है। गौरतलब है कि हाल के दिनों में थाना परिसर में रील बनाने के मामलों को लेकर पुलिस सख्त रुख अपना रही है, ताकि कानून-व्यवस्था और थाने की गरिमा बनी रहे।

प्रवासी भारतीय मतदाताओं के नाम जोड़ने की प्रक्रिया शुरू

देवरिया। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार अर्हता तिथि 1 जनवरी 2026 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण किया जा रहा है। इसके तहत 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके अथवा करने वाले प्रवासी भारतीय नागरिकों को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने का अवसर दिया जा रहा है। उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रवासी भारतीय नागरिक फार्म-6ए के माध्यम से ऑनलाइन या ऑफलाइन आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन voters.eci.gov.in वेबसाइट अथवा ECINET ऐप के जरिए किया जा सकता है, जो एंड्रॉयड व आईओएस दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। आवेदन संबंधित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को भेजा जाएगा।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के देवरिया आगमन को लेकर हुई बैठक

देवरिया। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व पूर्व मंत्री अजय राय के देवरिया आगमन को लेकर टाउन हॉल स्थित कांग्रेस पार्टी कार्यालय पर जिलाध्यक्ष विजय शेखर मल्ल 'रोशन' की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष अजय राय का आगमन सुबह 11:30 बजे होगा। कांग्रेसजन गौरी बाजार के खरोह चौराहे पर पूरे उत्साह के साथ उनका स्वागत करेंगे। बताया कि अजय राय लखनऊ से कार द्वारा देवरिया पहुंचकर जिला कारागार में निरुद्ध पूर्व आईपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर से मुलाकात करेंगे। जिलाध्यक्ष ने कहा कि खरोह चौराहे पर सुबह 11 बजे से स्वागत की सभी तैयारियां पूरी कर ली जाएंगी तथा जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे। बैठक में भरत मणि त्रिपाठी, जुलेखा खातून, संजीव कुमार मिश्रा, आलोक त्रिपाठी राजन, धर्मेंद्र कुमार पाण्डेय, विजय शंकर मिश्रा, नीलेश त्रिपाठी, राजेश प्रताप सिंह, अंशु मिश्रा, रीता देवी, पन्नालाल पाठक, रविन्द्र मल्ल, राजकुमार यादव, मनोज मणि, रामप्रवेश सिंह, शिव शंकर सिंह, चंद्रिका निषाद, निर्मला वर्मा सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रात दो बजे पूरे परिवार पर हमला, एफआईआर दर्ज

ललितपुर। तालबेहट के ग्राम खांदी अंतर्गत मजरा विन्द्रावन ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि 11 दिसम्बर की रात करीब 2 बजे वह अपने घर पर था। तभी बिना किसी कारण गांव के मनीराम रैकवार व देव सिंह रैकवार पुत्रगण स्व.बिटवा, राजकुमारी पत्नी मनीराम रैकवार, केशर पत्नी बिटवा एक राय होकर आये और उसकी मां को गालियां देने लगे। मना करने पर उक्त लोगों ने उसके साथ मारपीट कर दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गयी। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 115 (2), 352, 351 (3) व 333 के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

रंजिश में सगे भाइयों पर जानलेवा हमला, सिर फोड़ने वाले पांच आरोपी नामजद - सहजनवां में दहशत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवां गोरखपुर- सहजनवां थाना क्षेत्र में आपसी रंजिश का एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जहां मनबढ़ों ने सगे भाइयों पर हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घटना भरोहिया गांव की है, जहां मामूली बात को लेकर शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गया। हमले में दोनों भाइयों के सिर फट गए, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने पांच आरोपियों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार भरोहिया निवासी गोलू पुत्र रुदल प्रसाद मंगलवार की रात करीब 8 बजे गांव की दुकान पर जलजीरा लेने गया था। आरोप है कि दुकान पर पहले से मौजूद अनिल निषाद, सूरज निषाद, चंदन निषाद, रामकरन और अजय

कुमार ने गोलू को देखते ही गाली-गलौज शुरू कर दी। जब गोलू ने इसका विरोध किया तो सभी आरोपी एकजुट होकर उस पर टूट पड़े और लाठी-डंडों से मारपीट कर उसे घायल कर दिया।

शोर सुनकर गोलू का सगा भाई उसे बचाने मौके पर पहुंचा, लेकिन हमलावरों का गुस्सा और भड़क उठा। आरोप है कि आरोपियों ने भाई पर भी ताबड़तोड़ हमला कर दिया, जिससे उसका सिर फट गया और वह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। वारदात के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए। घटना के बाद गांव में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। परिजनों ने दोनों घायलों को तत्काल उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया, जहां उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। पीड़ित गोलू ने सहजनवां थाने में तहरीर देकर पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर नामजद आरोपियों के खिलाफ बलवा, मारपीट और जान से मारने की धमकी सहित संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। थानाध्यक्ष सहजनवां ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही है। जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, इस घटना के बाद ग्रामीणों में दहशत का माहौल है और लोग आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। पुलिस का कहना है कि कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

ख़जनी के रकौली गांव में मानवता और लोकतंत्र का संगम: भव्य कंबल वितरण के साथ एसआईआर जागरूकता अभियान, सैकड़ों जरूरतमंदों को मिली राहत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ख़जनी- गोरखपुर जनपद के खजनी क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सभा रकौली में बुधवार को मानवता, सामाजिक सरोकार और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी का अनूठा उदाहरण देखने को मिला। समाजवादी पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं रामपुरवा इंटर कॉलेज गोरखपुर के प्रबंधक प्रह्लाद यादव की माताजी की 40वीं पूर्णतिथि के अवसर पर आयोजित भव्य कंबल वितरण कार्यक्रम में सैकड़ों जरूरतमंदों को ठंड से राहत मिली। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी यह आयोजन बड़े पैमाने पर किया गया, जिसमें क्षेत्र के लोगों की भारी सहभागिता रही। कड़ाके की ठंड के बीच आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 300 महिला-पुरुषों को कंबल वितरित किए गए। वितरण के दौरान विशेष रूप से विधवा महिलाओं, बुजुर्गों और अत्यंत गरीब परिवारों को प्राथमिकता दी गई। आयोजन स्थल पर सुबह से ही

ग्रामीणों की भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी। जैसे-जैसे कंबल वितरण आगे बढ़ता गया, लोगों के चेहरों पर संतोष और राहत साफ झलकती रही। ग्रामीणों ने इसे गरीब और असहाय वर्ग के लिए 'संकट की घड़ी में संबल' बताया।

कंबल वितरण तक ही कार्यक्रम सीमित नहीं रहा, बल्कि इसे जनजागरूकता के सशक्त मंच के रूप में भी उपयोग किया गया। इस दौरान एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। रकौली गांव सहित आसपास की ग्राम सभाओं से आए लोगों को मतदाता सूची के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। वक्ताओं ने कहा कि मतदाता सूची में नाम दर्ज होना हर नागरिक का मौलिक अधिकार ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रीढ़ है। ग्रामीणों को फार्म-6 भरकर नए मतदाता के रूप में नाम दर्ज कराने तथा जिनका नाम किसी कारणवश सूची से कट गया है, उसे बीएलओ के माध्यम से पुनः जुड़वाने के लिए प्रेरित किया गया। वक्ताओं ने दो टूक कहा कि 'आज की लापरवाही, कल बड़े संकट का कारण बन सकती है,' इसलिए सभी लोग समय रहते अपने मताधिकार को सुरक्षित करें। कार्यक्रम के समापन पर ग्रामीणों ने आयोजन समिति का आभार जताया और कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज के कमजोर वर्गों के लिए आशा की किरण हैं। वहीं प्रबंधक प्रह्लाद यादव द्वारा उपस्थित मीडिया कर्मियों को सम्मानित भी किया गया। रकौली गांव में आयोजित यह कार्यक्रम सेवा, संवेदना और जागरूक लोकतंत्र का सशक्त संदेश देकर क्षेत्र में चर्चा का विषय बना रहा।

कंबल, अलाव व रैन बसेरों की व्यवस्था के लिए एडीएम ने दिए निर्देश

देवरिया। शीतलहर व बढ़ती ठंड को देखते हुए अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व रामशंकर ने सभी संबंधित विभागों को अलर्ट मोड में रहकर राहत कार्य करने के निर्देश दिए। कहा कि कोई भी निराश्रित अथवा असहाय व्यक्ति ठंड से प्रभावित न हो। बताया कि जनपद में कंबल वितरण, अलाव तथा रैन बसेरों की समुचित व्यवस्था की जा रही है। सभी रैन बसेरों को 24 घंटे संचालित कर गद्दा, कंबल, पेयजल, शौचालय व किचन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। रैन बसेरों की जियो टैगिंग, दैनिक विवरण संधारण व रात्रिकालीन निरीक्षण भी किए जाएंगे। कोहरे से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु मुख्य मार्गों पर रिफ्लेक्टर, संकेतक, रेडियम पट्टी लगाने तथा खराब स्ट्रीट लाइट तत्काल ठीक कराने के निर्देश दिए गए हैं। चिकित्सालयों में 24×7 एम्बुलेंस व उपचार व्यवस्था, अग्निशमन विभाग को सतर्कता तथा ठंड से बचाव के प्रति जनजागरूकता के निर्देश भी जारी किए गए। सभी विभागों को सात दिनों में अनुपालन आख्या आपदा कार्यालय को देने को कहा गया है।

एसबीटी में त्रिदिवसीय स्काउट-गाइड प्रशिक्षण शिविर का समापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देवरिया। जिले के ग्रामीण क्षेत्र स्थित एसबीटी पब्लिक स्कूल विशुनपुरा बखरा में भारत स्काउट गाइड के तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का बुधवार को समापन हुआ। शिविर का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया गया, जिसमें विद्यालय की कक्षा 6 से 8 तक के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस दौरान स्काउट व गाइड को प्रवेश, प्रथम सोपान एवं द्वितीय सोपान से संबंधित गतिविधियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिभागियों ने टेंट निर्माण, गांठ बांधने की विधि, बिना बर्तन के भोजन तैयार करना, प्राथमिक चिकित्सा, साहसिक गतिविधियां एवं आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी प्राप्त की। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में टीमवर्क, अनुशासन और आत्मनिर्भरता का विकास किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि आशुतोष शाह, जिला सचिव भारत स्काउट गाइड ने कहा कि स्काउटिंग-गाइडिंग बच्चों में देशभक्ति, सेवा भावना और नेतृत्व क्षमता का विकास करती है। वहीं विशिष्ट अतिथि विकास चंद तिवारी, मुख्यालय आयुक्त स्काउट गाइड देवरिया ने कहा कि स्काउट-गाइड गतिविधियां बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और अनुशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यालय के प्रधानाचार्य दिवाकर पाण्डेय ने अतिथियों का अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया और कहा कि ऐसे प्रशिक्षण शिविर बच्चों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। कार्यक्रम का संचालन शिविर संचालक डॉ. पी.एल. यादव ने किया। प्रशिक्षण कार्य में जिला प्रशिक्षक कौशल किशोर सिंह एवं मैनेजर चौरसिया का विशेष सहयोग रहा। समापन अवसर पर विद्यालय के मुख्य समन्वयक अंबरीश त्रिपाठी, प्रशासक अबू दानिश सहित शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे, जिन्होंने शिविर के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोहरतगढ़ में हुआ विशाल हिन्दू सम्मेलन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिले के शोहरतगढ़ कस्बे के भारत माता चौक पर हिन्दू सम्मेलन समिति की ओर से विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दौरान बतौर वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह विभाग प्रचारक अजीत जी ने जाति-पाति की करो विदाई हिन्दू-हिन्दू, भाई-भाई के स्लोगन के साथ हिन्दू एकता पर बल देते हुए कहा कि संघ यह प्रेरित करता हैं कि हिन्दू समाज को छोटे-बड़े का भेद-भाव मिटाकर सभी को साथ लेकर चलना चाहिए। जब हम सभी एकजुट होंगे, तो हम अपने समाज को आगे बढ़ा सकते हैं और देश की प्रगति में योगदान कर सकते हैं। हिन्दू धर्म की यह विशेषता है कि वह पूरी वसुधा को अपना परिवार मानता है, जो हमें एकता और प्रेम का संदेश देता है। हमारी सभी जातीय तभी सुरक्षित हैं जब हिन्दू

सुरक्षित हैं। यह एकता हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं को बचाने में मदद करेगी और हमें एक मजबूत समाज बनाने में सक्षम बनाएगी। आगे कहा कि सहभोज नहीं सहज़ भोज होना चाहिए, यह एकता और समरसता का संदेश देता है। हमें भारत माता का ही यशगान गाना चाहिए, क्योंकि इसी धरती माता ने हमको बड़ा किया है। यह एकता और प्रेम का संदेश देता है, जो हमें अपने देश और संस्कृति के प्रति गर्व महसूस कराता है। कार्यक्रम को वरिष्ठ राष्ट्रीय स्वयं सेवक राम मिलन त्रिपाठी, पंडित राजेंद्र पाण्डेय ने अपने विचार व्यक्त की। इस दौरान संघ के जिला प्रचारक विशाल , हिन्दू परिषद के प्रदेश महामंत्री एवं कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष अनिल सिंह, चेयरमैन उमा अग्रवाल के परिजन पुष्पा देवी, बबिता कसौधन (पूर्व चेयरमैन) बाबा राम उजागिर तिवारी, आनंद कसौधन, विक्रम दिवाकर सिंह, सुरेंद्र पाल, रिक्की अग्रहरी, दुर्गा प्रसाद तिवारी, रामकुमार तिवारी, धर्मेंद्र अग्रहरी, सौरभ गुप्ता, शिव प्रसाद वर्मा (पूर्व चेयरमैन) घनश्याम गुप्ता, बबलू गौड़, वीरेंद्र गौड़, श्यामू जी, पंकज श्रीवास्तव, सुजीत अग्रहरि, राजकुमार मोदनवाल, राजू बाबा, नन्दलाल वर्मा आदि मौजूद रहे।

निधन पर शोक जताया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। बुधवार को नेहरू नगर निवासी पत्रकार राकेश राजा व नरेन्द्र राजा के पूज्यनीय पिताजी शंकरसिंह (मोनावली वालों) का लंबी बीमारी के बाद आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की खबर सुनते ही लोगों में शोक लहर दौड़ गयी। सुबह करीब 11 बजे उनकी अंतिम यात्रा निकाली गयी, जो कि पोस्टमार्टम हाउस के पास स्थित मुक्तिधाम पर पहुंची, जहां दिवंगत शंकर सिंह के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया गया। पंचतत्व में विलीन हुये शंकर सिंह की आत्मा की शांति के लिए मौजूद लोगों ने दो मिनिट का मौन धारण कर शोक व्यक्त किया, वहीं शोक संतृत्व परिवार को इस भारी दुख को सहन करने की ईश्वर से शक्ति प्रदान करने की कामना की गयी।

गोरखपुर के खजनी क्षेत्र में शिक्षा का मंदिर बना विवाद का अखाड़ा, रसोइया-प्रधानाध्यापिका के बीच 'मल युद्ध' का वीडियो वायरल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोरखपुर- जनपद के खजनी क्षेत्र अंतर्गत उसवा बाबू स्थित एक उच्च माध्यमिक विद्यालय से जुड़ा मामला इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। शिक्षा का मंदिर कहे जाने वाले विद्यालय में रसोइया, प्रधानाध्यापिका और सहायिका के बीच हुआ विवाद अब खुलेआम 'अखाड़े' का रूप ले चुका है। विवाद का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद न सिर्फ विभागीय कार्यशैली पर सवाल उठ रहे हैं, बल्कि इसका सीधा असर विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं पर भी पड़ रहा है। जानकारी के अनुसार विद्यालय प्रधानाध्यापिका रीता आर्या और रसोइया में बच्चो के मध्यान भोजन में मंगलवार कीड़े निकलने से बच्चो ने भोजन नही लिया ,जिसके बाद हेड मास्टर रीता आर्या ने रसोइया से पूछा बच्चे भोजन क्यो नही किए उसी बात पर रसोइया ने कहा जो मिला वही बनाउंगी, कीड़े है तो वैसे ही बनाउंगी उसी को लेकर हेडमास्टर ने बीडीओ बनाना शुरू कर दी उसी पर दोनों में मल युद्ध हुआ और बच्चे तमासीन बने ।

वहीं हेड मास्टर रीता आर्या ने बताया मेरा चार्ज लेने के लिए खड़यँत्र किया जा रहा है , रसोइया गुंजा देवी खराब चावल

बना कर बच्चो में फुट डालती है , मना करने पर बिरोध करती है पुरा स्टॉप मेरे पर शाजिस कर रहा मुझे रसोइया जबरन ईसाई धर्म अपनाने पर जोर देती है , और बिना बताए ईसाई धर्म के प्रचार में निकल जाती है , मेरे जात खयन्त्र कर मल युद्ध कर वीडियो बनाया गया ,जिससे मुझे निकाल दिया जाय, ने बताया सहायक शिक्षिका श्रद्धा शुक्ला ने बताया भोजन में कीड़े रहने पर विवाद हुआ दोनों पटकी पटका कर ली, आए दिनों विवाद होता रहता, हर स्टॉप हेडमास्टर से तबाह हो गया है । प्रेयर के दौरान सभी बच्चों के उपस्थित होने के बाद करने को बोली तो बिगड़ गई, और कहा सुनी का बीडीओ बनाने लगी ।वहीं सूत्रों की माने तो जिम्मेदारियों को लेकर लंबे समय से तनातनी चल रही थी। मंगलवार को भोजन में कीड़े दिखना बच्चो का बिरोध पर हेडमास्टर का बिरोध मलयुद्ध का कारण बना । वहीं सहायक शिक्षिका श्रद्धा शुक्ला का आरोप है कि प्रधानाध्यापिका रीता आर्या मनबढ़ और तानाशाही रवैया अपनाती हैं तथा विद्यालय के स्टाफ को प्रताड़ित करती हैं। उनका कहना है कि बीते दिनों प्रधानाध्यापिका ने मारपीट की, जिसका वीडियो वायरल हुआ। दूसरी ओर प्रधानाध्यापिका रीता आर्या का आरोप है कि उन पर ईसाई धर्म अपनाने का दबाव बनाया जाता है। उनका कहना है कि रसोइया बिना कार्य किए विद्यालय छोड़ देती है और ईसाई धर्म का प्रचार करती है, जिसका उन्होंने विरोध किया, इसी कारण गोलबंद होकर उन पर हमला कर वीडियो बनाया गया। इस पूरे मामले में खंड शिक्षा अधिकारी सावन दुबे ने कहा कि घटना बेहद निंदनीय है। शिक्षा के मंदिर में इस तरह की घटनाएं शर्मनाक हैं। उन्होंने बताया कि रसोइया और प्रधानाध्यापिका दोनों के खिलाफ कार्रवाई के लिए रिपोर्ट भेजी जाएगी। कई बार समझाने के बावजूद संबंधित लोग नहीं मान रहे हैं, जिससे विद्यालय का माहौल लगातार खराब हो रहा है। अब बड़ा सवाल यह है कि क्या यह पूरा विवाद सुनियोजित तरीके से वीडियो वायरल कर दबाव बनाने का प्रयास था, या फिर विभागीय लापरवाही ने हालात को यहां तक पहुंचा दिया? फिलहाल छात्र-छात्राओं की पढ़ाई और विद्यालय का अनुशासन इस विवाद की भेंट चढ़ता नजर आ रहा है।

आईजीएल में ऑनसाइट फायर मॉक ड्रिल रिहर्सल का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवां- गीडा स्थित इंडिया ग्लाइकॉल्स लिमिटेड के बिजनेस हेड एस के शुक्ल के मार्गदर्शन औद्योगिक सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए आईजीएल परिसर में बुधवार को एक ऑनसाइट फायर मॉक ड्रिल रिहर्सल का आयोजन किया। इस का उद्देश्य कर्मचारियों को आपातकालीन स्थिति में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया देने के लिए प्रशिक्षित करना था। ड्रिल के दौरान फायर अलार्म 11.10 पर बजते ही सभी कर्मचारियों ने निर्धारित निकासी मार्गों का पालन करते हुए सुरक्षित स्थान पर पहुंचने की प्रक्रिया का अभ्यास किया। कंपनी की फायर सेफ्टी टीम ने आग बुझाने के उपकरणों के सही उपयोग का प्रदर्शन कर कर्मचारियों को अग्निशमन यंत्रों के संचालन की जानकारी दी। सुरक्षा अधिकारी रणधीर सिंह ने बताया कि इस तरह की मॉक ड्रिल न केवल कर्मचारियों को जागरूक करती है, बल्कि वास्तविक आपातकालीन

स्थिति में जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद करती है। उन्होंने यह भी कहा कि कंपनी समय-समय पर ऐसे अभ्यास करती रहेगी ताकि सुरक्षा मानकों को और मजबूत किया जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता एचआर एवं एडमिन हेड दशरथ मिश्र तथा एसोसिएट मैनेजर एडमिन अखिलेश कुमार शुक्ल ने सभी अतिथियों के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर जिले से फायर निरीक्षक भगवान् सिंह के साथ स्टाफ गीडा तथा आईओसीएल, एचपीसीएल, अंकुर उद्योग, गैलेन्ट इस्पात की सुरक्षा टीम मय फायर टेन्डर एवं आईजीएल के कर्मयोगी उपस्थित रहे।

पुलिस की विभिन्न कार्रवाइयाँ, कई महत्वपूर्ण पहल

देवरिया। जनपद के थाना बनकटा क्षेत्र के भटवा पाण्डेय गांव में 15 दिसंबर की शाम 7 वर्षीय बच्चे के साथ कुकर्म की सूचना पर पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी वृद्ध लगभग 65 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया। परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है। मामले में अग्रिम विधिक कार्रवाई जारी है। उक्त जानकारी क्षेत्राधिकारी भाटपार रानी श्री अंशुमान श्रीवास्तव ने दी। इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक संजीव सुमन के निर्देश पर पासपोर्ट सत्यापन प्रक्रिया को पारदर्शी व भ्रष्टाचार मुक्त बनाने हेतु पासपोर्ट फीडबैक सेल का गठन किया गया है। आवेदक सत्यापन से संबंधित शिकायतें मोबाइल नंबर 7839862223 व 9454458032 पर दर्ज करा सकते हैं। अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी आनंद पाण्डेय ने थाना रामपुर कारखाना व महुआडीह में नियुक्त विवेचकों का ओआर कर लंबित विवेचनाओं की समीक्षा की तथा समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए। यातायात पुलिस द्वारा दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए चलाए गए अभियान में 119 वाहनों का ई-चालान किया गया, जबकि एक वाहन सीज किया गया।

एपीओ पर ऑनलाइन अवैध वसूली का स्क्रीनशॉट वायरल, मचा प्रशासनिक हड़कंप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोण्डा। रूपईडीह विकासखंड में तैनात अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी (एपीओ) पर ऑनलाइन अवैध वसूली का गंभीर आरोप उस समय और पुख्ता होता दिखा, जब सोशल मीडिया पर कथित लेन-देन का स्क्रीनशॉट वायरल हो गया। वायरल स्क्रीनशॉट में ऑनलाइन माध्यम से धनराशि ट्रांसफर किए जाने का विवरण सामने आने के बाद विभागीय गलियारों में हड़कंप मच गया है। बताया जा रहा है कि यह स्क्रीनशॉट ग्राम रोजगार सेवकों द्वारा लगाए गए उन आरोपों से जुड़ा है, जिनमें एपीओ पर स्वीकृति, कार्य आईडी जनरेट कराने और

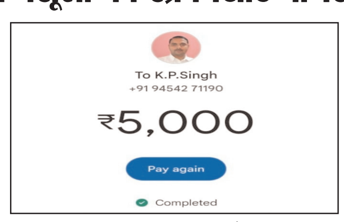

भुगतान सत्यापन के नाम पर पैसे मांगने का आरोप लगाया गया था। रोजगार सेवकों का दावा है कि ऑनलाइन भुगतान के ये साक्ष्य उनकी शिकायतों को सही ठहराते हैं। गौरतलब है कि हाल ही में रोजगार सेवकों द्वारा दिए गए ज्ञापन के आधार पर प्रशासन ने प्रकरण में स्पष्टीकरण की प्रक्रिया शुरू की थी। लेकिन अब स्क्रीनशॉट के सार्वजनिक होने के बाद मामला केवल आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित न रहकर डिजिटल साक्ष्य के स्तर तक पहुंच गया है।सूत्रों के अनुसार, वायरल सामग्री की तकनीकी जांच कराई जा सकती है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि लेन-देन किस खाते से, किसके निर्देश पर और किस उद्देश्य से किया गया। वहीं रोजगार सेवक संघ ने मांग की है कि स्क्रीनशॉट की निष्पक्ष जांच कराकर दोषी पाए जाने वाले अधिकारी के विरुद्ध तत्काल सख्त कार्रवाई की जाए।प्रशासन की ओर से फिलहाल कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन मामले की गंभीरता को देखते हुए उच्च स्तर पर संज्ञान लिए जाने की संभावना जताई जा रही है।

इटियाथोक कोतवाली क्षेत्र में 6 वर्षीय किशोरी से छेड़छाड़, आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

इटियाथोक। गोंडा। इटियाथोक कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत मंगलवार को एक गंभीर और निंदनीय घटना सामने आई। इटियाथोक कोतवाली क्षेत्र गांव के ही एक व्यक्ति ने 6 वर्षीय किशोरी के साथ छेड़छाड़ की घटना को अंजाम दिया। मामले की जानकारी होते ही गांव में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की मदद से आरोपी को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया। जानकारी के अनुसार, मंगलवार दोपहर के बाद 6 वर्षीय किशोरी गांव में स्थित गन्ना क्रय केंद्र के बगल खेल रही थी। उसके साथ उसकी 9 वर्षीय चचेरी बहन भी मौजूद थी। इसी दौरान

आरोपित गन्ना क्रय केंद्र के पास पहुंचा और समोसा खिलाने के बहाने दोनों बच्चियों को अपने झांसे में लिया। कुछ समय बाद 9 वर्षीय किशोरी वहां से अपने घर चली गई।इसके बाद आरोपित ने 6 वर्षीय किशोरी को बहला-फुसलाकर पास के गन्ने के खेत में ले गया, जहां उसके साथ छेड़छाड़ करने का प्रयास किया। काफी समय बीत जाने के बाद जब बच्ची घर नहीं लौटी तो परिजन उसकी तलाश में निकल पड़े। खोजबीन के दौरान गन्ना क्रय केंद्र के बगल 6 वर्षीय किशोरी को रोते हुए देखकर परिजन सन्न रह गए।घटना की जानकारी मिलते ही गांव वालों ने तत्परता दिखाते हुए थोड़ी ही दूरी पर मौजूद आरोपी को पकड़ लिया और तुरंत इटियाथोक पुलिस को सूचना दी। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।इस संबंध में इटियाथोक कोतवाली प्रभारी कृष्ण गोपाल राय ने बताया कि आरोपित के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आरोपी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है और आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।घटना के बाद गांव में आक्रोश का माहौल है। ग्रामीणों ने प्रशासन से आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

बैतालपुर चीनी मिल को चालू कराने की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट परिसर में चल रहा धरना जारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देवरिया। चीनी मिल चलाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में बैतालपुर चीनी मिल को चालू कराने की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट परिसर में चल रहा धरना बुधवार को 331वें दिन भी जारी रहा। कड़ाके की ठंड के बीच किसानों ने धरना स्थल पर अलाव जलाकर नारेबाजी करते हुए अपना विरोध दर्ज कराया। संघर्ष समिति की अध्यक्ष बृजेंद्र मणि त्रिपाठी ने कहा कि कृषि प्रधान देश में अन्नदाता किसान अपनी मांगों को लेकर लंबे समय से शांतिपूर्ण धरना दे रहे हैं, लेकिन सरकार की ओर से कोई सुनवाई नहीं हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि चीनी मिल चलाने का वादा करने वाली सरकार वादा खिलाफी कर रही है, जो बेहद शर्मनाक है। देश स्तर पर भी किसानों के साथ लगातार वादाखिलाफी हो रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2019 से लगातार चुनावी जनसभाओं में बैतालपुर चीनी मिल कंपलेक्स लगाने की घोषणा की जाती रही है, लेकिन अब तक इसे चालू करने की कोई ठोस प्रक्रिया नजर नहीं आ रही है। चेतावनी देते हुए कहा कि यदि बैतालपुर चीनी मिल जल्द नहीं चलाई गई तो किसान सड़क और गांव-गांव जाकर व्यापक जन आंदोलन करेंगे, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी। धरने में विकास दूबे, पंडित वेद प्रकाश, संजीव शुक्ला, विजय शंकर कर्मयोगी, नईम खान, बकरीदन उर्फ बरकत अली, उग्रसेन सिंह, श्रीराम मिश्रा, ए.के. मिश्रा, राम इकबाल चौहान, चंद्रभान यादव, अमित पांडे, गौरव यादव, रामधारी यादव, पन्नालाल पाठक सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

शराब पीकर गांव में उत्पात मचाता है गंदी प्रवर्ति व्यक्ति

लखीमपुर-खीरी। पुलिस अधीक्षक को दिए शिकायती पत्र में ग्राम पंचायत शाहपुर जागीर ब्लाक मोहम्मदी चौकी रामपुर मिश्र थाना मोहम्मदी लखीमपुर-खीरी के प्रधान पुत्र ने बताया उसके गांव के रहने वाले कुलविंदर सिंह पुत्र राकेश सिंह गांव में शराब पीकर आये दिन गाली गलौज करता है जिससे रास्ते में निकलने वाली महिलाओं को काफी दिक्कतों को सामना करना पड़ता है अगर कोई भी व्यक्ति उसको गाली न देने की बात समझाता है। तो आमादा फौजदारी होते हुए शराब के नशे में दबंगई दिखाता है जिसकी शिकायतें आने पर उक्त व्यक्ति को प्रधान पुत्र द्वारा समझाने का प्रयास किया जाता है तो उक्त व्यक्ति प्रधान पुत्र को भी गालियां देता है और प्रधान पुत्र से दरवाजा पर पहुंचकर यह पूछता है किसने तुमसे शिकायत की है शक होने पर गांव में खेतों पातों में काम कर रहे व्यक्ति को भी गालियां देकर पूछता है कि क्या तुमने प्रधान पुत्र से शिकायत की है प्रधान पुत्र होता क्या है मैं अपने आगे किसी की नहीं सुनता यह सत्य भी है कि शराब के नशे में गाली गलौज मारपीट उत्पात मचाना उक्त दबंग की दिनचर्या में शामिल है। रोज इसी तरह की घटना से गांव के लोगों में आक्रोश व्याप्त है और उक्त व्यक्ति से भिड़ने डर रहे जो व्यक्ति प्रधान पुत्र के दरवाजे पर जाकर दबंगई दिखा दे तो आप आदमी की क्या बिसात।

तृतीया शतचंडी महायज्ञ एवं विराट कवि सम्मेलन का आयोजन

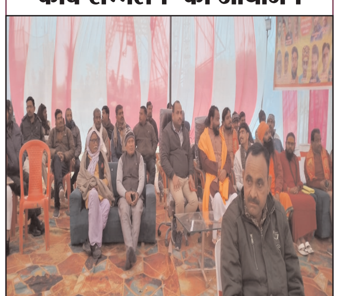

बेहजम खीरी। बेहजम क्षेत्र के सुनौरा मिर्जापुर ग्राम पंचायत में तृतीय श्री शतचंडी महायज्ञ एवं विराट संत सम्मेलन का आयोजन बड़ी श्रद्धा भक्ति भाव से किया जा रहा है बुधवार को इस धार्मिक कार्यक्रम के अंतिम समापन अवसर पर वृंदावन धाम से पधारी साध्वी साक्षी शुक्ला द्वारा भगवान श्री राधा कृष्ण के भजन और श्री मद्भागवत कथा का श्रवण कराया गया वहीं कार्यक्रम में पंडित सुरेश चंद्र अवस्थी, संत मानस केसरी ,राष्ट्र प्रहरी पवनेश जी महाराज नंदन मिश्रा सहित अन्य संत महात्माओं द्वारा भगवद चर्चा कर संत समागम हुआ कार्यक्रम का संचालन पंडित प्रेम सागर द्वारा बड़े ही मनोहारी ढंग से किया गया इस मौके पर ग्राम प्रधान पंडित प्रेम बाजपेई कमल मिश्रा सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

मंदबुद्धि ने मंदिर से मूर्ति उठाकर तालाब में फेंकी

हमीरपुर- बिवांर थाना की कुन्हेटा चौकी क्षेत्र के न्यूरिया गांव में गांव के ही एक मंदबुद्धि व्यक्ति रामबहादुर ने हनुमान जी के मंदिर से उनकी पत्थर की मूर्ति उठाकर पास के तालाब में फेंक दी।सुबह लगभग पांच बजे जब मन्दिर के पुजारी बिल्लू प्रजापति ने सफाई करने के लिए मंदिर खोला तो वह मूर्ति न पाकर अवाक रह गया।पुजारी ने ग्रामप्रधान पति कन्हैया दीक्षित और अन्य ग्रामीणों को इसकी सूचना दी, देखते- देखते खबर गांव में आग की तरह फैल गई।मन्दिर के पास भीड़ इकट्ठी हो गई, जिसके बाद प्रधान पति ने चौकी इंचार्ज एसआई रविन्द्र कुमार को घटना की सूचना दी।

प्रधान पति कन्हैया दीक्षित ने बताया कि मंदिर गांव के बाहर तालाब किनारे बना हुआ है जो बीते साल 1993 में बना था।बताया, पहले तो आशंका हुई कि किसी ने धन के लालच में तो यह काम नहीं किया, लेकिन बाद में जब उस व्यक्ति के बारे में पता चला तो उसे बुलाकर पूंछा गया लेकिन वह कुछ नहीं बता सका।कुछ देर बाद चौकी इंचार्ज भी मंदिर परिसर में पहुंच गए और युवक स्व पूंछताछ की।चौकी इंचार्ज ने बताया कि आरोपी व्यक्ति कुछ मानसिक विक्षिप्त है ,जो पहले भी एक मूर्ति खंडित कर चुका था।बताया, आरोपी ने पूंछताछ के दौरान बताया कि वह भगवान की मूर्ति तालाब में नहलाने-धोने के लिए ले गया था, लेकिन मूर्ति हाथों से फिसल गई।खबर लिखने तक मूर्ति को तालाब में खोजा जा रहा था।

व्यापारी पंद्रह दिनो के अन्दर अपना स्वेच्छा से अतिक्रमण हटा ले नही तो होगी बडी कार्रवाई, प्रतीक्षा त्रिपाठी

● जनवरी के प्रथम सप्ताह से नगर के सभी मार्गो से हटेगा अतिक्रमण।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोला गोकर्णनाथ खीरी। नगर पालिका परिषद के सभागार में नगर में व्यापक अतिक्रमण को समाप्त करने के लिए एक बार फिर से प्रशासन-नगर पालिका परिषद एवं व्यापारियों की बैठक का आयोजन उपजिलाधिकारी प्रतीक्षा त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू, पुलिस क्षेत्राधिकारी रमेश तिवारी व कोतवाल अम्बर सिंह, यातायात एवं परिवहन विभाग तथा व्यापार मण्डल के पदाधिकारी मौजूद रहे।

बैठक में सिनेमा चौराहे पर परिवहन विभाग की बसों के खडे होने, फुटपाथ पर अवैध कब्जा, खुटार रोड पर सब्जी मण्डी, ऑटो रिक्शा, बैंक एवं बारात घरों के पास पार्किंग की व्यवस्था न होना, रेलवे क्रासिंग पर लगने वाली जाम आदि पर समस्याएं उभर कर सामने आईं। उपजिलाधिकारी प्रतीक्षा त्रिपाठी ने अपन सम्बोधन में बताया कि नगर पालिका परिषद एवं पुलिस अधिकारियों के साथ बैठकर ऑटोरिक्शा का रूट तय करने, बिना नम्बर के चल रहे ऑटो रिक्शा बंद करने, नाबालिगों को ऑटो रिक्शा चलाने पर बैन लगाने, शराब पीकर ऑटो चलानेवालों पर कार्यवाही करने की रुप रेखा तय की गई है। इसी के साथ उन्होंने बताया कि पन्द्रह दिन का समय व्यापारियों को दिया जाता है वह दुकान के सामने लगने वाले अतिक्रमण को हटा लें, अन्यथा जनवरी माह में चलने वाले अतिक्रमण हटाओ अभियान में प्रशासन अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही करेगा। इसी के साथ दुकान के सामने नगर के मुख्य मार्गो पर अधिकतम चार फुट की टीन शेड व्यापारी डाल सकते है। इसके अतिरिक्त टीन शेड अतिक्रमण की श्रेणी में आयेगी। एसडीएम ने नगर पालिका को नगर के मुख्य मार्गो पर अतिक्रमण को चिन्हित करने के निर्देश दिये है। इस मौके पर सभासद नानक चन्द वर्मा, अधिवक्ता संदीप अवस्थी, कांग्रेसी नेता गौरव मिश्रा सहित नगर के विभिन्न व्यापार मण्डल के संगठनों के पदाधिकारी मौजूद रहे।

तहसील प्रशासन ने बांटे कंबल

लखीमपुर खीरी। बेहजम ब्लॉक क्षेत्र के पैला ग्राम पंचायत में बढ़ती ठंड और शीतलहर को देखते हुए तहसील प्रशासन की ओर से राहत कार्य किया गया। इस दौरान क्षेत्रीय लेखपाल राजेश कुमार ने गांव के गरीब, असहाय वृद्धों एवं निराश्रित महिलाओं को कंबल वितरित किए।कंबल पाकर जरूरतमंदों के चेहरों पर राहत और खुशी साफ नजर आई। ग्रामीणों ने तहसील प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ठंड के इस कठिन समय में मिली यह मदद उनके लिए संजीवनी साबित होगी। लेखपाल राजेश कुमार ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार ठंड से बचाव के लिए, जरूरतमंदों को राहत पहुंचाई जा रही है और आगे भी ऐसे लोगों को चिन्हित कर सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। प्रशासन की इस पहल से क्षेत्र में ठंड से राहत पहुंचाने का संदेश गया है।

भ्रष्टाचार में आकंठ तक डूबी ग्राम पंचायत अजबापुर, फर्जी बाउचरों की भरमार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पसगवां। ब्लॉक की ग्राम पंचायत "अजबापुर" में सरकारी धन के खुलेआम दुरुपयोग का मामला सामने आया है। आरोप है कि ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव की मिलीभगत से विकास कार्यों के नाम पर सरकारी धन की जमकर बंदरबांट की गई। वित्तीय वर्ष के खर्चों की पड़ताल में सामने आया है कि पंचायत में अनियमितताओं ने सभी सीमाएं लांघ दी हैं। बाउचरों में की गई हेराफेरी इतनी लापरवाह और बेशर्म है कि एक ही बाउचर में ऊपर "नुनारी चौराहे से इंटरलॉकिंग कार्य दर्शाया गया है, जबकि उसी बाउचर के नीचे कोविड काल में सैनिटाइजर छिड़काव का उल्लेख किया गया है।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि ऐसे विरोधाभासी और संदिग्ध बाउचरों को "उच्च अधिकारियों द्वारा बिना जांच-पड़ताल के स्वीकृति" दे दी गई। इससे यह आशंका और गहरी हो जाती है कि भ्रष्टाचार की जड़ें सिर्फ ग्राम पंचायत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें जिम्मेदार अधिकारी भी संलिप्त हो सकते हैं।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि कागजों में विकास दिखाकर लाखों रुपये निकाल लिए गए, जबकि जमीनी हकीकत में न तो काम हुआ और न ही सुविधाएं मिलीं। अब सवाल यह उठता है कि क्या पूरे मामले की निष्पक्ष जांच होगी या फिर फाइलों में ही भ्रष्टाचार दफन कर दिया जाएगा? ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से मामले की उच्चस्तरीय जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

तहसीलदार ने किया गौशालाओं का औचक निरीक्षण दिया निर्देश लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली/नवाबगंज तहसीलदार दुष्यंत प्रताप सिंह ने विकासखंड भदपुरा की गौशालाओं का आवश्यक निरीक्षण किया बढ़ रही सर्दी के तहत किसी भी तरह की गौशाला में उनके रखरखाव के साथ ही बेहतर स्वास्थ्य के साथ ही उनके भोजन में दिए जाने वाले चारा के साथ ही गौशालाओं में सर्दी से बचने के लिए किए गए प्रबंधों का निरीक्षण करने हेतु उन्होंने निरीक्षण किया।

निरीक्षण में आज दलेल नगर मधु नगला सूरजपुर परौरिया नरहरपुर गौरी खेड़ा धमीपुर गौशालाओं का शीतकालीन निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेने के लिए तहसीलदार दुष्यंत प्रताप सिंह ने दौरा किया जिसके तहत गौशालाओं में संरक्षित पशुओं को ठंड से बचने के लिए ट्रिपाल अलाव झूले आदि का निरीक्षण किया गया कहीं-कहीं पर उनको कुछ असुविधाएं मिली तो उन्होंने शीघ्र पूर्ण करने की चेतावनी देते हुए कहा किसी भी तरह की गौशालाओं में होने वाली लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

इसलिए बढ़ रही कड़ाके की सर्दी में गौशाला में रह रहे पशुओं की सुरक्षा की पूर्ण जिम्मेदारी ग्राम पंचायत से लेकर प्रशासन की है इसलिए गौशालाओं का पूर्ण रूप से विशेष ध्यान रखा जाए यदि किसी की शिकायत मिल गई और ठीक पाई गई तो उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी जिसमें किसी का भी कोई भी सोर्स सिफारिश काम नहीं आएगी।

इसलिए गौशालाओं का विशेष ध्यान रखा जाए इन्हीं के साथ ही पशु चिकित्सा अधिकारी भी गौशालाओं में प्रति दिन नजर रखने की आवश्यकता के साथ ही पैनी नजर रखें और पशुओं को किसी भी तरह समस्याहोनेपर तुरंत उपचार दिया जाए किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी इसके तहत सभी की जिम्मेदारी निर्धारित की जाती है।

आग से झुलसे व्यक्ति को 108 एम्बुलेंस ने पहुंचाया जिला अस्पताल शीघ्र मिला उपचार

बरेली/आंवला/पुरैना ढाल के निवासी राकेश (पुत्र सुखलाल) आज सुबह अत्यधिक ठंड के कारण आग ताप रहे थे। इसी दौरान अचानक वे आग की चपेट में आ गए, जिससे उनका पूरा शरीर गंभीर रूप से जल गया। घटना की सूचना मिलते ही परिजनों द्वारा 108 एम्बुलेंस पर कॉल किया गया। एम्बुलेंस शीघ्र मौके पर पहुंची और घायल को प्राथमिक उपचार देते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रमा में ले जाया गया। वहां स्थिति में सुधार न होने पर डॉक्टरों ने उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। इसके बाद 108 एम्बुलेंस के माध्यम से घायल को सुरक्षित रूप से जिला अस्पताल पहुंचाया गया। इस पूरे रेस्क्यू और उपचार कार्य में श्रेष्ठ विनोद एवं पायलट संजीव की अहम भूमिका रही, जिनकी तत्परता और सेवा भावना से मरीज को समय पर उच्च चिकित्सा सुविधा मिल सकी। 108 एम्बुलेंस सेवा की त्वरित कार्रवाई ने एक बार फिर आपातकालीन स्थिति में अपनी उपयोगिता साबित की है।

सफला एकादशी पर धूमधाम से मनाया गया खाटू श्याम का संकीर्तन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोला गोकर्णनाथ खीरी। गोला नगर के समीपवर्ती कंजादेव स्थान पर श्रीश्याम दीवाने सेवा समिति गोला द्वारा सफला एकादशी के उपलक्ष्य पर खाटू श्याम मंदिर में एक भव्य संकीर्तन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंदिर प्रांगण श्रद्धालुओं से पूरी तरह भरा हुआ था, और गणेश स्तुति से संकीर्तन का शुभारंभ हुआ।अजय गुप्ता और शिवम गुप्ता की मधुर आवाज ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। भक्त खाटू श्याम के भजनों पर झूमते-नाचते नजर आए। सुंदर-सुंदर भजनों को सुन श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। इश्याम बाबा श्याम बाबा तेरे चरणों में अरदास लाया हूँहूं, इतेरी रहमतों का किस्सा सरेशाम चल रहा हैहू, और इमेरा दिल तुझे पे कुरबाँ मुरलियाँ वालेइ जैसे भावपूर्ण भजनों ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

खाटू श्याम मंदिर के पुजारी सन्तोष पाठक ने बताया कि हिंदू धर्म में एकादशी का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक वर्ष चौबीस एकादशियाँ होती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है। पद्मपुराण में पौषमास के कृष्णपक्ष की एकादशी के विषय में युधिष्ठिर के पूछने पर भगवान श्रीकृष्ण बोले- बड़े-बड़े यज्ञों से भी मुझे उतना संतोष नहीं होता, जितना एकादशी व्रत के अनुष्ठान से होता है।

संकीर्तन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया और खाटू श्याम की भक्ति में लीन हो गए।

पुरुष, महिलाएं और बच्चे सभी इस संकीर्तन में सम्मिलित हुए और खाटू श्याम के जयकारों से मंदिर प्रांगण को गुंजायमान कर दिया।कार्यक्रम का समापन श्री खाटू श्याम बाबा की आरती और प्रसाद वितरण के साथ हुआ। मंदिर के पुजारी सन्तोष पाठक ने भक्तों को श्याम बाबा का आशीर्वाद दिया और सभी ने बड़े ही श्रद्धा-भाव से प्रसाद ग्रहण किया।बुधवार 17/12/25 को प्रमोद सोनी के निवास गांधी स्कूल के पीछे श्री खाटू श्याम बाबा का संकीर्तन का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी श्याम भक्त आमंत्रित हैं और अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर श्याम भजनों का रसपान कर आशीर्वाद प्राप्त करें।इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष दीपक राजपूत, महामंत्री अजय गुप्ता, अनिरुद्ध गुप्ता, शिवम गुप्ता, मीडिया प्रभारी सुधीर गुप्ता, आशुतोष रस्तोगी, बबलू जायसवाल, शिवम गुप्ता, संतोष गुप्ता, अनुराग गुप्ता, सुमित राठौर, प्रवीण रस्तोगी, रमेश वर्मा, संजय गुप्ता (बद्री स्वीट), संदीप राजपूत, अभिषेक राजपूत, जितेंद्र गुप्ता, रिशु महेश्वरी, मयंक महेश्वरी, विवेक कुमार सहित अन्य सभी सेवादार उपस्थित रहे।

पंकज चौधरी के भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बनने पर भदपुरा ब्लॉक प्रमुख ने लोगों को मिठाई वितरित की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली/क्योलडिया। भारतीय जनता पार्टी के द्वारा पंकज चौधरी को भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष बनाये जाने पर आज भदपुरा ब्लॉक प्रमुख रवि शंकर गंगवार ने अपने कार्यालय में लोगों को एकत्रित कर मिठाई बांटी और कहा भाजपा के द्वारा पंकज चौधरी को पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने से प्रदेश का संगठन और मजबूत होगा।

सभी कार्य कर्ता चौधरी के प्रदेश अध्यक्ष बनने पर अधिक मजबूत होंगे चौधरी को पार्टी प्रदेश अध्यक्ष बनाकर पार्टी को प्रगति प्रदान करने का कार्य किया है क्योकि पंकज चौधरी जमीन से जुड़े व्यक्ति हैं वह किसीके भी साथ भेदभाव नहीं करते हैं इस पर ब्लॉक प्रमुख ने भाजपा के इस कार्य की सराहना की और कहा विरोधियों को यह कहने का भी अवसर खो दिया है। के भाजपा में ओबीसी का महत्व नहींदया जाता है क्योकि पंकज चौधरी ओ बी सी से है उनके प्रदेश अध्यक्ष बनने पर भारतीय जनता पार्टी 2027के चुनाव में बेहतरीन प्रदर्शन करेगी इस दौरान ग्राम प्रधान तुलाराम महातिया कुलदीप गंगवार पूर्व प्रधान ईद्रपाल संजीव मुखिया बी डी राठौर बाबू अंसारी शैलेंद्र गंगवार दीनानाथ गंगवार समेत अनेक लोग मौजूद रहे।

पर्यावरण संरक्षण आज सबसे बड़ी चुनौती: प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। शब्द को समझना एक साधना है। शब्दों के प्रकट व्यवहार से पहले प्रस्तोता को शब्द के जिस दार्शनिक गलियारे से गुजरना होता है, वहाँ उसकी शब्द साधना उसे दृष्टि प्रदान करती है। शब्द की साधना के क्रम में संस्कृत की परंपरा में परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी चर्चा का विशेष महत्व है। उक्त बातें बुधवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय (परिसर] के हिन्दी विभाग में हिन्दी के प्रख्यात कवि-आलोचक प्रो0 बजरंग बिहारी तिवारी ने कहीं। वे हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विद्वत वक्तव्य कार्यक्रम में 'शब्द, साहित्य और मनुष्य' विषय पर बोल रहे थे। प्रोफेसर तिवारी ने संस्कृत के सुप्रसिद्ध आचार्यों और उनकी कृतियों की चर्चा करते हुए समकालीन संस्कृत साहित्य की भी चर्चा की। उन्होंने जयशंकर प्रसाद की कृति में व्यक्त पर्यावरण विषयक चिन्ता के समसामयिक महत्व की चर्चा की और कहा कि आज पर्यावरण संरक्षण हमारे लिए बड़ी चुनौती है और इसे स्वीकारना हमारी जिम्मेदारी भी है।

दूषित होती पर्यावरणीय स्थितियों के कारण साहित्य और पाठक की आने वाली पीढ़ियों के मध्य संवाद होना कठिन होता जा रहा है, यह विषम स्थिति हमारे गौरवशाली मध्यकालीन साहित्य के महत्व को समझने-बताने और पढ़ने-पढ़ाने में आने वाले समय में बड़ी बाधा पैदा कर देगी। अतिथि परिचय डॉ0 रेनू त्रिपाठी तथा स्वागत वक्तव्य हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ0 सत्येन्द्र कुमार दुबे ने दिया। आभार ज्ञापन पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो0 हरीशकुमार शर्मा ने किया। इस अवसर महाविद्यालयों के प्राध्यापकों में प्रो0 प्रकाशचन्द्र गिरि, प्रो0 शैलेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ0 राणा प्रताप तिवारी, डॉ0 विपिन यादव, डॉ0 राघवेन्द्र सिंह, डॉ0 विजय निषाद विश्वविद्यालय के शिक्षकों में आनंद, ममता, सुजाता सहित विश्वविद्यालय के तमाम विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर बजरंग बिहारी तिवारी को गौतम बुद्ध की प्रतिमा का स्मृति-चिह्न भेंट किया गया।

हिंदुओं ने भरी हुंकार 28 दिसंबर को शुकुल बाजार में होगा विराट हिंदू सम्मेलन

● हर घर से शामिल होंगे हिंदू भाई 28 दिसंबर 2025 को शिव-पार्वती धर्मशाला बनेगी चिंतन और संवाद का केंद्र

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेठी। शुकुल बाजार विकासखंड अंतर्गत शिव-पार्वती धर्मशाला में 28 दिसंबर 2025 को आयोजित होने जा रहा विराट हिंदू सम्मेलन क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक जीवन में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ने की तैयारी में है। इस सम्मेलन को लेकर गांव-गांव, घर-घर व्यापक उत्साह देखा जा रहा है। हिंदू संगठनों एवं आयोजकों का दावा है कि यह आयोजन केवल एक सभा नहीं, बल्कि हिंदू समाज के आत्ममंथन, संगठन और भविष्य की दिशा तय करने का मंच होगा, जहां हिंदू हितों पर गहन और सार्थक चर्चा की जाएगी तथा दीर्घकालिक रणनीति तैयार की जाएगी।वर्तमान समय में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण, युवा सशक्तिकरण जैसे विषयों पर निरंतर संवाद की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं शुकुल बाजार क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ताओं, धर्मप्रेमियों और प्रबुद्ध नागरिकों ने मिलकर विराट हिंदू सम्मेलन के आयोजन का निर्णय लिया है। आयोजकों का कहना है कि सम्मेलन का मूल उद्देश्य समाज में सकारात्मक चेतना का संचार करना, सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना और विकास की राह में एकजुट प्रयासों को गति देना है।सम्मेलन के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया जाएगा कि समाज की मजबूती आपसी संवाद, सहयोग और सेवा भाव से ही संभव है। हिंदू समाज की विविधता, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए आधुनिक चुनौतियों का समाधान खोजने पर विशेष जोर दिया जाएगा।शिव-पार्वती धर्मशाला वर्षों से धार्मिक और सामाजिक आयोजनों का केंद्र रही है। यहां आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में दूर-दराज के गांवों से लोग पहुंचते हैं। धर्मशाला का विशाल परिसर, सुव्यवस्थित संरचना और शांत वातावरण इस विराट सम्मेलन के लिए उपयुक्त माना जा रहा है। आयोजकों ने बताया कि सम्मेलन के दौरान धर्मशाला परिसर में स्वच्छता, पेयजल, बैठने की समुचित व्यवस्था, चिकित्सा सहायता और सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए जाएंगे, ताकि प्रतिभागियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।सम्मेलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें हर घर से सहभागिता का आह्वान किया गया है। आयोजक मंडल के अनुसार, यह सम्मेलन किसी एक वर्ग या संगठन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि समाज के सभी वर्गों–किसान, मजदूर, व्यापारी, शिक्षक, युवा, महिलाएं और वरिष्ठ नागरिक–की सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है। गांव-गांव जाकर जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है, पोस्टर, पंपलेट और जनसभाओं के माध्यम से लोगों को सम्मेलन के उद्देश्य और कार्यक्रम की जानकारी दी जा रही है।स्थानीय स्वयंसेवकों की टीम घर-घर संपर्क कर लोगों को आमंत्रित कर रही है और उनसे सुझाव भी एकत्र किए जा रहे हैं, ताकि सम्मेलन में उठाए जाने वाले मुद्दे जमीनी हकीकत से जुड़े हों। आयोजकों का मानना है कि जब समाज के सभी वर्ग अपनी बात साझा करेंगे, तभी एक सार्थक और व्यावहारिक रणनीति तैयार हो सकेगी।सम्मेलन के प्रमुख सत्रों में हिंदू समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इनमें सांस्कृतिक संरक्षण, धार्मिक स्थलों की स्वच्छता और प्रबंधन, शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश, युवाओं में कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण और आपदा के समय सामूहिक सहयोग जैसे मुद्दे शामिल हैं।प्रबुद्ध वक्ताओं द्वारा इन विषयों पर विचार प्रस्तुत किए जाएंगे, वहीं खुला मंच भी रहेगा, जहां आम नागरिक अपनी बात रख सकेंगे।

आयोजकों का कहना है कि चर्चा केवल भाषणों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि सुझावों को संकलित कर एक कार्ययोजना के रूप में सामने लाया जाएगा।विराट हिंदू सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य भविष्य की रणनीति तैयार करना है। आयोजक मंडल के अनुसार, समाज के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान केवल तात्कालिक उपायों से नहीं, बल्कि दीर्घकालिक योजना से संभव है। इसलिए, सम्मेलन के अंत में विभिन्न सत्रों से प्राप्त सुझावों के आधार पर एक साझा रणनीति तैयार की जाएगी।

इस रणनीति में हिंदू हित और हिंदू एकता को लेकर विशेष रणनीति बनाई जाएगी सम्मेलन में युवाओं की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विराट हिंदू सम्मेलन को लेकर शुकुल बाजार और आसपास के क्षेत्रों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। लोगों में इस बात की चर्चा है कि इतने बड़े स्तर पर आयोजन पहली बार हो रहा है। गांव की चौपालों, बाजारों और सामाजिक कार्यक्रमों में सम्मेलन के उद्देश्य और कार्यक्रम को लेकर बातचीत हो रही है।कई वरिष्ठ नागरिकों का कहना है कि ऐसे आयोजनों से समाज में एकता और सकारात्मक सोच को बल मिलता है। वहीं युवा वर्ग इसे अपने विचार रखने और समाज के लिए कुछ करने का अवसर मान रहा है 28 दिसंबर 2025 को शिव-पार्वती धर्मशाला में आयोजित होने वाला विराट हिंदू सम्मेलन न केवल एक दिन का कार्यक्रम होगा, बल्कि यह समाज के लिए दीर्घकालिक दिशा तय करने की पहल के रूप में देखा जा रहा है। हर घर से सहभागिता, हिंदू हितों पर गंभीर चर्चा और ठोस रणनीति निर्माण के संकल्प के साथ यह सम्मेलन क्षेत्र में सामाजिक जागरूकता और संगठन की नई मिसाल पेश करने की तैयारी में है।आयोजकों को विश्वास है कि समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी से यह सम्मेलन अपने उद्देश्यों में सफल होगा और आने वाले समय में सकारात्मक बदलावों का मार्ग प्रशस्त करेगा। उक्त कार्यक्रम को लेकर रामकुमार स्मारक महाविद्यालय में आरएसएस जिला कार्यवाह अरविंद जी, भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला, वरिष्ठ भाजपा नेता पंडित राम उजेरे शुक्ला, उद्योगपति महेंद्र विजय सिंह, मंडल अध्यक्ष शंकर बक्श सिंह , उदयनरायन मिश्रा, संदीप शुक्ला, सहित भारतीय जनता पार्टी के अन्य पदाधिकारी गण क्षेत्र के संभ्रांतजन, हिंदू धर्म गुरुओं ने संयुक्त रूप से बैठक करते हुए रणनीति बनाई।

अमेठी में सिलेंडर फटने से एक व्यक्ति की मौत, एक अन्य घायल

उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले में संभवतः गैस सिलेंडर फटने से एक मकान ढह गया, जिसकी वजह से एक व्यक्ति की मौत हो गई और एक अन्य घायल हो गया। पुलिस ने बुधवार को बताया कि घटना मंगलवार रात करीब 10 बजे भदेर-जामो रोड पर स्थितशिव महेश पांडे नामक व्यक्ति के मकान में हुई। स्थानीय निवासियों ने बताया कि धमाके के बाद मकान पूरी तरह ढह गया। पुलिस ने बताया कि गौरीगंज थानांतर्गत बस्तीदेई गांव के रहने वाले सतीश चंद तिवारी (37) की धमाके में मौत हो गई। जामो के रहने वाले एक और व्यक्ति बलराम चंद पांडे गंभीर रूप से घायल हो गए, और उन्हें गौरीगंज के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मकान में स्थित कोल्ड ड्रिंक गोदाम के मालिक बलराम पांडे के अनुसार वह रात में गोदाम में रखे खातों को चेक करने गए थे, तभी यह घटना हुई। उन्होंने पुलिस को बताया, मैं गेट का ताला खोल रहा था, तभी एक जोरदार धमाका हुआ, जिसके बाद पूरी इमारत गिर गई। थाना प्रभारी विनोद कुमार सिंह ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि धमाका गैस सिलेंडर फटने से हुआ। उन्होंने कहा, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और मामले की जांच जारी है।

संक्षिप्त खबरें

नैनागढ़ महोत्सव समिति की बैठक में सदस्यों का हुआ सम्मान

चुनार, मीरजापुर। विगत 4 और 5 नवंबर 2025 को संपन्न हुए 'नयनागढ़ महोत्सव के सफल आयोजन के लिए मंगलवार को नगर स्थित श्री राम उत्सव वाटिका में नैनागढ़ महोत्सव समिति की एक बैठक समिति के अध्यक्ष दिनेश सिंह पटेल की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में समिति द्वारा आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। साथ ही आयोजन को सफल बनाने हेतु सभी सदस्यों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रमाकांत उपाध्याय,विशिष्ट अतिथि जगतगुरु रामानंदाचार्य डॉ पुंडरी शास्त्री वाराणसी रहे। इस अवसर पर संरक्षक सभाजीत सिंह, मेजर कृपा शंकर सिंह, आलोक श्रीवास्तव,श्याम घर चतुर्वेदी, चंद्र बजाज अहरौरा के प्रोपराइटर नीरज पांडे,यूथ ब्रिगेड के अध्यक्ष सौरभ पुजारी ,सचिव विकास कश्यप, महामंत्री अनु तिवारी, धीरेंद्र सिंह, विश्व दीपक सिंह ,शैलेंद्र सिंह ,दीपांशु सिंह, अमित सिंह,करतार सिंह ,मंत्री यादव, आशीष यादव ,निखिल रावत,दीपक चौरसिया,सहित समिति के पदाधिकारी व सदस्य मौजूद रहे।

नहीं रहे आरएसएस के विन्ध्याचल विभाग संघचालक, प्रखर वक्ता एवं वरिष्ठ अधिवक्ता तिलकधारी

निधन की सूचना मिलते ही संघ विचार परिवार में शोक की लहर

मीरजापुर। संघ के स्तंभ कहे जाने वाले विन्ध्याचल के बावली चौराहा निवासी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विन्ध्याचल विभाग के विभाग संघचालक एवं वरिष्ठ अधिवक्ता तिलकधारी जी का बुधवार को निधन हो गया। बताया जाता है कि लगभग 70 वर्षीय तिलकधारी जी की तबियत बिगड़ने पर परिजनो ने विन्ध्याचल स्थित एक प्राईवेट अस्पताल मे भर्ती कराया था, जहा उनकी हालत नाजुक होने पर उन्हे रेफर कर दिया गया। परिजन मण्डलीय चिकित्सालय पहुचे, जहा उन्होने अंतिम सांस ली। जहा से सायंकाल एम्बुलेंस द्वारा उनके पार्थिव शरीर को उनके आवास पर ले जाया गया। अंतिम संस्कार यात्रा शिवपुर स्थित पटेल धर्मशाला के निकट स्थित उनके नवनिर्मित आवास से आज ही देर शाम निकलेगी। उनके निधन से संघ विचार परिवार एवं अधिवक्ताओ मे शोक की लहर दौड पडी है। बता दे कि अभी गत रविवार, 14 दिसंबर को उन्होंने सकल हिंदू समाज शुक्लहा बस्ती की ओर से भोला गार्डेन अनगढ मे आयोजित विराट हिंदू सम्मेलन को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित किया था। संघ प्रचारको, दायित्वधारी एवं कार्यकर्ताओ ने उनके निधन को संघ परिवार के लिए अपूरणीय क्षति बताया है। विभाग प्रचारक कौशल किशोर, विभाग कार्यवाह सच्चिदानंद, जिला संघचालक चंद्र उपाध्याय, जिला प्रचारक रजत प्रताप, जिला कार्यवाह प्रविंद्र, नगर संघचालक अशोक सोनी, नगर प्रचारक अंजनी, नगर कार्यवाह लखन सहित नगर, जिला, विभाग कार्यकारिणी के कार्यकर्ताओ ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है।

नवयुवक अधिवक्ता समिति का चुनाव कार्यक्रम घोषित

चुनार, मीरजापुर। नव युवक अधिवक्ता समिति के चुनाव का कार्यक्रम बुधवार को इल्डर्स समिति की बैठक में चुनाव तिथि की घोषणा की गई।इल्डर्स समिति के अध्यक्ष सत्येन्द्र नाथ दिवेदी ने बताया कि 18,19,20 दिसंबर को नामांकन पत्रों की बिक्री सुबह 11 बजे से अपराह्न तीन बजे तक और 19 व 20 दिसंबर को नामांकन सुबह 11 बजे से अपराह्न तीन बजे तक किया जाएगा। उसी दिन नामांकन पत्रों की जांच अपराह्न तीन बजे से शाम चार बजे तक किया जाएगा। नामांकन फार्म वापसी 22 दिसंबर को सुबह 11 बजे से अपराह्न तीन बजे तक और सभी पदों के प्रत्याशियों के नाम का प्रकाशन 23 दिसंबर को किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पांच जनवरी को टेंडर और छह जनवरी 2026 को सुबह साढ़े दस से अपराह्न तीन बजे तक मतदान एवं उसके बाद मतों की गणना व परिणाम की घोषणा की जाएगी। इस दौरान इल्डर्स कमेटी में श्याम मुरारी सिंह,नंद किशोर सिंह,कल्लू सिंह, अखिलेश सिंह उपस्थित रहे।

जनपद के सभी केमिस्ट का लिया जाएगा 'डायरिया से डर नहीं' परियोजना में सहयोग

●पीएसआई इंडिया व केनव्यू के सहयोग से चलाया जा रहा कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। शून्य से पांच साल तक के बच्चों को डायरिया से सुरक्षित बनाने को लेकर जनपद में एक अनूठी जन स्वास्थ्य पहल की गयी है। इसके तहत पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल-इंडिया (पीएसआई-इंडिया) और केनव्यू के सहयोग से जनपद में अधिक प्रचार प्रसार एवं आम जनमानस में जागरूकता फैलाने हेतु सभी केमिस्ट संचालकों के साथ बैठक कर डायरिया कार्यक्रम के बारे में केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष वी सचिव सहित सभी संचालकों को विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संतोष पटेल औषधि निरीक्षक ने की। संतोष पटेल ने कहा कि शून्य से पांच साल तक के बच्चों की कुल मौत का एक प्रमुख कारण डायरिया भी है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस पर नियन्त्रण के लिए स्टॉप डायरिया कैम्पेन (डायरिया रोको अभियान) चलाया जा रहा है, जिसे 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम से और बल मिलेगा। दवा विक्रेता समिति मीरजापुर के अध्यक्ष प्रमोद द्विवेदी ने कहा कि इसके तहत समुदाय में जागरूकता को बढ़ावा दिया जाएगा और मेडिकल स्टोर पर आने वाले डायरिया से संबंधित लोगों को व्यवहार परिवर्तन हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि दस्त प्रबन्धन को पूरी तरह प्रभावी बनाया जा सके। 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताते हुए पीएसआई-इंडिया के मैनेजर- प्रोग्राम इंप्लीमेंटेशन विष्णु प्रकाश मिश्रा ने बताया कि डायरिया नियंत्रण की दिशा में केमिस्ट की भूमिका बहुत अहम है, दुकान पर आने वाले डायरिया से संबंधित रोगियों या उनके परिजनों को साफ सफाई, हाथ धुलने का सही तरीका, स्वच्छ जल, स्वच्छ भोजन, स्वच्छ वस्त्र और स्वच्छ वातावरण में ही डायरिया से निजात संभव है। साथ ही कार्यक्रम के बारे में बताया कि जनपद में पी एस आई इण्डिया द्वारा आशा, आंगनबाड़ी, एएनएम और महिला आरोग्य समितियों के सदस्यों को डायरिया के प्रमुख बिदुओं के बारे में प्रशिक्षित करने के साथ ही ओआरएस की महत्ता, शीघ्र स्तनपान और छह माह तक सिर्फ स्तनपान के फायदे के बारे में ट्रेनिंग दी जा रही है। जनपद के मुख्य स्थानों पर दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक डायरिया से बचाव के प्रमुख सन्देश पहुंचाए जायेंगे। 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निजी क्षेत्र के चिकित्सकों और अस्पतालों से सहयोग मांगा जा रहा है। साथ ही अवगत कराया कि डायरिया की शुरुआत में ही पहचान कर ओआरएस का घोल दिया जाए, तो गंभीर स्थिति तक पहुँचने से बच्चे को बचाया जा सकता है। 24 घंटे में यदि तीन बार पतली दस्त आ रही है तो यह डायरिया के लक्षण हो सकते हैं और यह लम्बे समय तक बनी रहे तो यह गंभीर डायरिया का रूप ले सकती है। निजी क्षेत्र में अब लिक्विड के रूप में निर्मित ओआरएस का घोल उपलब्ध है। उन्होंने रोटा वायरस वैक्सीन के बारे में भी जानकारी दी। एफपीसी अर्चना मिश्रा ने कार्यक्रम में सहयोग किया। इस मौके पर दवा विक्रेता समिति मीरजापुर के उप सचिव संजय ठाकुर ने कहा कि डायरिया नियंत्रण की दिशा में पी एस आई इण्डिया ने अच्छी पहल किया है और सभी केमिस्ट संचालकों के तरफ से विश्वास दिलाया कि अपेक्षित सहयोग दिया जाएगा। कार्यक्रम में अजीत कुमारमैनी, राम किशोर त्रिपाठी जिला समन्वयक राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम,महामंत्री पंकज केशरी,, सचिव संजय गुप्त, उपाध्यक्ष सुशील कुमार, कोषाध्यक्ष उमा शंकर केशरी, वी पी सिंह ,शत्रुघ्न जायसवाल,अंशु दुबे,रंजीत मौर्य, विनय जी, राहुलबरनवाल, सुनील कुमार, रवि शंकर, जगदीश्वर सिंह सुजीत जायसवाल,लखन अग्रवाल, रजत कुमार, रीतेश,तेजमणि मौर्या, विजन मुखर्जी, धर्मेन्द्र गुप्ता, संजय जायसवाल, रमेश यादव, राकेश तिवारी धीरज गुप्ता,इमरान खान, मुस्लिम खान, अमन केसरी मधुप,आदि लोग मौजूद रहे।

मीरजापुर , तीन दिवसीय निशुल्क बाल योग संस्कारशाला का भव्य समापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। पतंजलि युवा भारत एवं विंध्य योग सेवा धाम के संयुक्त तत्वाधान में नगर के कजरहवा पोखरा पुलिस लाइन स्थित सेंट जोसेफ स्कूल में चल रहे तीन दिवसीय निशुल्क बाल योग संस्कारशाला के समापन अवसर पर राष्ट्रीय योगासन जज योग गुरु योगी ज्वाला सिंह ने बच्चों को प्राणायाम और का विशेष का अभ्यास कराते हुए उनसे होने वाले लाभ के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। योग गुरु ने बच्चों को भस्त्रिका प्राणायाम का अभ्यास कराते हुए कहा इसका अभ्यास करने से मनुष्य के समस्त कफ रोग सांस रोग दमा रोग अस्थमा रोग जैसी समस्याओं का समाधान होता है और साथ ही उनका अंतः करण पवित्र होता है। इसके साथ ही उन्होंने बच्चों को कपालभाती अनुलोम विलोम उज्जाई भ्रामरी एवं उद्‌गीत आदि प्राणायाम के साथ विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराते हुए उनके लाभ के बारे जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्य महिला केंद्रीय प्रभारी संगीता व्यास ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि पिछले तीन दिनों में जो भी योग प्राणायाम आसन और ध्यान का अभ्यास आप सभी को कराया गया आप उसे सभी से अपनी नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाएं और अपने जीवन को पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं निरोग बनाएं क्योंकि योग ही स्वस्थ जीवन का उपाय है दूसरा कोई नहीं। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रबंधक रतन जॉनसन ने योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहां कि , योग ही जीवन का एक आधार है , जो कि मानव को मानवीय गुणों से परिचित कराते हुए उन्हें मनुजता का बोध करा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने योग गुरुओं को अंगवस्त्र भेंट कर उनका स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जिला प्रभारी युवा भारत प्रवीण मौर्या ने अपने कुशल संचालन में कार्यक्रम को भव्य तरीके से सम्पन्न कराया। योग संस्कारशाला कार्यक्रम में किरण पांडे प्रीति श्रीवास्तव मुकेश मिश्रा ममता यादव डिंपल पाल प्रीति गुप्ता प्रिया श्रीवास्तव सर्वजीत यादव शबाना अख्तर के साथ साथ बच्चों में प्रतीक्षा शिवम दीपांशु भावना शालिनी संस्कृति सास्वत काव्या विधि प्रियल शिवांशी वैष्णवी राजलक्ष्मी अदिति शिवानी वेद आर्यन रितिका संग आदि बच्चों ने समापन सत्र में हिस्सा लिया।

पुलिस महानिरीक्षक विंध्याचल परिक्षेत्र मीरजापुर द्वारा मिशन शक्ति केन्द्र के नोडल अधिकारियों के साथ की गयी समीक्षा गोष्ठी

● मिशन शक्ति केन्द्रों के कार्यो की समीक्षा करते हुए प्राप्त प्रकरणों में त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही करने के दिये गये निर्देश

●मिशन शक्ति केन्द्रों का शासन द्वारा जारी एसओपी के आधार पर प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिये गए आवश्यक निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। बुधवार को पुलिस महानिरीक्षक विंध्याचल परिक्षेत्र मीरजापुर 'आर.पी.सिंह' द्वारा परिक्षेत्रीय कार्यालय मीरजापुर में परिक्षेत्र के जनपदों के मिशन शक्ति केन्द्र के नोडल अधिकारियों के साथ मिशन शक्ति केन्द्र के कार्यों की समीक्षा करते हुए प्रत्येक थानों पर स्थापित मिशन शक्ति केन्द्र के मूल उद्देश्य तथा मिशन शक्ति केन्द्र द्वारा किये जाने वाले कार्यों एवं पुलिस महानिदेशक उ0प्र0 द्वारा जारी एस0ओ0पी0 में दिये गये निर्देशों पर विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए भलि-भाँति निर्देशित किया गया। साथ ही उनके कार्य के दौरान आने वाले समस्याओं, कठिनाईयो के बारे में पूछा गया। मिशन शक्ति केन्द्र के स्थापना के मूल उद्देश्य को जन-जन तक पहुँचाये जाने हेतु शहरी क्षेत्र के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र, स्कूल,कालेज,पंचायत भवन तथा माह में थानों पर 02 बार आयोजित होने वाले समाधान दिवस के अवसर पर थाने पर उपस्थित लोगो को जागरूक किये जाने के सम्बन्ध में बताया गया तथा निर्देशित किया गया कि मिशन शक्ति केन्द्र का एस0ओ0पी0 के अनुसार क्रियान्वयन हेतु मिशन शक्ति केन्द्र के प्रभारियों के साथ बैठक कर उनके कार्यों की समीक्षा कर ले साथ ही महिला सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन हेतु चलाए जा रहे 'मिशन शक्ति अभियान फेज-5.0 के तहत महिला बीट आरक्षी/एंटी रोमियों पुलिस टीम सहित अन्य विभाग से समन्वय स्थापित करके शासन द्वारा चलायी जा रही विभिन्न लाभकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करें तथा क्षेत्र में भ्रमण कर प्रमुख चौराहों, कस्बों, बाजारों, मन्दिर, शापिंग मॉल, भीड़भाड़ वाले इलाकों, स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों, रेलवे स्टेशन, रोडवेज सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों व गांवों में जाकर बालिकाओं, छात्राओं एवं महिलाओं को जागरूक करने के निर्देश दिए गए तथा मिशन शक्ति केन्द्र में पायी गई कमियों में गुणात्मक सुधार लाये जाने के उद्देश्य से जनपदों में कार्यशाला का आयोजन करने हेतु निर्देशित किया गया।

चोपन लाइन के चल रहे दोहरीकरण कार्य का जी एम ने किया निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चुनार, मीरजापुर। बुधवार को जीएम उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मण्डल नरेश पाल सिंह ने दोपहर के 1.28 बजे चुनार रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नम्बर चार पर पहुंचे उन्होंने चोपन लाईन मे चल रहे दोहरीकरण कार्य का निरीक्षण करने के बाद अपने निजी सैलून परख से प्लेट फार्म पर उतरने के बाद सर्वप्रथम डीएफसीसी लाइन को देखा और मातहतों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। तत्पश्चात प्लेट फार्मो की साफ सफाई को देखा। यात्रियों की सुविधा के लिए पूर्वी छोर पर प्रस्तावित फूट ओवर बृज के लिए स्थान को चिन्हित किया जो पूर्व मे रहे फूट ओवर बृज से लगभग दस मीटर दूरी पर है। निर्माण कार्य समय से कराने के लिए निर्देश दिया।स्टेशन पर पहुंचे नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य राकेश श्रीवास्तव द्वारा प्लेट फार्मो पर यात्रियों की सुविधा के लिए शौचालय व पीने योग्य पानी की सुविधा के मांग पर उन्होंने तत्काल अधिनस्थ अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्लेट फार्मो पर साफ सफाई व शौचालय की व्यवस्था तत्काल सुनिश्चित करें। प्रमुख ट्रेनों के ठहराव की मांग पर उन्होंने कहा कि जो मुझसे संभव है अवश्य करूंगा जो नहीं होने लायक है उसे रेलवे बोर्ड के समक्ष रखने का प्रयास करुंगा।निरीक्षण के संबन्ध मे पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि डीएफसीसी लाईन पर गाड़ियां काफी धीमी गति से आती जाती है उस लाइन को डायरेक्ट जुड जाने से ट्रेनों का रफ्तार तेज़ हो जायेगा और गाड़ियों का संचालन भी बढ़ जायेगा।इसी सम्बन्ध में चोपन लाईन से जोड़ने के संबंध में निरीक्षण किया गया। इस दौरान डीआरएम रजनीश अग्रवाल, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबन्धक शरद चन्द्रायन,प्रमुख मुख्य इंजीनियर उत्तर मध्य रेलवे जे सी चौरसिया,मुख्य इंजीनियर निर्माण एस के गुप्ता,पीआरओ प्रयागराज मण्डल अमित कुमार, जीआरपी प्रभारी रमाशंकर, आरपीएफ प्रभारी आर पी राणा, स्टेशन अधीक्षक मेजर सिन्हा सहित अन्य रेलवे के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

पेंशनरों की समस्याओं के समाधान को लेकर आयोजित हुआ पेंशनर दिवस, डीएम ने दिए त्वरित निस्तारण के निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। जिलाधिकारी शैलेष कुमार की अध्यक्षता में कोषागार कार्यालय में पेंशनर दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजेश सिंह संयोजक के रूप में मौजूद रहे। बैठक में जनपद के विभिन्न विभागों के कार्यालयाध्यक्ष, प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में सम्मानित पेंशनर उपस्थित रहे। पेंशनर दिवस में बेसिक शिक्षा परिषद, माध्यमिक शिक्षा परिषद, पेंशनर्स वेलफेयर संस्था, सिविल पेंशनर्स संघ, विद्युत पेंशनर्स संघ सहित अन्य विभागीय पेंशनर संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बेसिक शिक्षक संघ के नेता कल्लू राम यादव ने सर्वप्रथम जिलाधिकारी को गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित किया। बैठक के दौरान पेंशनर संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्याओं और सुझावों को जिलाधिकारी के समक्ष रखा। शिक्षा विभाग के पेंशनरों के पेंशन प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण को लेकर जिलाधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक, बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं लेखाधिकारी को आपसी समन्वय स्थापित कर समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उपस्थित सक्षम अधिकारियों ने भी पेंशनरों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजेश सिंह ने किया। बैठक में कल्लू राम यादव, रामबली मौर्य, प्रभा शंकर मिश्र, विजय नाथ द्विवेदी, लालमणि शुक्ल, राजकुमार पाठक, रमा शंकर मिश्र, वरिष्ठ लेखाकार अजय सिंह, मथुरा राम यादव, प्रशांत, घनश्याम सहित अनेक पेंशन पदाधिकारी व विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने 85 वर्ष से अधिक आयु के उपस्थित पेंशनरों को शॉल पहनाकर सम्मानित किया। अंत में वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजेश सिंह ने सभी सम्मानित पेंशनरों एवं उपस्थितजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री के वादे साबित हो रहे खोखले, विधानसभा सत्र में सरकार से पूछेंगे सवाल : जाहिद बेग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। समाजवादी पार्टी के विधायक जाहिद बेग ने किसानों, मजदूरों और आम जनता से जुड़े मुद्दों पर प्रदेश सरकार को घेरते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के वादे धरातल पर उतरते नजर नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि 19 दिसंबर से शुरू होने वाले विधानसभा सत्र में सरकार से इन सभी मुद्दों पर जवाब मांगा जाएगा। बुधवार को नगर के मलिकाना मोहल्ला स्थित अपने आवास पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए विधायक जाहिद बेग ने कहा कि किसान खाद के लिए भटक रहे हैं। एडवांस पैसा जमा करने के बावजूद उन्हें खाद नहीं मिल पा रही है और कई जगह किसानों को लाठियां तक खानी पड़ रही हैं। पहले बिना रजिस्ट्रेशन खाद मिल जाती थी, लेकिन अब रजिस्ट्रेशन के नाम पर प्रति किसान 230 रुपये वसूले जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि 50 किलो की बोरी में 45 किलो खाद दी जा रही है। विधायक ने 132 की जमीनों पर बसे लोगों को बिना वैकल्पिक व्यवस्था किए हटाए जाने पर भी आपत्ति जताई। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में लोगों को बेघर किया जा रहा है, जबकि विस्थापन से पहले पुनर्वास की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए। उन्होंने सरकार पर महापुरुषों के नाम खत्म करने का आरोप लगाते हुए कहा कि पहले शहरों के नाम बदले गए और अब मनरेगा जैसी महत्वपूर्ण योजना का नाम बदलने की बात की जा रही है। मनरेगा में 100 दिन के रोजगार का वादा पूरा नहीं हो पा रहा है, मजदूरों को समय पर भुगतान नहीं मिल रहा और पुराने भुगतान भी लंबित हैं। बिजली के निजीकरण और स्मार्ट मीटर को लेकर विधायक ने कहा कि इसके कारण गरीब, मजदूर और किसान फर्जी व बढ़े हुए बिजली बिल से परेशान हैं। उन्होंने स्मार्ट मीटर हटाने की मांग की। साथ ही एसआईआर के स्थान पर चुनाव समरी कराए जाने और इसे आधार कार्ड से जोड़ने की मांग भी की। स्वास्थ्य सेवाओं पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि इलाज के अभाव में किसी की मौत न होने का मुख्यमंत्री का वादा भी अधूरा है। आर्थिक सहायता के मामले दो-दो महीने से लंबित हैं और जरूरतमंदों को केवल 20 से 30 प्रतिशत सहायता ही मिल पा रही है। कालीन उद्योग को लेकर किए गए वादों पर भी उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि 50 फीसदी टैरिफ के बाद सहायता की घोषणा हुई, लेकिन आज तक उद्योग को कोई राहत नहीं मिली। इस दौरान सपा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शोभनाथ यादव, जावेद अंसारी, मनोज यादव सहित अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अवैध लेआउट पर चला बुलडोजर, बिना स्वीकृति निर्माण पर बीडा ने दी चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। भदोही औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने अनाधिकृत भू-विन्यास (लेआउट) विकसित करने वालों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए मौजा रेवड़ापरसपुर में करीब तीन बीघा क्षेत्र में विकसित अवैध लेआउट को ध्वस्त करा दिया। यह कार्रवाई जिलाधिकारी भदोही एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बीडा शैलेष कुमार के निर्देश पर की गई। कार्यालय मुख्य कार्यपालक अधिकारी बीडा द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार रामसागर राय व करुणा सागर राय द्वारा गाटा संख्या 124 व 243 पर बिना स्वीकृत मानचित्र के भू-विन्यास विकसित किया गया था। प्राधिकरण ने उ.प्र. औद्योगिक क्षेत्र विकास अधिनियम 1976 की धारा 9 व 10 के अंतर्गत कारण बताओ नोटिस जारी कर विकास कार्य रोकने के आदेश दिए तथा सुनवाई का पूरा अवसर भी प्रदान किया, इसके बावजूद लेआउट को स्वीकृति नहीं कराई गई। इसके बाद उप जिलाधिकारी भदोही बरखा सिंह के नेतृत्व में प्राधिकरण के अधिकारियों व कर्मचारियों की मौजूदगी में प्रशासनिक सहयोग से अवैध निर्माण के विरुद्ध ध्वस्तीकरण की कार्रवाई सफलतापूर्वक संपन्न कराई गई। इस अवसर पर जिलाधिकारी/मुख्य कार्यपालक अधिकारी बीडा ने जनसामान्य से अपील की कि बीडा प्राधिकरण से बिना मानचित्र स्वीकृत कराए कोई भी निर्माण न करें तथा किसी भी लेआउट में भूखंड क्रय करने से पूर्व उसकी स्वीकृति की जानकारी अवश्य प्राप्त करें। साथ ही जिन लोगों ने बिना मानचित्र स्वीकृति के निर्माण कर लिया है, वे शीघ्र ही उसे प्राधिकरण से विनियमित कराएं। प्राधिकरण ने स्पष्ट किया है कि बीडा क्षेत्र में अवैध निर्माण के विरुद्ध ध्वस्तीकरण की कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी।

आयुष्मान कार्ड बनाए जाने की प्रगति की जिलाधिकारी ने की समीक्षा

●आयुष्मान कार्ड की प्रगति असंतोषजनक पाए जाने पर एसीएमओ रामपाल यादव व शैलेंद्र डिस्ट्रिक्ट ग्रेवांस मैनेजर का वेतन रोकने का निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही- जिलाधिकारी शैलेष कुमार द्वारा आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक आयु के पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाए जाने की प्रगति की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान यह पाया गया कि संबंधित अधिकारियों द्वारा बार-बार निर्देश दिए जाने के बावजूद अपेक्षित प्रगति नहीं की गई है। प्रगति असंतोषजनक पाए जाने के कारण एडिशनल मुख्य चिकित्सा अधिकारी रामपाल यादव तथा शैलेंद्र डिस्ट्रिक्ट ग्रेवांस मैनेजर के कार्य के प्रति घोर लापरवाही एवं शिथिलता को गंभीरता से लेते हुए वेतन आहरण पर रोक लगाए जाने के निर्देश दिए गए हैं। जिलाधिकारी द्वारा स्पष्ट किया गया है कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही, उदासीनता अथवा विलंब कदापि स्वीकार्य नहीं है। भविष्य में यदि कार्य प्रगति में अपेक्षित सुधार नहीं पाया गया तो संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध और भी कठोर विभागीय कार्यवाही की जाएगी। साथ ही यह भी निर्देशित किया गया है कि जनपद के समस्त संबंधित अधिकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पूर्ण संवेदनशीलता, तत्परता एवं जवाबदेही के साथ कार्य करें, ताकि कोई भी पात्र नागरिक योजना के लाभ से वंचित न रहे।

संक्षिप्त खबरें

महर्षि मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ उद्घाटन

नैनी, प्रयागराज बुधवार को महर्षि मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव और बसंत दास द्वारा किया गया। आश्रम प्रभारी बसंत दास, सुनील श्रीवास्तव ने बताया महर्षि महेश योगी आश्रम के अध्यक्ष डॉक्टर गिरीश वर्मा के निर्देशन में बुधवार से मैच का कार्यक्रम लगातार 30, 12 ,2000 25 तक चलेगा। फाइनल मैच तक क्रिकेटरों के द्वारा खेला जाएगा। आज का मैच टॉस के माध्यम से किया। जिसमें प्रथम प्रयागराज एवं उत्कल के बीच में मैच खेला जा रहा है। जिसके कप्तान अनिल शर्मा एवं उत्कर्ष उत्कल के कप्तान अनूप चौबे के बीच में आज मैच खेला गया। इस अवसर पर ऋषि त्रिवेदी, सोनू पांडे, प्रशांत दास, काशी क्षेत्र के उपाध्यक्ष सरदार पदविंदर सिंह, कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख संजय श्रीवास्तव, सचिन रिछारिया अनुराग दुबे, अनूप चौबे, संजीव, सनल, अजय पांडा, राजेश पांडे, एवं सामाजिक कार्यकर्ता शाहनवाज खान, पार्षद मयंक यादव उत्साहवर्धन के लिए मौजूद थे।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने पूर्व महापौर का जन्मदिन धूमधाम से मनाया

नैनी, प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी नैनी मंडल के द्वारा बुधवार को चाका क्षेत्र के चुंगी चौराहे पर पार्षद अनुप भारतीय के नेतृत्व में पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने केक काटकर के एक दूसरे को खिलाया। इस मौके पर मिठाई का भी वितरण किया गया।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नैनी मंडल अध्यक्ष रजत दुबे, पूर्व मंडल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी, पूर्व युवा मोर्चा अध्यक्ष नरसिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।समारोह का संचालन भाजपा के वरिष्ठ नेता घनश्याम जायसवाल ने किया। कार्यक्रम में कुंदन सिंह,मनीष कुशवाहा, प्रहलाद सिंह तोमर, मोहम्मद यीशु, ताज खान, नरेंद्र भारतीय, लालमनी मिश्रा, अंकित गुप्ता, तमाम क्षेत्र के व्यापारी नागरिक उपस्थित थे।

महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम से संबंधित विषय पर कार्यशाला आयोजित

ब्यूरो प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय में रेलवे बोर्ड की जारी पत्र के अनुसार दिनाँक 10.12.2025 से 17.12.2025 तक सेक्सुअल हैरेसमेंट प्रिवेंशन वीक के अन्तर्गत दिनांक 17.12.2025 को सायंकाल 15:00 बजे से कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम से संबंधित विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. मंजू लता हाण्डू अपर मुख्य स्वास्थ्य निदेशक, डॉ. साधना श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय एवं श्रीमति गरिमा त्रिपाठी, उप मुख्य वित्त सलाहकार मुख्यालय प्रयागराज के द्वारा व्यख्यान दिया गया। डॉ. मंजू लता हाण्डू के द्वारा कर्मचारियों को POSH Act 2013 के संबंध में अवगत एवं जागरूक कराया गया ढ्ढ विशाखा समिति की गाइड लाइन से भी कर्मचारियों को अवगत कराया गया। इस अवसर पर इस संगोष्ठी में उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय के सभी विभागों से महिला रेलकर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

हरियाणा एसटीएफ द्वारा बैंक खातों का दुरुपयोग मामले में छापेमारी, अंतरराज्यीय नेटवर्क का खुलासा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। कौंधियारा थाना क्षेत्र के गिधौरा गांव में गरीब ग्रामीणों के बैंक खातों के दुरुपयोग से जुड़ा एक अंतरराज्यीय मामला सामने आया है।इस गंभीर प्रकरण की जांच के लिए देर रात हरियाणा की एसटीएफ टीम गिधौरा गांव पहुंची।टीम ने मुख्य आरोपी उदित पांडेय उर्फ कान्हा के परिजनों से गहन पूछताछ की। एसटीएफ ने आरोपी की गतिविधियों, संपर्कों, बैंक लेनदेन और नेटवर्क से संबंधित अहम जानकारियां जुटाने की कोशिश की।

हालांकि,ग्रामीणों के अनुसार मुकदमा दर्ज होने के बाद से ही सभी नामजद आरोपी फरार चल रहे हैं।आवश्यक सूचनाओं के अभाव में एसटीएफ टीम को निराश होकर वापस लौटना पड़ा। पीड़ित महिलाओं का आरोप है कि मुकदमा दर्ज होने के बावजूद कौंधियारा पुलिस ने अब तक जांच के नाम पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। गिधौरा गांव में वर्षों से एक संगठित गिरोह सक्रिय था,जो गरीब महिलाओं और ग्रामीणों को बहला-फुसलाकर उनके नाम से बैंक खाते खुलवाता था। इसके बाद गिरोह उनके एटीएम कार्ड, पासबुक और सिम कार्ड अपने कब्जे में लेकर इन खातों के माध्यम से संदिग्ध लेनदेन करता था।आरोप हैकि इन खातों का उपयोग अंतरराष्ट्रीय हवाला और बड़ी मात्रा में धनराशि की फंडिंग के लिए किया गया।ग्रामीणों ने बताया कि जब खाते सीज हो जाते थे,तब पीड़ितों को मामूली रकम देकर चुप करा दिया जाता था।विरोध करने पर उन्हें धमकियां भी दी जाती थी।इस पूरे नेटवर्क में करछना स्थित इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के एक कर्मचारी की संदिग्ध भूमिका पहले ही सामने आ चुकी है,लेकिन उसके खिलाफ अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। गौरा गांव स्थित आसपास के अन्य गांवों के ग्रामीणों का कहना है कि पुलिस की ढिलाई और उदासीनता के चलते उनका पुलिस-प्रशासन से विश्वास लगातार कम होता जा रहा है।पीड़ित महिलाओं ने चेतावनी दी है, कि यदि जल्द ही निष्पक्ष जांच कर आरोपितों की गिरफ्तारी नहीं की गई,तो वह मुख्यमंत्री आवास जाकर अपनी फरियाद रखने को विवश होगी।लोग इस मामले में उच्चस्तरीय जांच और त्वरित कार्रवाई करने की मांग कर रहे हैं।

UP बोर्ड इंटरमीडिएट प्रयोगात्मक परीक्षा 2026 का शेड्यूल जारी, दो चरणों में होंगी परीक्षाएं

24 जनवरी से 9 फरवरी तक आयोजन, 29-30 जनवरी को UPTET के चलते रहेगा अवकाश।

ब्यूरो प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (UP बोर्ड) ने वर्ष 2026 की इंटरमीडिएट प्रयोगात्मक परीक्षाओं का कार्यक्रम जारी कर दिया है। इस वर्ष प्रयोगात्मक परीक्षाएं दो चरणों में आयोजित की जाएंगी। पहले चरण में 24 जनवरी 2026 से 1 फरवरी 2026 तक 10 मंडलों में प्रयोगात्मक परीक्षाएं कराई जाएंगी। इनमें आगरा, सहारनपुर, बरेली, लखनऊ, झांसी, चित्रकूट, अयोध्या, आजमगढ़, देवीपाटन और बस्ती मंडल शामिल हैं।परिषद के सचिव भगवती सिंह ने बताया कि 29 और 30 जनवरी 2026 को प्रयोगात्मक परीक्षाएं नहीं होंगी। इन दोनों दिनों में यूपीटीईटी की लिखित परीक्षा आयोजित होने के कारण विद्यालयों में शैक्षिक अवकाश रहेगा। दूसरे चरण की प्रयोगात्मक परीक्षाएं 2 फरवरी से 9 फरवरी 2026 के बीच संपन्न कराई जाएंगी। इस चरण में अलीगढ़, मेरठ, मुरादाबाद, कानपुर, प्रयागराज, मिर्जापुर, वाराणसी और गोरखपुर मंडल के विद्यालय शामिल होंगे। यूपी बोर्ड के सचिव भगवती सिंह ने विज्ञप्ति जारी कर संबंधित अधिकारियों एवं विद्यालयों को दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं।

सीधटिकट गांव में 5 वर्षों से नहीं खुला शौचालय का ताला, ग्रामीणों ने उठाई आवाज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। बारा अंतर्गत विकासखंड शंकरगढ़ क्षेत्र के सीधटिकट गांव में वर्ष 2020 में 7 लाख रुपए की लागत से निर्मित सामुदायिक शौचालय आज तक चालू नहीं हो सका है।सरकारी अभिलेखों में इसे संचालित दिखाया गया है,जबकि हकीकत में इसका ताला 5 साल से नहीं खुला है।ग्रामीणों का कहना है, कि शौचालय बंद होने के कारण महिलाएं,बुजुर्ग और बच्चे खुले में शौच जाने को मजबूर हैं।इससे उनकी गरिमा और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।ग्रामीणों के अनुसार, शौचालय में नियमित सफाई नहीं होती है,और ना ही पानी की व्यवस्था है।नल लगे होने के बावजूद उसमें से पानी नहीं आता। इस संबंध में ग्राम प्रधान सूरज सिंह ने बताया कि शौचालय की चाबी सफाईकर्मी जल्लाधी धरिकार को सौंपी गई है। उन्होंने कहा, कि शौचालय खोलने और साफ-सफाई सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी उसी की है।हालांकि, ग्रामीणों का दावा इससे भिन्न है। इंद्रदेव सिंह, गौतम सिंह, नरेंद्र, बनवारी, विकास और राकेश सिंह सहित कई अन्य ग्रामीणों ने बताया कि आज तक शौचालय का ताला खुलते देखा ही नहीं गया।उनका आरोप है कि सफाईकर्मी कभी-कभार ही गांव में दिखते हैं,और शौचालय के संचालन को लेकर कोई गंभीरता नहीं दिखाते।

ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया है कि लाखों रुपए की लागत से बने इस शौचालय की हालत दिनबदिन बिगड़ती जा रही है। देखरेख के अभाव में भवन जर्जर हो रहा है, जिससे सरकारी धन की बर्बादी हो रही है।ग्रामीणों ने जिला प्रशासन और स्वच्छ भारत मिशन से इस मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने यह भी मांग की है,कि शौचालय को तत्काल खोला जाए,नियमित सफाई और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए,ताकि ग्रामीणों को खुले में शौच से मुक्ति मिल सके।

माघ मेला 2026 की तैयारी में बाधा

● पांटून पुल नंबर-2 का काम ठप, मारपीट का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। माघ मेला 2026 की तैयारियों के बीच मेला क्षेत्र में एक विवाद सामने आया है। सेक्टर-दो स्थित त्रिवेणी रोड पर पांटून पुल नंबर-2 के निर्माण कार्य के दौरान माघ मेला प्राधिकरण के एक कर्मचारी और जेसीबी ऑपरेटर के बीच विवाद हो गया, जिसके बाद निर्माण कार्य पूरी तरह ठप हो गया।जानकारी के अनुसार, पांटून पुल के निर्माण के दौरान किसी बात को लेकर कहासुनी शुरू हुई, जो देखते ही देखते गाली-गलौज और मारपीट में बदल गई। जेसीबी ऑपरेटर का आरोप है कि माघ मेला प्राधिकरण के कर्मचारी ने उसके साथ अभद्रता करते हुए हाथापाई की। घटना से आक्रोशित जेसीबी ऑपरेटर ने विरोध स्वरूप पांटून पुल नंबर- 2 के सामने सड़क पर गड्ढा कर दिया और अपनी जेसीबी मशीन व ट्रैक्टर मौके पर ही खड़े कर दिए। इससे पुल से जुड़ा निर्माण कार्य पूरी तरह बाधित हो गया। घटना की सूचना मिलने पर माघ मेला प्राधिकरण के अधिकारी मौके पर पहुंचे और स्थिति को संभालने का प्रयास किया। इस घटना से माघ मेला 2026 की तैयारियों पर असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है। जेसीबी ऑपरेटर ने संबंधित अधिकारियों से शिकायत कर दोषी कर्मचारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल मेला प्राधिकरण की ओर से कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है, जबकि प्रशासनिक स्तर पर मामले की जांच की तैयारी की जा रही है।उल्लेखनीय है कि माघ मेला 2026 को लेकर प्रशासन पहले से ही सतर्क है, ऐसे में निर्माण कार्य के दौरान इस तरह के विवाद व्यवस्थाओं पर सवाल खड़े कर रहे हैं।

हण्डिया पुलिस टीम द्वारा 01 वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

ब्यूरो प्रयागराज। थाना हण्डिया पर पंजीकृत मु0अ0सं0-689/25 धारा-137(2) भा0न्या0सं0 से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त बाबू लाल पुत्र स्व0 राजेन्द्र प्रसाद निवासी ग्राम सुधवै थाना ऊंच जनपद भदोही को थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक-17.12.2025 को जनपद मिर्जापुर के थाना चील्ह क्षेत्रान्तर्गत ग्राम चील्ह तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया। मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित अपहृता/पीड़िता को सकुशल बरामद किया गया तथा साक्ष्य संकलन एवं पीड़िता के बयान के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा-87/64(2) भा0न्या0सं0 व 5/6 पॉक्सो एक्ट की बढ़ोत्तरी कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

करछना की रामकथा में उमड़ा भक्ति का सागर

● जानकी विदाई पर रो पड़ी मिथिला। वाणी और क्रोध पर संयम का दिव्य संदेश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

करछना, प्रयागराज। हिंदूपुर करछना में मिश्रा परिवार द्वारा आयोजित श्रीराम कथा के चौथे दिन पांडाल भक्ति, भाव और आस्था से सराबोर हो उठा। कथा वाचिका पूज्या शास्त्री शाकाम्भरी द्विवेदी मानस मंजरी ने भगवान परशुराम जी के जनकपुरी आगमन से लेकर श्री सीताराम विवाह की अनुपम कथा का ऐसा सजीव वर्णन किया कि श्रोता मानो स्वयं मिथिला के आंगन में उपस्थित हो गए। जैसे ही शिवधनुष भंग का प्रसंग आया, पांडाल 'जय श्रीराम' के जयकारों से गूंज उठा। भजनों की मधुर धुनों पर भक्त झूम उठे और हर दिशा में भक्ति के रंग बिखर गए। शास्त्री जी ने भावविभोर स्वर में वर्णन किया कि किस प्रकार अयोध्या से बाजे-गाजे के साथ श्रीराम की बारात मिथिला पहुंची—नगर सजा, हृदय सजे, और देव- मानव सभी आनंदित हो उठे। मांडवी संग भरत, उर्मिला संग लक्ष्मण और श्रुतकीर्ति संग शत्रुघ्न के विवाह प्रसंगों ने कथा को पूर्णता दी। जब जानकी जी की विदाई का क्षण आया, तो पांडाल में सन्नाटा छा गया। श्रद्धालुओं की आंखों से अश्रुधारा बह निकली—मानो अपनी ही बेटी की विदाई देख रहे हों।

शास्त्री शाकाम्भरी द्विवेदी ने बताया कि उस समय केवल मिथिला वासी ही नहीं, पशु-पक्षी तक विलाप करने लगे; जनकनंदिनी की विदाई ने समूची मिथिला को करुणा में डुबो दिया। कथा के बीच शास्त्री जी ने परशुराम-लक्ष्मण संवाद का विस्तार से वर्णन करते हुए जीवन का अमूल्य संदेश दिया। शिवधनुष भंग के पश्चात भगवान परशुराम के क्रोध से भरे मिथिला आगमन का प्रसंग सुनाते हुए उन्होंने समझाया कि क्रोध पर नियंत्रण और मधुर वाणी ही सच्ची शक्ति है—जो काम तलवार

नहीं कर पाती, वह काम वाणी कर देती है। श्रीराम का संयम और लक्ष्मण की विनोदपूर्ण वाणी, दोनों मिलकर धर्म का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इस भक्तिरस से ओतप्रोत संध्या में मुख्य यजमान उमेश मिश्रा, गौरव मिश्रा, सौरभ मिश्रा, छैल बिहारी दास मानस केसरी, शिवम द्विवेदी सहित भारी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे। संपूर्ण पांडाल में भक्ति की ऐसी अविरल धारा बही कि करछना की यह रामकथा श्रद्धा, संस्कार और सद्भाव का अमिट संदेश छोड़ गई।

मुख्यमंत्री निर्देश पर माघ मेले की तैयारियाँ जोरों पर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। संगम नगरी प्रयागराज में सर्दी ने अपना पूरा असर दिखाना शुरू कर दिया है। तापमान में लगातार गिरावट और सुबह-शाम छाए घने कोहरे के कारण आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। संगम क्षेत्र, मेला परिसर और प्रमुख मार्ग ठंड की चपेट में हैं, जिससे आवाजाही पर भी असर देखने को मिल रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्पष्ट निर्देशों के अनुपालन में जिला प्रशासन, मेला प्रशासन और संबंधित विभाग पूरी सक्रियता के साथ कार्य में जुटे हुए हैं। संगम तट पर मेला क्षेत्र का विस्तार,टेंट सिटी का निर्माण, घाटों का सुदृढ़ीकरण, बिजली और पेयजल आपूर्ति, साफ- सफाई, शौचालय, स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षा व्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से मजबूत किया जा रहा है। प्रशासन द्वारा कल्पवासियों और श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। ठंड को देखते हुए मेला क्षेत्र में अलाव, रैन बसेरों, चिकित्सा शिविरों और एम्बुलेंस सेवाओं की संख्या बढ़ाई जा रही है। आपात स्थिति से निपटने के लिए पुलिस, एनडीआरएफ और अन्य सुरक्षा एजेंसियों की तैनाती की योजना पर भी कार्य चल रहा है।

यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए मेला क्षेत्र और शहर में

अलग-अलग ट्रैफिक प्लान तैयार किया जा रहा है। प्रमुख स्नान पर्वों को ध्यान में रखते हुए भीड़ नियंत्रण, सीसीटीवी निगरानी और कंट्रोल रूम को और प्रभावी बनाया जा रहा है।

संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता की मौत, मायके वालों का विरोध, पुलिस जांच में जुटी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। थाना बारा क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत सीध-टिकट के मजरा पंडित का पूरा में बीती देर रात एक 32 वर्षीया विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई।अचानक हुई इस घटना ने न केवल ससुराल पक्ष,बल्कि मायके वालों को भी गहरे सदमे में डाल दिया है।मृतका के पीछे दो मासूम बेटियां भी हैं।उसकी पहचान सविता पाल के रूप में हुई है,जिनका मायका कौंधियारा थाना क्षेत्र के मझियारी गांव में है। सविता के पिता शोभा पाल माझियारी गांव में रहते हैं। सविता का विवाह बारा थाना क्षेत्र के सीध टिकट, मजरा पंडित का पुरवा निवासी संतोष पाल पुत्र मनीलाल पाल से हुआ था। दंपति की दो बेटियां हैं- (सृष्टि 5वर्ष)और शान्वी(3वर्ष)। मायके वालों का आरोप है कि सविता बीते 4 महीना से अपने मायके रह रही थी, और करीब 10 दिन पहले ही वह ससुराल आई थी। मंगलवार को ससुराल पक्ष की ओर से मायके में फोन कर सिर्फ इतना कहा गया कि, अचानक सविता की तबीयत बिगड़ गई है।इसके बाद ससुराल वालों से कोई संपर्क नहीं हो पाया और कुछ ही देर बाद सविता के मौत की सूचना मिली।जिससे मायके में कोहराम मच गया। घटना की जानकारी मिलते ही डायल 112 पुलिस टीम पहुंची और प्रारंभिक जांच में जुट गई। पुलिस के मुताबिक, सविता को गंभीर हालत में इलाज के लिए स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय, प्रयागराज ले जाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। देर रात तक घटनास्थल पर मायके पक्ष के लोग नहीं पहुंच पाए थे। थाना प्रभारी बारा विनोद सोनकर ने बताया कि सबको पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। उन्होंने कहा यदि मायके पक्ष की ओर से कोई लिखित तहरीर प्राप्त होती है, तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।फिलहाल, मौत के कारणों की स्थिति अभी स्पष्ट नहीं है।

भाजपा का बैनर फाड़ने से मना करने से युवक पर असलहे से फायर, मुकदमा दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। भाजपा का बैनर फाड़े जाने तथा बैनरों को फाड़ने से मना करने से मनबढ़ों ने युवक पर प्राणघातक हमला कर घायल कर दिया परिजन तुरंत सीएचसी ले गए जहाँ पर इलाज जारी है। अनुपम सिंह निवासी पुरवा ने तहरीर देते हुए बताया कि वह भाजपा कार्यकर्ता है पार्टी के बैनर ढेढेमऊ गांव में लगे हुए थे शाम को गोलू ब्लैक गाजी,दानिश और कामिल तथा आधा दर्जन अज्ञात लोग दबंगई के बल पर भाजपा के लगे हुए बैनर फाड़ने लगे जिसका अनुपम ने विरोध किया।तभी गोलू ब्लैक ने गालियां देते हुए जान से मारने की नियत से अवैध असलहे से दो फायर कर दिए गोली अनुपम के बगल से निकल गई तो गोलू व अन्य ने लात-घूंसों और असलहे के बट से बुरी तरह मारने पीटने लगे जिससे अनुपम का सिर फट गया और काफी गम्भीर चोटे आयी है।उन्होंने कहा ढेढेमऊ प्रधान को मारा था अबकी तुमको नहीं छोड़ेंगे और वहां खड़े पिंटू सिंह से कहा अगर कही तुमने गवाही दिया तो तुमको भी जान से मार देंगे और पुलिस से शिकायत किया तो जान से मार डालेंगे तुम्हारे पार्टी वाले हमारा कुछ नहीं कर पाएंगे।गोलू ब्लैक सहित अन्य काफी दबंग व गुण्डा किस्म के आपराधिक छवि के है और नवीनगर के प्रधान जमशेद और सत्तार गद्दी के संरक्षण पर अपराधिक कृत्य करते है। इंस्पेक्टर सुरेंद्र सिंह भाटी ने बताया पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है आरोपियों की तलाश जारी है सख्त कार्यवाही की जाएगी।

गेहूं की बुआई ठप, ज्ञानपुर पम्प कैनाल में पानी छोड़ने को लेकर किसानों का प्रदर्शन

भदोही। सीतामढ़ी डीघ ब्लॉक क्षेत्र के महादेवा गांव में किसानों ने सिंचाई संकट को लेकर नहर विभाग के खिलाफ प्रदर्शन किया। किसानों की मांग है कि ज्ञानपुर पम्प कैनाल में शीघ्र पानी छोड़ा जाए, ताकि गेहूं की बुआई समय पर पूरी हो सके। प्रदर्शन के दौरान समाजसेवी लालू यादव ने कहा कि इस समय रबी सीजन की सबसे महत्वपूर्ण फसल गेहूं की बुआई चल रही है, लेकिन नहरों में पानी न होने से किसानों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। समय पर सिंचाई न होने से फसल प्रभावित होने का खतरा बढ़ गया है, जिससे किसानों में आक्रोश है। किसानों ने नहर विभाग से जल्द से जल्द कैनाल में पानी छोड़ने की मांग करते हुए चेतावनी दी कि यदि समस्या का समाधान शीघ्र नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। इस मौके पर राम गिरि, लवलेश यादव, सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

सीडीओ ने निर्माणाधीन कार्यो, सीएम डैश बोर्ड व आधार अनुश्रवण समिति की समीक्षा की

● सीएम डैश बोर्ड पर योजनाओं का नियमित रूप से पर्यवेक्षण करते हुए प्रगति में सुधार लाये-सीडीओ

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा की अध्यक्षता विकास भवन सभागार में जनपद में निर्माणाधीन कार्यो, सीएम डैश बोर्ड पर प्रदर्शित विकास कार्या व आधार अनुश्रवण समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में शिक्षा विभाग से सम्बन्धित विकास खण्ड लक्ष्मणपुर में राजकीय डिग्री कॉलेज, यूपीएस केवराकला का अपग्रेडेशन, राजकीय पॉलिटेक्निक पट्टी, पुलिस विभाग सम्बन्धित बनवीरकाछ में नवीन थाना कोतवाली देहात के अनावासीय भवन हॉस्टल, बैरक एवं विवेचना कक्ष स्वास्थ्य विभाग के पीएचसी भदरी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रानीगंज कैथोला आदि पूर्ण कार्यो को तत्काल प्रशासकीय विभाग को हस्तगत करने के निर्देश दिये गये।

मुख्य विकास अधिकारी ने सीएम डैश बोर्ड पर प्रदर्शित विकास कार्या से सम्बंधित योजनाओं,कार्यक्रमों की माह नवम्बर की प्रगति के आधार पर योजनाओं,कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी।

माह नवम्बर में सीएम डैश बोर्ड पर विकास कार्या में जनपद को राज्य में 16 वां स्थान प्राप्त हुआ है। छात्रवृत्ति योजनाओ में प्राप्त आवेदनों का ससमय शत-प्रतिशन निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी एवं जिला विद्यालय निरीक्षक को दिया गया।विभिन्न पेंशन योजना यथा वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन, दिव्यांगजन सशक्तीकरण योजना पेंशन एवं पीएम किसान निधि के लाभार्थियों की फैमिली आईडी इस माह के अंत तक बनवाये जाने के निर्देश समस्त सम्बंधित अधिकारियो को दिए गये। इसके अतिरिक्त जिला पंचायतराज अधिकारी, अधिशाषी अभियंता जल निगम ग्रामीण तथा अधिशाषी अभियंता सिचाई खंड को अपने से सम्बंधित योजनाओं का नियमित रूप से पर्यवेक्षण करते हुए प्रगति में सुधार लाये जाने के निर्देश दिए गए।

इसी प्रकार विकास भवन में जनपद में आधार अनुश्रवण समिति की वर्तमान त्रैमास की बैठक मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में उपस्थित यूआईडीएआई के प्रतिनिधि द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद में कुल 177 आधार किट क्रियाशील है जिनसे नवम्बर 2025 में 31105 आधार नामांकन/अपडेशन का कार्य किया गया। 0 से 05 वर्ष से कम आयु के आधार संतृप्तीकरण का मात्र 26 प्रतिशत एवं 05 से 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों का संतृप्तीकरण 91 प्रतिशत पाया गया जिस पर सीडीओ ने जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को अपेक्षित सुधार लाने हेतु निर्देशित किया।18 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के 105 लम्बित आवेदनों का अविलम्ब निस्तारण हेतु ई0डिस्ट्रिक मैनेजर को निर्देशित किया गया।सीडीओ ने अन्य समस्त सम्बन्धित अधिकारी-अग्रणी बैंक मैनेजर, जिला प्रबन्धक बीएसएनएल, अधीक्षक प्रधान डाकघर, प्रबन्धक इण्डिया पोस्ट पेमेन्ट, डिस्ट्रिक्ट कोआर्डिनेटर सीएससी एवं मुख्य चिकित्साधिकारी प्रतापगढ़ को निर्देशित किया गया कि लक्ष्य के सापेक्ष आधार किटों को क्रियाशील कराकर अधिक से अधिक आधार नामांकन/ अपडेशन कार्य कराना सुनिश्चित करें ताकि जनमानस को किसी प्रकार असुविधा न हो। बैठक में परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव, डीसी मनरेगा सन्तोष कुमार सिंह, जिला विकास अधिकारी केएन पाण्डेय, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी प्रियंका सोनी, सभी कार्यदायी संस्था के अधिशासी अभियन्ता/परियोजना प्रबन्धक, यूआईडीएआई के प्रतिनिधि व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम सौंपा गया ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

औराई विधानसभा क्षेत्र, जनपद भदोही में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के औराई तहसील महामंत्री नेहाल अली के नेतृत्व में पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं के निस्तारण को लेकर माननीय विधायक दीनानाथ भास्कर के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया गया कि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा पंजीकृत पत्रकार संगठन है, जो प्रदेश के 18 मंडलों, 75 जनपदों एवं 551 तहसीलों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। बावजूद इसके, ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को सरकारी सुविधाओं का समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। ज्ञापन के माध्यम से तहसील स्तर पर पत्रकारों को मान्यता प्रदान करने, पत्रकार हितों की रक्षा हेतु स्थाई समितियों के गठन, ग्रामीण पत्रकारों को आयुष्मान कार्ड एवं

निःशुल्क बस यात्रा सुविधा, प्रदेश स्तरीय मान्यता व विज्ञापन समितियों में प्रतिनिधित्व, लखनऊ में संगठन के लिए निःशुल्क कार्यालय, ग्रामीण पत्रकार आयोग के गठन तथा पत्रकारों पर एफआईआर दर्ज करने से पूर्व सक्षम अधिकारी से जांच कराने जैसी प्रमुख मांगें रखी गई। विधायक दीनानाथ भास्कर ने पत्रकारों की मांगों को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री तक ज्ञापन पहुंचाने का आश्वासन दिया।

संक्षिप्त खबरें

बलिया में दर्दनाक सड़क हादसा: तेज रफ्तार कार मकान में घुसी, दो दोस्तों की मौत, दो गंभीर घायल

बलिया। जिले के सुखपुरा थाना क्षेत्र में मंगलवार देर रात तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला। बलिया-सिकंदरपुर मार्ग पर धरहरा पेट्रोल पंप के पास एक अनियंत्रित कार मकान में जा घुसी। भीषण हादसे में कार सवार दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। जानकारी के अनुसार अपायल गांव निवासी अभिषेक सिंह (24), रोहित सिंह परिहार (25), सुजीत तुरहा (21) और आदित्य वर्मा (22) मारुति-800 कार से देर रात बलिया शहर जा रहे थे। रात करीब 11:30 बजे मोड़ पर तेज रफ्तार के कारण कार अनियंत्रित हो गई और सड़क किनारे बने मकान के बाहर लगे टीन शेड को तोड़ते हुए करीब 10 मीटर अंदर जाकर दीवार से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार पूरी तरह पिचक गई और चारों युवक वाहन के अंदर ही फंस गए। हादसे में अभिषेक सिंह और रोहित सिंह परिहार की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि सुजीत और आदित्य गंभीर रूप से घायल हो गए। चीख-पुकार सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। कार में फंसे युवकों को निकालने के लिए वाहन की बॉडी काटनी पड़ी। घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। हादसे में मकान का अगला हिस्सा भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। कुछ समय के लिए मार्ग पर यातायात प्रभावित रहा। सीओ सिटी मोहम्मद उस्मान ने बताया कि दुर्घटना तेज रफ्तार के कारण हुई है, मामले की जांच की जा रही है।

पाकुड़िया में बिजली की 'आंख मिचौली जारी'

बिजली की अनियमित आपूर्ति से उपभोक्ताओं में देखा जा रहा है रोष!

पाकुड़िया, पाकुड़, झारखंड:- पाकुड़िया में इन दिनों बिजली आपूर्ति में भारी अनियमितता देखी जा रही है। बिजली की अनियमित आपूर्ति से बिजली उपभोक्ताओं में रोष गहराता दिख रहा है। प्रखंड मुख्यालय पाकुड़िया सहित विभिन्न सुदूर ग्रामीण इलाकों में विद्युत आपूर्ति में बड़े पैमाने पर अनावश्यक रूप से कटौती किए जाने से मोबाइल, इन्वर्टर, ग्रिल कार्य, जेरॉक्स सहित अन्य व्यापारिक कार्यों में कठिनाई होती रही है। वहीं बिजली की अनियमित आपूर्ति से विद्यार्थियों की पढ़ाई में मुश्किलें बढ़ने से अभिभावकों में भी नाराजगी दिख रही है। उपभोक्ताओं ने कहा कि ठंडक के मौसम में बहुत कम बिजली की आपूर्ति लोगों को चकित कर रही है। वहीं दूसरी ओर बिजली उपभोक्ताओं का मानना है कि इन दिनों आम उपभोक्ताओं से बिजली काटकर संभवतः स्टोन क्रेशर में बिजली की आपूर्ति की जा रही है। एक सवाल-जवाब में उपभोक्ताओं ने स्पष्ट कहा कि विगत एक वर्ष पूर्व पाकुड़िया प्रखंड में बिजली आपूर्ति में अपेक्षित सुधार के साथ नियमितता देखी गई थी, परंतु इन दिनों बिजली आपूर्ति केवल 4-5 घंटे ही की जा रही है। उसमें भी अनियमित रूप से आपूर्ति होने के कारण उसका समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है, जिससे लोगों की परेशानी काफी बढ़ती दिख रही है।

चार साल से फरार आरोपी प्रेम मेहता गिरफ्तार

हजारीबाग, झारखंड:- कोर्रा थाना कांड संख्या 286/22 में नामजद अभियुक्त प्रेम मेहता, पिता लखन मेहता, ग्राम नगवां को पुलिस ने चार वर्षों बाद गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी लंबे समय से फरार चल रहा था और पुलिस को उसकी तलाश थी। पुलिस सूत्रों के अनुसार, गुप्त सूचना के आधार पर 16 दिसंबर 2025 को की गई कार्रवाई में प्रेम मेहता को धर दबोचा गया। गिरफ्तारी के बाद आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। कोर्रा थाना पुलिस की इस कार्रवाई को बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है। पुलिस का कहना है कि फरार अभियुक्तों के खिलाफ लगातार अभियान जारी रहेगा और कानून से बचने वालों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा।

उपायुक्त ने की ग्रामीण विकास विभाग की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग, झारखंड:- उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की प्रगति को लेकर समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में मनरेगा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, अम्बेडकर आवास योजना, अबुआ आवास योजना, बिरसा कूप संवर्धन योजना, डोभा निर्माण, आंगनबाड़ी योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, बागवानी योजना, पीडी जनरेशन, जियो टैगिंग, जनमन योजना, पंचायती राज, एबीपीएस, जेएसएलपीएस के अंतर्गत न्यू एसएचजी फॉर्मेशन, क्रेडिट लिंकेज, मुद्रा लोन, लाइवस्टॉक, प्रोड्यूसर ग्रुप, डीडीयू-जीकेवाई, पीएमएफएमई सहित अन्य योजनाओं की विस्तारपूर्वक समीक्षा की गई। उपायुक्त ने सभी संबंधित पदाधिकारियों को पीडी जनरेशन में प्रगति बढ़ाने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी बीडीओ एवं बीपीओ को गरीब परिवारों की सूची तैयार कर मनरेगा के अंतर्गत रोजगार उपलब्ध कराने एवं मानव दिवस सृजन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। साथ ही लंबित एवं पुरानी योजनाओं को शीघ्र शत-प्रतिशत पूर्ण करने पर विशेष बल दिया गया। उपायुक्त ने संबंधित पदाधिकारियों को पशुपालन विभाग के साथ समन्वय स्थापित करते हुए पशुधन योजना सैंक्शन करने तथा क्षेत्रीय सर्वे कर जरूरतमंद लाभुकों का डेटा संग्रह करने का निर्देश दिया। उन्होंने पीवीटीजी समुदायों के लिए मनरेगा योजना से शौचालय निर्माण कराने का भी निर्देश दिया। विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण वाटिका की समुचित देखभाल सुनिश्चित करने, सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त जॉब कार्ड आवेदनों का शत-प्रतिशत निष्पादन करने तथा जिनका जॉब कार्ड नहीं बना है, उनका सर्वे कर जॉब कार्ड निर्गत करने का निर्देश सभी बीपीओ को दिया गया। इसके अतिरिक्त पोटो हो खेल विकास योजना के अंतर्गत लंबित योजनाओं को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने सभी बीडीओ को अपने-अपने क्षेत्रों के आंगनबाड़ी केंद्रों का नियमित निरीक्षण करने तथा निरीक्षण के दौरान फिजिकल एवं ऑनलाइन डेटा का मिलान करने का निर्देश दिया। उन्होंने जेएसएलपीएस के अंतर्गत संचालित योजनाओं की भी विस्तृत समीक्षा करते हुए बैंकों से संबंधित समस्याओं की रिपोर्ट प्रस्तुत करने तथा एसएचजी के बीमा संबंधी समस्याओं पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आधार सत्यापन से संबंधित समस्याओं के शीघ्र निष्पादन, पीडी जनरेशन एवं वर्मी कम्पोस्ट से जुड़े कार्यों में सक्रियता, मैटेरियल इशू, पुरानी योजनाओं में प्रगति तथा पंचायती राज अंतर्गत सेवाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में उपायुक्त के अलावा उप विकास आयुक्त, प्रशिक्षु आईएएस, पंचायती राज पदाधिकारी, सभी बीडीओ, बीपीओ, बीपीएम, विभिन्न योजनाओं के समन्वयक एवं अन्य संबंधित कर्मी उपस्थित थे।

हजारीबाग पुलिस की बड़ी कार्रवाई, पाण्डेय गिरोह के सात सक्रिय अपराधी हथियारों के साथ गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग, झारखंड:- हजारीबाग पुलिस ने संगठित अपराध के खिलाफ बड़ी सफलता हासिल करते हुए पाण्डेय गिरोह के कुल सात सक्रिय अपराधियों को हथियार और जिंदा गोलियों के साथ गिरफ्तार किया है। हज़ारीबाग पुलिस ने प्रेसवार्ता कर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक, हजारीबाग को मिली गुप्त सूचना के आधार पर की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक 17 दिसंबर 2025 की रात्रि करीब 00:10 बजे पुलिस अधीक्षक महोदय को गुप्त सूचना मिली कि बादम-चरही सड़क स्थित ग्राम इंद्रा के जंगल में संगठित अपराध से जुड़े कुछ अपराधी हथियारों और गोलियों के साथ एकत्र होकर किसी बड़ी डकैती की योजना बना रहे हैं। सूचना की गंभीरता को देखते हुए तत्काल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, विष्णुगढ़ वैद्यनाथ प्रसाद के नेतृत्व में एक विशेष जांच टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए चरही थाना क्षेत्र के इंद्रा जंगल में छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के दौरान जंगल में कुछ संदिग्ध व्यक्ति एकत्रित दिखाई दिए, जो पुलिस को देखकर भागने का प्रयास करने लगे। पुलिस बल ने तत्परता दिखाते हुए सभी को घेराबंदी कर पकड़ लिया। पकड़े गए व्यक्तियों की तलाशी के दौरान आलोक राज एवं लक्ष्मण पासवान के पास से एक-एक लोडेड देशी कट्टा बरामद किया गया। वहीं अन्य आरोपियों के पास से मोबाइल फोन बरामद किए गए। पूछताछ के दौरान गिरफ्तार आरोपियों ने स्वीकार किया कि वे सभी पाण्डेय गिरोह के लिए कार्य करते हैं तथा गिरोह के सक्रिय सदस्य ओमप्रकाश उर्फ प्रकाश साव के निर्देश पर बड़कागांव, केरेडारी, पगार, गिद्दी और पतरातु क्षेत्र में रंगदारी मांगने और धमकी देने की घटनाओं को अंजाम देते थे। पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि सभी आरोपियों का आपराधिक इतिहास रहा है और वे पूर्व में कई मामलों में जेल जा चुके हैं। बरामद सामानों में एक देशी कट्टा - एक जिंदा गोली के साथ, एक देशी पिस्टल तीन जिंदा गोली के साथ, एंड्रॉइड मोबाइल फोन 07 है। वहीं गिरफ्तार अभियुक्तों में आलोक राज 20 वर्ष, पिता गुरुदयाल ठाकुर, सा0 बड़कागांव ठाकुर मोहल्ला, थाना बड़कागांव, जिला हजारीबाग वर्तमान पता जयनगर कॉलोनी, थाना भुरकुंडा, जिला रामगढ़, सूरज सिंह 24 वर्ष पिता स्व. महेन्द्र सिंह, सा0 वासरी कॉलोनी थाना गिद्दी सी जिला हजारीबाग, लक्ष्मण पासवान उर्फ राधे 29 वर्ष पिता अरूण पासवान, ग्राम सुलमी थाना कटकमसांडी, जिला हजारीबाग, सौरभ कुमार उर्फ आकाश पाण्डे 25 वर्ष, पिता संजय पाण्डे, सा0 डेमोटांड, थाना मुफ्फसिल जिला हजारीबाग, राहुल कुमार उर्फ मोनु 27 वर्ष, पिता स्व. राजू राय मंडल सा0 सुन्दरपुर, थाना मुफ्फसिल जिला हजारीबाग, विजय कुमार 26 वर्ष पिता नारायण प्रजापति सा0 पतरा खुर्द थाना केरेडारी जिला हजारीबाग, पप्पु पाण्डे उर्फ बब्लु पाण्डे उर्फ रितेश पाण्डे 30 वर्ष पिता स्व. सरोज पाण्डे, सा0 रामनगर चौक थाना कटकमदाग जिला हजारीबाग शामिल है। इस कार्रवाई में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विष्णुगढ़ श्री वैद्यनाथ प्रसाद, पुलिस उपाधीक्षक श्री प्रशांत कुमार सहित बड़कागांव, बरही, उरीमारी, पगार, कटकमसांडी, मुफ्फसिल, गिद्दी, चरही थाना एवं तकनीकी शाखा हजारीबाग के कई पुलिस पदाधिकारी और जवान शामिल थे। पुलिस अधीक्षक, हजारीबाग ने इस सफल कार्रवाई के लिए टीम को बधाई देते हुए कहा कि जिले में संगठित अपराध और आपराधिक गिरोहों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा और कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

मालवीय मुरली बाबू की 131वीं जयंती पर शिक्षा जगत ने किया नमन, न्यायमूर्ति बोले—संस्कारयुक्त शिक्षा से होता है समाज का निर्माण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलिया। शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ने वाले मालवीय मुरली बाबू की 131वीं जयंती बुधवार को श्री मुरली मनोहर टाउन इंटर कॉलेज परिसर में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। उनकी प्रतिमा स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों, छात्रों और प्रबंध समिति के पदाधिकारियों ने पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें स्मरण किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति शंभूनाथ श्रीवास्तव ने कहा कि मुरली बाबू ने शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण का सशक्त आधार बनाया। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे गुणवत्ता, नैतिकता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दें। उनके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान आज भी उत्कृष्ट शिक्षा और संस्कारों के केंद्र बने हुए हैं। समारोह की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई। टाउन एजुकेशनल सोसाइटी के सचिव राकेश कुमार ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इसके बाद मुरली बाबू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया गया। कार्यक्रम में श्री मुरली मनोहर टाउन इंटर कॉलेज, टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुलाब देवी बालिका इंटर कॉलेज, गुलाब देवी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय और टाउन पॉलिटेक्निक के प्राचार्य एवं प्रधानाचार्यों ने संस्थाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर मेधावी छात्र-छात्राओं, स्वर्ण पदक विजेताओं और उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही, टाउन एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा अवकाश प्राप्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों को अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। अध्यक्षीय संबोधन टाउन एजुकेशनल सोसाइटी के अध्यक्ष दीपक वर्मा ने दिया, जबकि गुलाब देवी इंटर कॉलेज के प्रबंधक नलिनेश श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. डॉ. अशोक सिंह ने किया।

पांडेय बारा, दादपूर और दैहर में खुले धान क्रय केंद्र, विधायक मनोज यादव ने किया उदघाटन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चौपारण, हजारीबाग, झारखंड:- प्रखण्ड क्षेत्र के पांडेय बारा, दादपूर एवं दैहर पंचायतों में बुधवार को एक साथ तीन धान क्रय केंद्रों का विधिवत शुभारंभ किया गया। विधायक मनोज कुमार यादव ने तीनों केंद्रों का दौरा कर फीता काटकर उद्घाटन किया और इन्हें किसानों को समर्पित किया। उद्घाटन अवसर पर पैक्स अध्यक्षों, समिति सदस्यों एवं बड़ी संख्या में उपस्थित किसानों ने विधायक का स्वागत किया। इस दौरान विधायक ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि किसानों को उनकी उपज का पूरा और न्यायसंगत मूल्य मिले, इसके लिए धान की खरीद प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी एवं नियमबद्ध रखी गई है। उन्होंने बताया कि धान खरीद सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में होगी तथा पूरी प्रक्रिया लाग-इन सिस्टम के माध्यम से जिला स्तर के अधिकारियों की देखरेख में संचालित की जाएगी। खरीदा गया धान केंद्र के गोदाम में ही सुरक्षित रहेगा, जबकि परिवहन में उपयोग होने वाले वाहनों में जैमर सिस्टम लगाया जाएगा, ताकि किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या हेराफेरी की संभावना न रहे। विधायक ने बताया कि सरकार द्वारा निर्धारित 2450 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान की खरीद की जाएगी तथा किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाएगा। धान खरीद की प्रक्रिया 31 मार्च तक जारी रहेगी। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे बिचौलियों को औने-पौने दाम पर धान न बेचें, बल्कि सीधे सरकारी क्रय केंद्रों में धान देकर अपनी मेहनत का पूरा लाभ लें। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर किसान बीसीओ अथवा संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं। कार्यक्रम में पांडेय बारा पैक्स अध्यक्ष अशोक सिंह, दैहर पैक्स अध्यक्ष आशीष सिंह एवं दादपूर पैक्स अध्यक्ष रंजीत सिंह ने विधायक का स्वागत किया। मौके पर जिला परिषद सदस्य राकेश रंजन, विधायक प्रतिनिधि राजदेव यादव, भाजपा एससी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष रामस्वरूप पासवान, मुखिया संघ अध्यक्ष बीरेंद्र रजक, प्रमुख प्रतिनिधि उदय राणा, भाजपा मंडल अध्यक्ष राजेंद्र चंद्रवंशी व रेवा शंकर साव, अरविंद सिन्हा, बलराम दांगी, विकास यादव, यावनपुर मुखिया जानकी यादव, कैलाश पांडेय, रामचंद्र सिंह, जन्मजय सिंह, मंतोष सिंह, अनिल पांडेय, जगदीश यादव, रामव्यास यादव, पांडेय बारा मुखिया रेखा साव, लालबहादुर पांडेय, रामविलास चंदरवंशी, पसस सहदेव यादव,पसस कैलास भुइयाँ,देव कुमार दांगी, सुरेश दांगी, राजेंद्र पांडेय, अर्जुन सिंह, आदिल सिंह, इंदर देव दांगी, प्रदीप कैशरी, सतेन्द्र सिंह सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण एवं किसान मौजूद रहे।

ग्रामीण प्रतिभाओं का उत्सव: आदर्श लक्ष्य ट्रॉफी सॉफ्टबॉल क्रिकेट में बजरमरुआ विजयी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देवघर, झारखण्ड:- देवघर प्रखंड के पिछड़ीबाद पंचायत अंतर्गत करेसर मैदान, मथुरापुर में बुधवार को आदर्श लक्ष्य ट्रॉफी–पिछड़ीबाद पंचायत स्तरीय सॉफ्टबॉल क्रिकेट प्रतियोगिता के सेमीफाइनल एवं फाइनल मुकाबले देवघर जिला सॉफ्टबॉल क्रिकेट संघ के तत्वावधान में सफलतापूर्वक संपन्न हुए। प्रतियोगिता में स्थानीय खिलाड़ियों के साथ बड़ी संख्या में ग्रामीण दर्शकों की मौजूदगी से खेल के प्रति उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि एवं देवघर जिला सॉफ्टबॉल क्रिकेट संघ के अध्यक्ष आदर्श लक्ष्य उर्फ भईया जी ने फीता काटकर किया। आयोजन समिति की ओर से संतोष कुमार यादव, रोहित दास, टिंकू पुझहर एवं प्रिंस कुमार ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण एवं बुके भेंट कर स्वागत किया। अपने संबोधन में आदर्श लक्ष्य ने कहा कि पंचायत एवं प्रखंड स्तर की खेल प्रतियोगिताएँ ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने बताया कि जिले की सभी 196 पंचायतों में सॉफ्टबॉल क्रिकेट प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं, जिनसे चयनित खिलाड़ी प्रखंड, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचेंगे। चयनित खिलाड़ी अप्रैल माह में भूटान में प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय सॉफ्टबॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रतियोगिता में कुल आठ टीमों–करमाटांड, डोंगी, तिलैया, यमजोरा, धबोवा, बजरमरुआ, कोकहराजोरी एवं साहिबगंज–ने भाग लिया। पहले सेमीफाइनल में धबोवा टीम ने साहिबगंज को पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में बजरमरुआ टीम ने कोकहराजोरी को हराया। फाइनल मुकाबले में बजरमरुआ और धबोवा टीमों के बीच रोमांचक खेल देखने को मिला। शानदार प्रदर्शन के बाद बजरमरुआ टीम ने धबोवा टीम को 23 रनों से पराजित कर आदर्श लक्ष्य ट्रॉफी अपने नाम की। विजेता टीम को ट्रॉफी, मेडल एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए, वहीं उपविजेता धबोवा टीम को भी मेडल एवं सम्मान पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। समापन अवसर पर आदर्श लक्ष्य ने खिलाड़ियों, दर्शकों, ग्रामीणों एवं आयोजन समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ भविष्य में भी बड़े स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन कर ग्रामीण प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहेगा।

शिव मंदिर थाना टोली में शौंडिक जायसवाल समाज की श्रद्धांजलि सभा हुई आयोजित, दिवंगत आत्माओं को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चंदवा, झारखंड:- शौंडिक जायसवाल समाज चंदवा के तत्वावधान में बुधवार को शिव मंदिर थाना टोली परिसर में एक गरिमामय श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता सतेंद्र प्रसाद साहू ने की। इस अवसर पर हाल के दिनों में विभिन्न समाजों से जुड़े दिवंगत व्यक्तियों को समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा की शुरुआत दो मिनट के मौन के साथ हुई, जिसमें उपस्थित लोगों ने दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की। वातावरण पूरी तरह शोकाकुल और संवेदनशील रहा। विशेष रूप से 55 वर्षीय ध्रुव प्रसाद साहू के असामयिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया गया, जिनका हाल ही में हार्ट अटैक से निधन हो गया था। वक्ताओं ने कहा कि उनका निधन न केवल साहू समाज बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनके सामाजिक योगदान, सरल स्वभाव और मिलनसार व्यक्तित्व को याद करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की गई। शौंडिक जायसवाल समाज के अध्यक्ष प्रमोद साहू ने अपने संबोधन में कहा कि कम उम्र में हो रही असमय मौतें समाज के लिए अत्यंत पीड़ादायक हैं। उन्होंने कहा कि शौंडिक जायसवाल समाज इस दुःख की घड़ी में सभी शोक संतप्त परिवारों के साथ मजबूती से खड़ा है और आगे भी हर संभव सहयोग करता रहेगा। साथ ही उन्होंने समाज में आपसी एकजुटता और संवेदनशीलता बनाए रखने की अपील की। श्रद्धांजलि सभा के दौरान कंचन देवी (73), संगीता देवी (40), राजेंद्र प्रसाद साहू (76), बालकृष्ण मिश्रा (80), कुंती देवी (62) एवं वीरा देवी (60) के निधन पर भी समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा के अंत में समाज की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को नमन करते हुए शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की गई। कार्यक्रम में प्रमोद साहू, महेंद्र साहू, रामकरण साहू, सतीश प्रसाद, प्रमोद जायसवाल, राजेश प्रसाद, वीरेंद्र प्रसाद, धनेश प्रसाद, मोहनीश कुमार, प्रशांत कुमार, मनित गुप्ता 'संटू', विनय विद्यार्थी, आदर्श रविराज सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग उपस्थित थे।

बरही में बिहार सरकार के अल्पसंख्यक एवं कल्याण मंत्री जमा खान का विधायक मनोज यादव ने किया भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही, हजारीबाग, झारखंड:- बिहार सरकार के अल्पसंख्यक एवं कल्याण मंत्री जमा खान का बरही आगमन पर गर्मजोशी से स्वागत किया। स्थानीय एक होटल के सभागार में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में विधायक मनोज यादव ने मंत्री जमा खान को अंगवस्त्र ओढ़ाकर एवं बुके भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मंत्री जमा खान ने आत्मीय स्वागत के लिए विधायक मनोज यादव एवं उपस्थित जनप्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार राज्य सरकार अल्पसंख्यक समाज सहित सभी वर्गों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक विकास से जुड़ी योजनाओं को धरातल पर उतारने के लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है, ताकि अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंच सके। वहीं विधायक मनोज यादव ने कहा कि मंत्री जमा खान का बरही आगमन क्षेत्र के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि बिहार में अल्पसंख्यक एवं कल्याण विभाग की योजनाओं से समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त किया जा रहा है और आगे भी जनहित में समन्वय के साथ विकास कार्यों को गति दी जाएगी। मौके पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, दिनेश सिंह राठौड़, नागेंद्र प्रसाद, जीप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, चौपारण मुखिया संघ अध्यक्ष बिरेन्द्र रजक, भाजपा मंडल अध्यक्ष नागेश्वर रजक, गौरियाकरमा मुखिया प्रतिनिधि राजन ओम, राजकुमार यादव, आकाश जायसवाल, मुन्ना यादव, सचिन यादव, प्रकाश पंडित, मो. इमरान, अशोक यादव, युगल यादव, अमित गौरव उर्फ पमपम, दीपक कुमार, भूपेंद्र यादव, रोहित यादव सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

फेडरेशन ऑफ़ चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने कूद बस्ती में जरूरतमंदों के बीच किया गर्म कपड़ों का वितरण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग, झारखंड:- फेडरेशन ऑफ़ चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, हजारीबाग के द्वारा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के तहत हजारीबाग रेलवे स्टेशन के पीछे स्थित कुद बस्ती में जरूरतमंद एवं गरीब परिवारों के बीच गर्म कपड़ों का वितरण किया गया। कड़ाके की ठंड को देखते हुए आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ठंड से प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाना रहा। कार्यक्रम में संस्था के पदाधिकारियों ने स्वयं उपस्थित होकर जरूरतमंदों को गर्म कपड़े वितरित किए। इस अवसर पर फेडरेशन के अध्यक्ष शंभू नाथ अग्रवाल ने कहा कि समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों की सेवा करना हम सभी का दायित्व है। फेडरेशन आगे भी इस प्रकार के जनकल्याणकारी कार्यों को निरंतर जारी रखेगा। सचिव राकेश ठाकुर ने कहा कि फेडरेशन ऑफ़ चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री न केवल व्यापारिक हितों बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति भी प्रतिबद्ध है, साथ ही कहा कि कार्यक्रम में सहयोग देने वाले सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते है । स्थानीय निवासियों ने इस मानवीय पहल की सराहना करते हुए फेडरेशन को धन्यवाद दिया और इसे ठंड के मौसम में बड़ी राहत बताया। मौके पर अध्यक्ष शंभू नाथ अग्रवाल,सचिव राकेश ठाकुर एवं सहसचिव तारीख अहमद राजा सहित कई लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

कानपुर -प्रयागराज हाइवे पर बढ़ रहा हादसों का खतरा

घाटमपुर। कानपुर -प्रयागराज नेशनल हाईवे पर महाराज पुर थाना क्षेत्र स्थित ब्रम्ह देव मंदिर के पास अवैध वाहन पार्किंग बड़े हादसों का न्योता दे रही है सर्दियों में घने कोहरे के कारण यहां सड़क दुघर्टनाओं का खतरा और बढ़ जाता है, जहां हर साल कई लोग अपनी जान गंवाते हैं। मंदिर के पास सुबह से लेकर रात तक नेशनल हाईवे किनारे वाहनों की लंबी कतारें अवैध रूप से खड़ी रहती है,यह स्थान महाराज पुर में प्रमुख दुर्घटना बिंदु बन गया है, एक ओर जहां राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण,, एनएचएआई,, सड़क हादसों को रोकने के लिए रेडियम पट्टी लगानें और साइन बोर्ड लगानें जैसे प्रयास कर रहा है, वहीं दूसरी ओर इस अवैध पार्किंग पर उसकी नजर नहीं पड़ती, स्थानीय प्रशासन और यातायात पुलिस भी इस अवैध पार्किंग के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है,, इस संबंध में महाराज पुर इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि नेशनल हाईवे एनएच के महाराज पुर क्षेत्र के लिए एक स्पेशल क्रिटिकल कारिडोर टीम,सीसीटीम का गठन किया गया है उन्होंने आश्वासन दिया कि यह टीम हाइवे पर लगातार निगरानी कर रही है।

एडीजी आलोक सिंह ने डीजीपी की कान्फ्रेंस में रखे विचार

कानपुर। माह दिसम्बर-2025 के अन्त में मुख्यमंत्री, उ0प्र0 की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय पुलिस सम्मेलन प्रस्तावित है। इस परिप्रेक्ष्य में पुलिस महानिदेशक, उ0प्र0 द्वारा वीडियों कांफ्रेसिंग के माध्यम से समीक्षा/गोष्ठी की गयी। समीक्षा/गोष्ठी के दौरान आलोक सिंह, अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर द्वारा उपरोक्त के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझावों को साझा किया गया।

रंजिश में हुई मारपीट में तीन पर केस हुआ दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। मारपीट को लेकर पुलिस ने आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लीलापुर थाना क्षेत्र के बहुंचरा गांव निवासी किशोर कुमार वर्मा पुत्र स्व0 रामेश्वर वर्मा ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती पन्द्रह दिसंबर को पुरानी रंजिश को लेकर उसके भाई मनोज कुमार वर्मा व उसकी पत्नी कंचन वर्मा को गांव के मोती लाल वर्मा पुत्र अंगनू वर्मा तथा मोती लाल वर्मा के पुत्रगण अंशू व प्रियांशु ने मारापीटा व जानलेवा धमकी दी। प्रभारी निरीक्षक मनोज पाण्डेय का कहना है कि जांच के बाद तीन आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

बिस्कोहर में हिंदू सम्मेलन को लेकर हुआ भूमि पूजन

सिद्धार्थनगर । जिले के बिस्कोहर कस्बे के प्राइवेट बस अड्डे के पास स्थित एक निजी विद्यालय में 21 दिसंबर को होने वाले हिंदू सम्मेलन के आयोजन को लेकर बुधवार को विधि विधान से भूमि पूजन किया गया। आचार्य बृजेश पाठक द्वारा प्रस्तुत वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच वरिष्ठ समाजसेवी सुधीर त्रिपाठी ने भूमि पूजन प्रक्रिया कार्यक्रम संपन्न किया। इस अवसर पर खंड कार्यवाह अजय, खण्ड प्रचारक ऋतुराज कमल, सुधीर त्रिपाठी, संजय सिंह, मोना पाण्डेय, मारुति नन्दन मौर्या, सचिन गुप्ता, रामशंकर यादव, रामदास मौर्या, अनिल तिवारी, आयुष मोदनवाल, दयानन्द शुक्ला, विवेक शुक्ला, किशन पासवान, रोहित गुप्ता, प्रिंस भारत, मंतोष पाठक, साजन सिंह, गुलाब पाण्डेय आदि मौजूद रहें।

सरकारी धन का दुरुपयोग या भू-माफिया को संरक्षण? पार्क के हरित क्षेत्र को नष्ट करने पर शासन से शिकायत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) साहित्य प्रचार विभाग के जिला संयोजक, प्रकाश वीर आर्य ने गोविंद नगर, ब्लॉक-8 स्थित सार्वजनिक पार्क में बड़े पैमाने पर हुए अतिक्रमण और हरित क्षेत्र के विनाश को लेकर जिलाधिकारी कानपुर नगर, नगर आयुक्त नगर निगम और मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार से तत्काल और कठोर कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि पार्क के 70% हरित क्षेत्र को जानबूझकर इंटरलॉकिंग टाइल्स से पाट दिया गया है, जो माननीय सुप्रीम कोर्ट और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) के स्पष्ट आदेशों की खुली अवमानना है।

मुख्य आरोप और चौंकाने वाले तथ्यः हरित क्षेत्र का विनाशः शिकायतकर्ता के अनुसार, पार्क के लगभग 70% हरित क्षेत्र (घास और पुराने पौधे) को अवैध रूप से इंटरलॉकिंग टाइल्स से पाट दिया गया है। NGT के आदेशानुसार, पार्कों में केवल वॉकिंग ट्रैक (अधिकतम 5% क्षेत्रफल) ही पक्का किया जा सकता है। अवैध धार्मिक/पक्के निर्माणः पार्क के हरित क्षेत्र में दो वर्ष पूर्व एक 10×20 फीट का धार्मिक चबूतरा बना दिया गया था, जिसे नगर निगम के अधिकारियों ने 'पुराना निर्माण' बताकर कोई कार्रवाई नहीं की, जिसके कारण आज पार्क में हरियाली की जगह कब्ज़े के बड़े-बड़े ढांचे खड़े हो गए हैं। सार्वजनिक धन का दुरुपयोगः शिकायत में आरोप है कि इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने का कार्य सार्वजनिक धन (विधायक/सांसद निधि, आदि) का दुरुपयोग है, जिसका सीधा उद्देश्य हरित क्षेत्र को 'ऑक्सीजन ज़ोन' से हटाकर अवैध निर्माण को संरक्षण देना प्रतीत होता है। यह धारा 324 BNS के अंतर्गत एक आपराधिक कृत्य है। अधिकारियों पर गंभीर आरोपः श्री आर्य ने IGRS और RTI पर अधिकारियों द्वारा झूठी आख्या (जैसे 'निर्माण पुराना है' या 'शिकायत निस्तारित है') लगाने का आरोप लगाया है। यह कार्य न केवल प्रशासन को गुमराह करने का, बल्कि दोषी अधिकारियों को बचाने का भी स्पष्ट प्रयास है।

तत्काल कार्रवाई की मांगः भाजपा नेता ने मांग की है कि दोषी अधिकारियों के विरुद्ध सेवा नियमों के तहत कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई और IPC/BNS की सुसंगत धाराओं के तहत तत्काल प्राथमिकी (FIR) दर्ज करने का आदेश दिया जाए। उन्होंने 15 दिनों के भीतर कार्रवाई की मांग की हैः तत्काल ध्वस्तिकरण और बहालीः पार्क में मौजूद अवैध धार्मिक निर्माण और नए इंटरलॉकिंग टाइल्स को हटाकर, माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार 70% हरित क्षेत्र को पार्क के मूल रूप में तत्काल प्रभाव से बहाल किया जाए। कार्रवाई का विवरणः की गई कार्रवाई का विस्तृत विवरण और अवैध निर्माण हटाने की समय-सीमा 7 दिनों के भीतर उपलब्ध कराई जाए। आर्य ने चेतावनी दी है कि यदि इस अत्यंत गंभीर शिकायत पर नियमानुसार और कठोर कार्रवाई नहीं की जाती है, तो वह पूरे प्रकरण को लेकर माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष अवमानना याचिका दायर करने के लिए बाध्य होंगे।

बेजुबान जानवरों को भीषण ठंड से बचाने के लिए एलायंस क्लब पहना रहा बोरे के कोट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ द्वारा गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी भीषण सर्दी को देखते हुए बेसहारा पशुओं के संरक्षण का अभियान चलाया जा रहा है। सड़क पर लावारिस घूमते हुए गाय, बछड़े तथा भैंस इत्यादि को बोरे के कोट और बोरे का वस्त्र क्लब के अंतरराष्ट्रीय डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य की अगुवाई में पहना कर संरक्षित किया जा रहा है। जल, चारे तथा गुड़ इत्यादि की व्यवस्था भी क्लब की टीम कर रही है। इसी क्रम में बुधवार को चिलबिला, महुली, सदर बाजार आदि गली कूचे और चौराहों पर गाय तथा बछड़ों को पकड़कर बोरे तथा बोरे के कोट पहनाया गया। रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि पशुओं के संरक्षण के इस अभियान में सहयोग दे। सभी जनमानस से अपील है कि अपने घरों व गांव में घुमंतू पशुओं को इस भीषण ठंड में बचाने के लिए बोरे के कोट पहनाएं और जरूरतमंदों को गरीबों व असहायों को गर्म कपड़े व कम्बल आदि देकर उन्हें भी ठंड से राहत पहुंचाने में अपना योगदान दें और पूण्य के भागीदार बने। धरती पर पशुओं को भी जीने का उतना ही अधिकार है जितना मनुष्यों को। मनुष्य तो अपनी व्यथा बताकर अपनी जरूरत पूरी कर लेता है। लेकिन इन बेजुबान जानवरों को हम सब का कर्तव्य बनता है कि उनका भी ध्यान अपने जैसा रखें। अभियान में सुरेश अग्रवाल, छेदीलाल, देवानंद, संतोष कुमार, संजय कनौजिया, आदर्श उमरवैश्य, विवेक यादव, दयाराम मौर्य, देवेंद्र कुमार, अनवर, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा,अमन गुप्ता, शिवम खंडेलवाल इत्यादि शामिल रहे।

नगर निगम सड़कों के गड्ढे कागज पर बंद कर रही पार्कों की जमीन गेस्ट हाउस बनाने के लिए बाहरी समितियों को दे रही

●7 जनवरी 2026 से सपा की आंदोलन की तैयारी की जाएगी-हाजी फजल महमूद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। बुधवार समाजवादी पार्टी के 78 वार्डो के प्रमुख पीडीए टीम एवं संयुक्त सर्वेक्षण टीम की बैठक सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद की अध्यक्षता में दिन में 3:00 बजे आरंभ हुई। बैठक को संबोधित करते हुए महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने कहा कि कैंट गोविंद नगर सीसामऊ आर्य नगर किदवई नगर क्षेत्र के 300 मलिन बस्तियों में पानी तथा सफाई की कोई सुविधा नहीं है इसके अलावा 78 वार्डो के क्षेत्रों नगर निगम सड़कों के गड्ढे कागजों पर भरवा है भौतिक मरम्मत व गड्ढे भरवाने में नगर निगम पीछे रही है जिसकी आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं अभी हाल में एक लड़का गड्ढे और मिट्टी के देर के कारण दुर्घटना में मर जाने से उसके परिवार में कोहराम मचा है।

महानगर अध्यक्ष समाजवादी पार्टी कानपुर हाजी फजल महमूद ने आगे कहा कि गंदगी के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है इसकी वजह से हृदय रोगियों की संख्या डॉक्टर के यहां बढ़ती जा रही है लेकिन नगर निगम की मेयर साहिबा पार्कों एवं गेस्ट हाउस के चक्कर में पड़ी हैं महानगर अध्यक्ष ने वक्तव्य में कहा कि नगर निगम स्वयं बृजेंद्र स्वरूप पार्क में गेस्ट हाउस बनाने में सक्षम है लेकिन मेयर इशारे एक निजी घराने को गेस्ट हाउस बनाने वह मालिकाना हक देकर शहर की जनता के साथ खिलवाड़ कर नगर निगम द्वारा परियोजनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही हैं महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने संबोधन में कहा कि शहर के रेन बसेरों में गरीबों को सुविधा नहीं उल्टा वसूली हो रही है जिसके कारण हजारों लोग जाड़े की रात्रि फुटपाथों पर गुजारते हैं यहां तक नगर निगम अलाव व्यवस्था से भी कन्नी काट रही है सपा महानगर अध्यक्ष ने कहा कि सपा एस.आई.आर के बाद 7 जनवरी 2026 से आंदोलनात्मक रणनीति को अमली जामा पहनाएगी जिसकी पूरी रिपोर्ट समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी को भेज दी गई है। बैठक मे प्रमुख रूप से महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद,प्रदेश सचिव के के शुक्ला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू, महासचिव संजय सिंह बंटी सेंगर,रजत मिश्रा, हेमंत गुप्ता, मो काजिम, मुमताज मंसूरी, अजय श्रीवास्तव,नीरज गुप्ता, तुषार श्रीवास्तव आदि लोग मौजूद रहे।

पीआरवी 6240 के पुलिसकर्मियों द्वारा भटके हुए व्यक्ति को सकुशल परिजनों को किया गया सुपुर्द

थाना औराई क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम बभनौटी में दिनांक 17.12.2025 को समय 10.37 बजे डायल 112 (पीआरवी 6240) पर सूचना मिली कि एक अज्ञात व्यक्ति रोड पर पड़ा है।प्राप्त सूचना के आधार पर डायल 112 के पुलिसकर्मियों द्वारा तत्काल मौके पर पहुंच कर अज्ञात व्यक्ति के बारे में पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि गुमशुदा व्यक्ति का नाम राजेन्द्र बिंद पुत्र भागीरथी बिंद निवासी ग्राम शरबतखानी थाना चौरी जनपद भदोही का निवासी है। प्राप्त जानकारी के आधार पर डायल 112 के पुलिसकर्मियों द्वारा वाहन में साथ बैठाकर सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हुए बताये पते पर ले गये ,जहाँ गुमशुदा व्यक्ति के छोटे भाई रोशन बिन्द पुत्र भागीरथी बिंद निवासी ग्राम शरबतखानी थाना चौरी को सुपुर्द किया गया व परिजन द्वारा बताया गया कि इनका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है, पिछले 4-5 दिन से घर बिना बताए चले गए थे जिसके संबंध में खोजबिन किया जा रहा था। यू0पी0-डायल112 के इस सराहनीय कार्य की परिवारजनों व स्थानीय लोगों द्वारा प्रशंसा की जा रही है।

एड्स नियंत्रण हेतु जनपद स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश एड्स नियंत्रण सोसाइटी के अधीन संचालित यूनिट सम्पूर्ण सुरक्षा केंद्र के माध्यम से कलेक्ट्रेट सभागार में उन्मुखीकरण कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस उन्मुखीकरण कार्यशाला का शुभारम्भ जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। मुख्य विकास अधिकारी, कमांडेंट होम गार्ड जिला आबकारी अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक तथा बस्ती मंडल से अखिलेश सिंह क्लस्टर प्रोग्राम मैनेजर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा संचालित राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम से पंकज त्रिपाठी जिला कार्यक्रम समन्वयक, सतीश मिश्रा, उस्मान अली, एसएसके यूनिट, ए.आर.टी.यूनिट एसटीआई यूनिट समस्त आईसीटीसी एलटी समस्त परामर्शदाता उपस्थित रहे । राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम को सहयोग प्रदान करने वाली संस्थाएँ टार्गेट इंटरवेंशन ,लिंक वर्कर स्कीम के प्रबन्धक उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम में जनपद व मंडल पर कार्यरत अखिलेश द्वारा एचआईवी की वस्तु स्थिति से अवगत कराया गया, समस्त सूचनाओं एवं सूचकांकों का विस्तृत विश्लेषण कर जिलाधिकारी द्वारा निर्देश कि एड्स संबंधित एड्स कार्यक्रम से संबंधित सभी अधिकारी व कर्मचारी पूर्ण तन्मयता से कार्य करें जिससे इसे सामाजिक कलंक से जनपद को सुरक्षित व मुक्त किया जा सकता है।

मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन को लेकर हुई बैठक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार कस्बा अंतर्गत स्थित प्राचीन शिवमन्दिर के परिसर में बुधवार को आचार्य संतोष जी महाराज के अगुवाई में बैठक हुई। बैठक में आगामी जनवरी एवं फरवरी माह में होने वाले मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह की रूपरेखा बनाई गई। इस अवसर पर उपस्थित लोगों से बातचीत करते हुए आचार्य संतोष जी महाराज ने कहा कि सैकड़ों वर्ष पूर्व स्थापित मंदिर कस्बा सहित दूर दराज के क्षेत्र के भक्तों के आस्था का यह मंदिर केंद्र है। इस धर्म कार्य की बैठक में लोगों ने अपना विचार व्यक्त किया। कलश यात्रा, मूर्ति स्थापना, यज्ञ स्थल, मंडप, आचार्य, प्रसाद, कथा, लाइट टेंट, मंदिर का मरम्मत एवं रंग रोगन सहित अनेक समसामयिक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुआ। इस अवसर पर कस्बा के व्यवसाई अनूप छापड़िया, धनेश वर्मा, दिनेश मोदनवाल, अभिषेक त्रिपाठी, अवधेश कुमार वर्मा, रवि जायसवाल, विभूति प्रसाद अग्रहरि, विजय साहू, प्रेम प्रकाश वर्मा, श्याम मिलन गुप्ता, कन्हैया सोनी आदि लोग मौजूद रहे।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में नया नाम जुड़वाने का मौका, 26 दिसंबर तक भरे जा सकेंगे फॉर्म-6

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत मतदाता सूची के शुद्धीकरण और अद्यतन का कार्य किया जा रहा है। इस अभियान में ऐसे सभी पात्र नागरिक, जिनकी आयु एक जनवरी 2026 को 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है या होने वाली है और जिनका नाम अभी तक मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, आवेदन कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि स्थानांतरित होकर जनपद में आए नागरिक, जिनका नाम पूर्व निवास स्थान की मतदाता सूची में था, अथवा जिनका नाम अभी तक किसी कारणवश मतदाता सूची में शामिल नहीं हो पाया, वे भी फॉर्म-6 भरकर इस प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकते हैं। आवेदन भारत निर्वाचन आयोग के पोर्टल voters.eci.gov.in तथा वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से ऑनलाइन या संबंधित बूथ लेवल अधिकारी के पास ऑफलाइन किया जा सकता है। फॉर्म-6 जमा करने की अंतिम तिथि 26 दिसंबर निर्धारित की गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि फॉर्म-6 के साथ आवश्यक दस्तावेज संलग्न करना अनिवार्य है। आयु प्रमाण के लिए जन्म प्रमाण पत्र, हाईस्कूल या समकक्ष परीक्षा की अंकपत्र, पासपोर्ट अथवा सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण मान्य होंगे। निवास प्रमाण के रूप में आधार कार्ड, राशन कार्ड, बिजली या पानी का बिल, बैंक पासबुक, पासपोर्ट या सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी निवास प्रमाण पत्र स्वीकार किया जाएगा।

फोटो पहचान के लिए आधार कार्ड, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस अथवा अन्य फोटोयुक्त पहचान पत्र संलग्न किया जा सकता है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने अपील की कि सभी पात्र नागरिक समय-सीमा के भीतर आवेदन कर आवश्यक दस्तावेजों के साथ प्रक्रिया पूर्ण करें, जिससे उनका नाम मतदाता सूची में शामिल हो सके और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो। एसआईआर के अंतर्गत 12,957 फॉर्म-6 हो चुके हैं जमा। उप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. विवेक चतुर्वेदी ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत नए मतदाता बनने के लिए अब तक कुल 12,957 फॉर्म-6 जमा किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि सभी बीएलओ के पास पर्याप्त मात्रा में फॉर्म-6 उपलब्ध है और मतदाता ऑनलाइन माध्यम से भी आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि महाराजपुर विधानसभा क्षेत्र से 3,082, कानपुर कैंट से 3,685, घाटमपुर से 1,701, सीसामऊ से 1,556, बिल्हौर से 1,171, किदवई नगर से 196, आर्य नगर से 690, गोविंद नगर से 448, कल्याणपुर से 128 तथा बिठूर विधानसभा क्षेत्र से 300 फॉर्म-6 प्राप्त हुए हैं।

बिधनू क्षेत्र में माइनर की सफाई नहीं, 10 बीघा की फसल जलमग्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

घाटमपुर। कानपुर नगर के खंड विकास बिधनू क्षेत्र स्थित मटियारा गांव में नहर माइनर की अधूरी सफाई के कारण किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, रामगंगा नहर से पानी छोड़े जाने के बाद माइनर ओवर फ्लो हो गया, जिससे करीब दस बीघे गेहूं की फसल जलमग्न हो गई। किसानों का आरोप है कि इससे पहले धान की फसल भी इसी माइनर के पानी से बर्बाद हो चुकी है, ग्रामीणों के अनुसार धान की फसल बर्बाद होने के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री पोर्टल शिकायत दर्ज कराई थी,इस पर नहर विभाग ने अक्टूबर माह में माइनर की सफाई की, हालांकि किसानों का कहना है कि ज़मीनी स्तर पर सफाई अधूरी है, जिससे एक बार फिर से खेतों में पानी भर गया। ग्राम प्रधान राहुल चतुर्वेदी ने नहर विभाग पर कागजों में ही माइनर की सफाई दिखानें का आरोप लगाया उन्होंने कहा कि माइनर किनारे की पटरी पर चलना मुश्किल हो गया है, धान के बाद अब गेहूं की फसल भी डूब गई, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, आपको बताते चलें कि मटियारा गांव निवासी रामवती बाजपेई ने बताया कि उनके ढाई बीघा खेत में धान के बाद अब गेहूं की फसल डूब गई, उन्होंने बताया कि 80 रूपये किलों बीज बोया था, नहर वालों ने सब बर्बाद कर दिया, नहर विभाग की कथित लापरवाही के कारण, उमेश बाजपेई, मिथुन पांडेय, वीरेंद्र पांडेय, ब्रजेश कुमार, मुन्नीलाल और हरविलास सहित कई किसानों के करीब दस बीघा, खेत जलमग्न हो गए, किसानों ने प्रशासन से जल्द पानी निकासी और माईनर की समुचित सफाई करनें की मांग की है।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम सौंपा गया ज्ञापन

औराई विधानसभा क्षेत्र, जनपद भदोही में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के औराई तहसील महामंत्री नेहाल अली के नेतृत्व में पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं के निस्तारण को लेकर माननीय विधायक दीनानाथ भास्कर के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया गया कि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा पंजीकृत पत्रकार संगठन है, जो प्रदेश के 18 मंडलों, 75 जनपदों एवं 551 तहसीलों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। बावजूद इसके, ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को सरकारी सुविधाओं का समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। ज्ञापन के माध्यम से तहसील स्तर पर पत्रकारों को मान्यता प्रदान करने, पत्रकार हितों की रक्षा हेतु स्थाई समितियों के गठन, ग्रामीण पत्रकारों को आयुष्मान कार्ड एवं निःशुल्क बस यात्रा सुविधा, प्रदेश स्तरीय मान्यता व विज्ञापन समितियों में प्रतिनिधित्व, लखनऊ में संगठन के लिए निःशुल्क कार्यालय, ग्रामीण पत्रकार आयोग के गठन तथा पत्रकारों पर एफआईआर दर्ज करने से पूर्व सक्षम अधिकारी से जांच कराने जैसी प्रमुख मांगें रखी गईं। विधायक दीनानाथ भास्कर ने पत्रकारों की मांगों को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री तक ज्ञापन पहुंचाने का आश्वासन दिया।

कृषि विज्ञान केंद्र ऐंठू कलाकांकर में किसान दिवस का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र ऐंठू कलाकांकर में किसान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 80 कृषकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान कृषक नरेंद्र कुमार गौतम निवासी ग्राम सहबाद द्वारा लघु सिंचाई योजना के अंतर्गत लाभ न मिल पाने, कृषक शिवबहादुर यादव द्वारा किसान पंजीकरण में ग्राम एवं ब्लॉक का गलत फीड हो जाने एवं कृषक नरेंद्र सेन मौर्य, राम सुनेर पटेल, राम दुलारे (निवासी सोनमऊ), सुरेश यादव निवासी त्रिलोचनपुर द्वारा छुट्टा पशुओं तथा आम की बागवानी को नीलगाय से बचाने हेतु तारबाड़ (फेंसिंग) की मांग रखी गई। ग्राम साहाबाद के कृषकों द्वारा चकबंदी कराए जाने की मांग की गई। सतीश मौर्य द्वारा डेयरी उद्योग प्रारंभ करने हेतु जानकारी चाही गई। मोहम्मद राजा निवासी मुरस्सापुर द्वारा बकरी पालन योजना से संबंधित जानकारी मांगी गई। भूमि संरक्षण अधिकारी चमन सिंह द्वारा सभी कृषकों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित विभागों को निस्तारण हेतु अवगत कराया गया। इस अवसर पर उपस्थित समस्त विभागीय अधिकारियों द्वारा सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी कृषकों को दी गई। समस्त कृषकों को फॉर्मर रजिस्ट्री करने के लिए बताया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन सिंह द्वारा कृषकों को नई कृषि तकनीकों एवं नवाचारों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। किसान दिवस कार्यक्रम में भूमि संरक्षण अधिकारी चमन सिंह, जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन सिंह, पशु चिकित्सा अधिकारी, सहायक अभियंता (लघु सिंचाई/नलकूप), अधिशासी अभियंता (विद्युत विभाग), एडीसीओ, सहकारिता सहित अन्य विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जागरूकता ही एड्स से बचाव : डीएम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। एचआईवी-एड्स के प्रसार पर प्रभावी नियंत्रण और समय पर जांच व उपचार को मजबूत करने के उद्देश्य से मंगलवार को कलेक्ट्रेट में 'सुरक्षा से सम्पूर्ण सुरक्षा तक' कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद स्तरीय एडवोकेसी बैठक व संवेदीकरण कार्यशाला आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने की। जिलाधिकारी ने कहा कि जागरूकता ही एड्स से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है। सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और एचआईवी से जुड़ी सही जानकारी आमजन तक पहुंचाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि जांच, परामर्श और उपचार की सुविधाओं के प्रति लोगों का भरोसा बढ़ाया जाए तथा समाज में व्याप्त लांछन और भेदभाव को समाप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाएं।

कार्यशाला का आयोजन मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. हरिदत्त नेमी एवं जिला क्षयरोग अधिकारी डा. सुबोध प्रकाश के नेतृत्व में किया गया। बैठक में जनपद के विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी तथा स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ चिकित्सक उपस्थित रहे। जिला क्षयरोग अधिकारी डा. सुबोध प्रकाश ने सुरक्षित व्यवहार अपनाने पर जोर देते हुए बताया कि समय पर जांच और नियमित उपचार से एचआईवी को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने 95-95-95 रणनीति के तहत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर और समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता बताई। बैठक में यूएचएम निदेशक डा. बीसी पाल, आईएमए अध्यक्ष डा. अनुराग मेहरोत्रा, सचिव डा. शालिनी मोहन, डफरिन एसआईसी डा. रूचि जैन, एसएसके प्रभारी डा. रिचा बाजपेई सहित अन्य चिकित्सकों ने एचआईवी-एड्स की रोकथाम, उपचार और जन-जागरूकता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए।

बाल विवाह मुक्त भारत के लिए शपथ दिलाई गई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिले के उसका बाजार कस्बा के किसान इंटर कालेज पर बुधवार को बाल विवाह मुक्त भारत बनाने के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान प्रधानाचार्य संजय कुमार गुप्ता ने सभी को बाल विवाह मुक्त भारत के लिए शपथ दिलाई । प्रधानाचार्य ने बच्चों को बाल विवाह से होने वाले समस्याओं के बारे में बताया । उन्होंने कहा कि बाल विवाह एक गैर कानूनी कार्य है। इसी कारण सरकार ने बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 का प्रावधान किया है। इसमें बाल विवाह करने एवं कराने वाले सभी लोगों के लिए सजा का प्रावधान किया गया है। संविधान में बताया गया है कि विवाह की आयु लड़की की आयु 18 वर्ष और लड़के की 21 वर्ष होनी चाहिए। बालिकाओं और बालकों को बताया गया कि अगर कहीं बाल विवाह हो रहा तो 1098, 1090, 181 पर कॉल करके सूचित करें। सूचना देने वाले का परिचय गोपनीय रखा जाएगा। इस एक छोटे से प्रयास से किसी बालिका का भविष्य अंधकारमय होने से बच सकता है। इस अवसर पर अशोक कुमार यादव, डा सतेंद्र मिश्र, सुनील पाण्डेय, मनोज शर्मा, कैलाश चंद पाठक, राजेश यादव, सर्वेश उपाध्याय,राम दरस यादव, राघवेंद्र सिंह , अविनाश वर्मा, विजय , प्रमोद पाण्डेय, अनिल चौबे, गणेश शुक्ल, अनिल मिश्र, विरेंद्र पाण्डेय, राम उजागिर पाण्डेय आदि रहे।

संक्षिप्त खबरें

कानपुर -प्रयागराज हाइवे पर बढ़ रहा हादसों का खतरा

घाटमपुर। कानपुर -प्रयागराज नेशनल हाईवे पर महाराज पुर थाना क्षेत्र स्थित ब्रम्ह देव मंदिर के पास अवैध वाहन पार्किंग बड़े हादसों का न्योता दे रही है सर्दियों में घने कोहरे के कारण यहां सड़क दुघर्टनाओं का खतरा और बढ़ जाता है, जहां हर साल कई लोग अपनी जान गंवाते हैं। मंदिर के पास सुबह से लेकर रात तक नेशनल हाईवे किनारे वाहनों की लंबी कतारें अवैध रूप से खड़ी रहती है,यह स्थान महाराज पुर में प्रमुख दुर्घटना बिंदु बन गया है, एक ओर जहां राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण,, एनएचएआई,, सड़क हादसों को रोकने के लिए रेडियम पट्टी लगानें और साइन बोर्ड लगानें जैसे प्रयास कर रहा है, वहीं दूसरी ओर इस अवैध पार्किंग पर उसकी नजर नहीं पड़ती, स्थानीय प्रशासन और यातायात पुलिस भी इस अवैध पार्किंग के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है,, इस संबंध में महाराज पुर इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि नेशनल हाईवे एनएच के महाराज पुर क्षेत्र के लिए एक स्पेशल क्रिटिकल कारिडोर टीम,सीसीटीम का गठन किया गया है उन्होंने आश्वासन दिया कि यह टीम हाइवे पर लगातार निगरानी कर रही है।

एडीजी आलोक सिंह ने डीजीपी की कान्फ्रेंस में रखे विचार

कानपुर। माह दिसम्बर-2025 के अन्त में मुख्यमंत्री, उ0प्र0 की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय पुलिस सम्मेलन प्रस्तावित है। इस परिप्रेक्ष्य में पुलिस महानिदेशक, उ0प्र0 द्वारा वीडियों कांफ्रेसिंग के माध्यम से समीक्षा/गोष्ठी की गयी। समीक्षा/गोष्ठी के दौरान आलोक सिंह, अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर द्वारा उपरोक्त के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझावों को साझा किया गया।

रंजिश में हुई मारपीट में तीन पर केस हुआ दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। मारपीट को लेकर पुलिस ने आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लीलापुर थाना क्षेत्र के बहुंचरा गांव निवासी किशोर कुमार वर्मा पुत्र स्व0 रामेश्वर वर्मा ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि बीती पन्द्रह दिसंबर को पुरानी रंजिश को लेकर उसके भाई मनोज कुमार वर्मा व उसकी पत्नी कंचन वर्मा को गांव के मोती लाल वर्मा पुत्र अंगनू वर्मा तथा मोती लाल वर्मा के पुत्रगण अंशू व प्रियांशु ने मारापीटा व जानलेवा धमकी दी। प्रभारी निरीक्षक मनोज पाण्डेय का कहना है कि जांच के बाद तीन आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

बिस्कोहर में हिंदू सम्मेलन को लेकर हुआ भूमि पूजन

सिद्धार्थनगर । जिले के बिस्कोहर कस्बे के प्राइवेट बस अड्डे के पास स्थित एक निजी विद्यालय में 21 दिसंबर को होने वाले हिंदू सम्मेलन के आयोजन को लेकर बुधवार को विधि विधान से भूमि पूजन किया गया। आचार्य बृजेश पाठक द्वारा प्रस्तुत वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच वरिष्ठ समाजसेवी सुधीर त्रिपाठी ने भूमि पूजन प्रक्रिया कार्यक्रम संपन्न किया। इस अवसर पर खंड कार्यवाह अजय, खण्ड प्रचारक ऋतुराज कमल, सुधीर त्रिपाठी, संजय सिंह, मोना पाण्डेय, मारुति नन्दन मौर्या, सचिन गुप्ता, रामशंकर यादव, रामदास मौर्या, अनिल तिवारी, आयुष मोदनवाल, दयानन्द शुक्ला, विवेक शुक्ला, किशन पासवान, रोहित गुप्ता, प्रिंस भारत, मंतोष पाठक, साजन सिंह, गुलाब पाण्डेय आदि मौजूद रहें।

सरकारी धन का दुरुपयोग या भू-माफिया को संरक्षण? पार्क के हरित क्षेत्र को नष्ट करने पर शासन से शिकायत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) साहित्य प्रचार विभाग के जिला संयोजक, प्रकाश वीर आर्य ने गोविंद नगर, ब्लॉक-8 स्थित सार्वजनिक पार्क में बड़े पैमाने पर हुए अतिक्रमण और हरित क्षेत्र के विनाश को लेकर जिलाधिकारी कानपुर नगर, नगर आयुक्त नगर निगम और मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार से तत्काल और कठोर कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि पार्क के 70% हरित क्षेत्र को जानबूझकर इंटरलॉकिंग टाइल्स से पाट दिया गया है, जो माननीय सुप्रीम कोर्ट और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) के स्पष्ट आदेशों की खुली अवमानना है।

मुख्य आरोप और चौंकाने वाले तथ्यः हरित क्षेत्र का विनाशः शिकायतकर्ता के अनुसार, पार्क के लगभग 70% हरित क्षेत्र (घास और पुराने पौधे) को अवैध रूप से इंटरलॉकिंग टाइल्स से पाट दिया गया है। NGT के आदेशानुसार, पार्कों में केवल वॉकिंग ट्रैक (अधिकतम 5% क्षेत्रफल) ही पक्का किया जा सकता है। अवैध धार्मिक/पक्के निर्माणः पार्क के हरित क्षेत्र में दो वर्ष पूर्व एक 10×20 फीट का धार्मिक चबूतरा बना दिया गया था, जिसे नगर निगम के अधिकारियों ने 'पुराना निर्माण' बताकर कोई कार्रवाई नहीं की, जिसके कारण आज पार्क में हरियाली की जगह कब्ज़े के बड़े-बड़े ढांचे खड़े हो गए हैं। सार्वजनिक धन का दुरुपयोगः शिकायत में आरोप है कि इंटरलॉकिंग टाइल्स लगाने का कार्य सार्वजनिक धन (विधायक/सांसद निधि, आदि) का दुरुपयोग है, जिसका सीधा उद्देश्य हरित क्षेत्र को 'ऑक्सीजन ज़ोन' से हटाकर अवैध निर्माण को संरक्षण देना प्रतीत होता है। यह धारा 324 BNS के अंतर्गत एक आपराधिक कृत्य है। अधिकारियों पर गंभीर आरोपः श्री आर्य ने IGRS और RTI पर अधिकारियों द्वारा झूठी आख्या (जैसे 'निर्माण पुराना है' या 'शिकायत निस्तारित है') लगाने का आरोप लगाया है। यह कार्य न केवल प्रशासन को गुमराह करने का, बल्कि दोषी अधिकारियों को बचाने का भी स्पष्ट प्रयास है।

तत्काल कार्रवाई की मांगः भाजपा नेता ने मांग की है कि दोषी अधिकारियों के विरुद्ध सेवा नियमों के तहत कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई और IPC/BNS की सुसंगत धाराओं के तहत तत्काल प्राथमिकी (FIR) दर्ज करने का आदेश दिया जाए। उन्होंने 15 दिनों के भीतर कार्रवाई की मांग की हैः तत्काल ध्वस्तिकरण और बहालीः पार्क में मौजूद अवैध धार्मिक निर्माण और नए इंटरलॉकिंग टाइल्स को हटाकर, माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार 70% हरित क्षेत्र को पार्क के मूल रूप में तत्काल प्रभाव से बहाल किया जाए। कार्रवाई का विवरणः की गई कार्रवाई का विस्तृत विवरण और अवैध निर्माण हटाने की समय-सीमा 7 दिनों के भीतर उपलब्ध कराई जाए। आर्य ने चेतावनी दी है कि यदि इस अत्यंत गंभीर शिकायत पर नियमानुसार और कठोर कार्रवाई नहीं की जाती है, तो वह पूरे प्रकरण को लेकर माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष अवमानना याचिका दायर करने के लिए बाध्य होंगे।

बेजुबान जानवरों को भीषण ठंड से बचाने के लिए एलायंस क्लब पहना रहा बोरे के कोट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भीषण सर्दी को देखते हुए बेसहारा पशुओं के संरक्षण का अभियान चलाया जा रहा है। सड़क पर लावारिस घूमते हुए गाय, बछड़े तथा भैंस इत्यादि को बोरे के कोट और बोरे का वस्त्र क्लब के अंतरराष्ट्रीय डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य की अगुवाई में पहना कर संरक्षित किया जा रहा है। जल, चारे तथा गुड़ इत्यादि की व्यवस्था भी क्लब की टीम कर रही है। इसी क्रम में बुधवार को चिलबिला, महुली, सदर बाजार आदि गली कूचे और चौराहों पर गाय तथा बछड़ों को पकड़कर बोरे तथा बोरे के कोट पहनाया गया। रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि पशुओं के संरक्षण के इस अभियान में सहयोग दे। सभी जनमानस से अपील है कि अपने घरों व गांव में घुमंतू पशुओं को इस भीषण ठंड में बचाने के लिए बोरे के कोट पहनाएं और जरूरतमंदों को गरीबों व असहायों को गर्म कपड़े व कम्बल आदि देकर उन्हें भी ठंड से राहत पहुंचाने में अपना योगदान दें और पूण्य के भागीदार बने। धरती पर पशुओं को भी जीने का उतना ही अधिकार है जितना मनुष्यों को। मनुष्य तो अपनी व्यथा बताकर अपनी जरूरत पूरी कर लेता है। लेकिन इन बेजुबान जानवरों को हम सब का कर्तव्य बनता है कि उनका भी ध्यान अपने जैसा रखें। अभियान में सुरेश अग्रवाल, छेदीलाल, देवानंद, संतोष कुमार, संजय कनौजिया, आदर्श उमरवैश्य, विवेक यादव, दयाराम मौर्य, देवेंद्र कुमार, अनवर, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा,अमन गुप्ता, शिवम खंडेलवाल इत्यादि शामिल रहे।

नगर निगम सड़कों के गड्ढे कागज पर बंद कर रही पार्कों की जमीन गेस्ट हाउस बनाने के लिए बाहरी समितियों को दे रही

● 7 जनवरी 2026 से सपा की आंदोलन की तैयारी की जाएगी-हाजी फजल महमूद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। बुधवार समाजवादी पार्टी के 78 वार्डो के प्रमुख पीडीए टीम एवं संयुक्त सर्वेक्षण टीम की बैठक सपा महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद की अध्यक्षता में दिन में 3:00 बजे आरंभ हुई। बैठक को संबोधित करते हुए महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने कहा कि कैंट गोविंद नगर सीसामऊ आर्य नगर किदवई नगर क्षेत्र के 300 मलिन बस्तियों में पानी तथा सफाई की कोई सुविधा नहीं है इसके अलावा 78 वार्डो के क्षेत्रों नगर निगम सड़कों के गड्ढे कागजों पर भरवा है भौतिक मरम्मत व गड्ढे भरवाने में नगर निगम पीछे रही है जिसकी आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं अभी हाल में एक लड़का गड्ढे और मिट्टी के देर के कारण दुर्घटना में मर जाने से उसके परिवार में कोहराम मचा है।

महानगर अध्यक्ष समाजवादी पार्टी कानपुर हाजी फजल महमूद ने आगे कहा कि गंदगी के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है इसकी वजह से हृदय रोगियों की संख्या डॉक्टर के यहां बढ़ती जा रही है लेकिन नगर निगम की मेयर साहिबा पार्कों एवं गेस्ट हाउस के चक्कर में पड़ी हैं महानगर अध्यक्ष ने वक्तव्य में कहा कि नगर निगम स्वयं बृजेंद्र स्वरूप पार्क में गेस्ट हाउस बनाने में सक्षम है लेकिन मेयर इशारे एक निजी घराने को गेस्ट हाउस बनाने वह मालिकाना हक देकर शहर की जनता के साथ खिलवाड़ कर नगर निगम द्वारा परियोजनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही हैं महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने संबोधन में कहा कि शहर के रेन बसेरों में गरीबों को सुविधा नहीं उल्टा वसूली हो रही है जिसके कारण हजारों लोग जाड़े की रात्रि फुटपाथों पर गुजारते हैं यहां तक नगर निगम अलाव व्यवस्था से भी कन्नी काट रही है सपा महानगर अध्यक्ष ने कहा कि सपा एस.आई.आर के बाद 7 जनवरी 2026 से आंदोलनात्मक रणनीति को अमली जामा पहनाएगी जिसकी पूरी रिपोर्ट समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी को भेज दी गई है। बैठक मे प्रमुख रूप से महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद,प्रदेश सचिव के के शुक्ला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू, महासचिव संजय सिंह बंटी सेंगर,रजत मिश्रा, हेमंत गुप्ता, मो काजिम, मुमताज मंसूरी, अजय श्रीवास्तव,नीरज गुप्ता, तुषार श्रीवास्तव आदि लोग मौजूद रहे।

पीआरवी 6240 के पुलिसकर्मियों द्वारा भटके हुए व्यक्ति को सकुशल परिजनों को किया गया सुपुर्द

थाना औराई क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम बभनौटी में दिनांक 17.12.2025 को समय 10.37 बजे डायल 112 (पीआरवी 6240) पर सूचना मिली कि एक अज्ञात व्यक्ति रोड पर पड़ा है।प्राप्त सूचना के आधार पर डायल 112 के पुलिसकर्मियों द्वारा तत्काल मौके पर पहुंच कर अज्ञात व्यक्ति के बारे में पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि गुमशुदा व्यक्ति का नाम राजेन्द्र बिंद पुत्र भागीरथी बिंद निवासी ग्राम शरबतखानी थाना चौरी जनपद भदोही का निवासी है। प्राप्त जानकारी के आधार पर डायल 112 के पुलिसकर्मियों द्वारा वाहन में साथ बैठाकर सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हुए बताये पते पर ले गये ,जहाँ गुमशुदा व्यक्ति के छोटे भाई रोशन बिन्द पुत्र भागीरथी बिंद निवासी ग्राम शरबतखानी थाना चौरी को सुपुर्द किया गया व परिजन द्वारा बताया गया कि इनका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है, पिछले 4-5 दिन से घर बिना बताए चले गए थे जिसके संबंध में खोजबिन किया जा रहा था। यू0पी0-डायल112 के इस सराहनीय कार्य की परिवारजनों व स्थानीय लोगों द्वारा प्रशंसा की जा रही है।

एड्स नियंत्रण हेतु जनपद स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश एड्स नियंत्रण सोसाइटी के अधीन संचालित यूनिट सम्पूर्ण सुरक्षा केंद्र के माध्यम से कलेक्ट्रेट सभागार में उन्मुखीकरण कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस उन्मुखीकरण कार्यशाला का शुभारम्भ जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। मुख्य विकास अधिकारी, कमांडेंट होम गार्ड जिला आबकारी अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक तथा बस्ती मंडल से अखिलेश सिंह क्लस्टर प्रोग्राम मैनेजर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा संचालित राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम से पंकज त्रिपाठी जिला कार्यक्रम समन्वयक, सतीश मिश्रा, उस्मान अली, एसएसके यूनिट, ए.आर.टी.यूनिट एसटीआई यूनिट समस्त आईसीटीसी एलटी समस्त परामर्शदाता उपस्थित रहे । राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम को सहयोग प्रदान करने वाली संस्थाएँ टार्गेट इंटरवेंशन ,लिंक वर्कर स्कीम के प्रबन्धक उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम में जनपद व मंडल पर कार्यरत अखिलेश द्वारा एचआईवी की वस्तु स्थिति से अवगत कराया गया, समस्त सूचनाओं एवं सूचकांकों का विस्तृत विश्लेषण कर जिलाधिकारी द्वारा निर्देश कि एड्स संबंधित एड्स कार्यक्रम से संबंधित सभी अधिकारी व कर्मचारी पूर्ण तन्मयता से कार्य करें जिससे इसे सामाजिक कलंक से जनपद को सुरक्षित व मुक्त किया जा सकता है।

मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह के आयोजन को लेकर हुई बैठक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार कस्बा अंतर्गत स्थित प्राचीन शिवमन्दिर के परिसर में बुधवार को आचार्य संतोष जी महाराज के अगुवाई में बैठक हुई। बैठक में आगामी जनवरी एवं फरवरी माह में होने वाले मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा समारोह की रूपरेखा बनाई गई। इस अवसर पर उपस्थित लोगों से बातचीत करते हुए आचार्य संतोष जी महाराज ने कहा कि सैकड़ों वर्ष पूर्व स्थापित मंदिर कस्बा सहित दूर दराज के क्षेत्र के भक्तों के आस्था का यह मंदिर केंद्र है। इस धर्म कार्य की बैठक में लोगों ने अपना विचार व्यक्त किया। कलश यात्रा, मूर्ति स्थापना, यज्ञ स्थल, मंडप, आचार्य, प्रसाद, कथा, लाइट टेंट, मंदिर का मरम्मत एवं रंग रोगन सहित अनेक समसामयिक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुआ। इस अवसर पर कस्बा के व्यवसाई अनूप छापड़िया, धनेश वर्मा, दिनेश मोदनवाल, अभिषेक त्रिपाठी, अवधेश कुमार वर्मा, रवि जायसवाल, विभूति प्रसाद अग्रहरि, विजय साहू, प्रेम प्रकाश वर्मा, श्याम मिलन गुप्ता, कन्हैया सोनी आदि लोग मौजूद रहे।

विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण में नया नाम जुड़वाने का मौका, 26 दिसंबर तक भरे जा सकेंगे फॉर्म-6

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। जिला निर्वाचन अधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत मतदाता सूची के शुद्धीकरण और अद्यतन का कार्य किया जा रहा है। इस अभियान में ऐसे सभी पात्र नागरिक, जिनकी आयु एक जनवरी 2026 को 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है या होने वाली है और जिनका नाम अभी तक मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, आवेदन कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि स्थानांतरित होकर जनपद में आए नागरिक, जिनका नाम पूर्व निवास स्थान की मतदाता सूची में था, अथवा जिनका नाम अभी तक किसी कारणवश मतदाता सूची में शामिल नहीं हो पाया, वे भी फॉर्म-6 भरकर इस प्रक्रिया में सम्मिलित हो सकते हैं। आवेदन भारत निर्वाचन आयोग के पोर्टल voters.eci.gov.in तथा वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से ऑनलाइन या संबंधित बूथ लेवल अधिकारी के पास ऑफलाइन किया जा सकता है। फॉर्म-6 जमा करने की अंतिम तिथि 26 दिसंबर निर्धारित की गई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि फॉर्म-6 के साथ आवश्यक दस्तावेज संलग्न करना अनिवार्य है। आयु प्रमाण के लिए जन्म प्रमाण पत्र, हाईस्कूल या समकक्ष परीक्षा की अंकपत्र, पासपोर्ट अथवा सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण मान्य होंगे। निवास प्रमाण के रूप में आधार कार्ड, राशन कार्ड, बिजली या पानी का बिल, बैंक पासबुक, पासपोर्ट या सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी निवास प्रमाण पत्र स्वीकार किया जाएगा।

फोटो पहचान के लिए आधार कार्ड, पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस अथवा अन्य फोटोयुक्त पहचान पत्र संलग्न किया जा सकता है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने अपील की कि सभी पात्र नागरिक समय-सीमा के भीतर आवेदन कर आवश्यक दस्तावेजों के साथ प्रक्रिया पूर्ण करें, जिससे उनका नाम मतदाता सूची में शामिल हो सके और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो। एसआईआर के अंतर्गत 12,957 फॉर्म-6 हो चुके हैं जमा। उप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. विवेक चतुर्वेदी ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत नए मतदाता बनने के लिए अब तक कुल 12,957 फॉर्म-6 जमा किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि सभी बीएलओ के पास पर्याप्त मात्रा में फॉर्म-6 उपलब्ध है और मतदाता ऑनलाइन माध्यम से भी आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि महाराजपुर विधानसभा क्षेत्र से 3,082, कानपुर कैंट से 3,685, घाटमपुर से 1,701, सीसामऊ से 1,556, बिल्हौर से 1,171, किदवई नगर से 196, आर्य नगर से 690, गोविंद नगर से 448, कल्याणपुर से 128 तथा बिठूर विधानसभा क्षेत्र से 300 फॉर्म-6 प्राप्त हुए हैं।

बिधनू क्षेत्र में माइनर की सफाई नहीं, 10 बीघा की फसल जलमग्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

घाटमपुर। कानपुर नगर के खंड विकास बिधनू क्षेत्र स्थित मटियारा गांव में नहर माइनर की अधूरी सफाई के कारण किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, रामगंगा नहर से पानी छोड़े जाने के बाद माइनर ओवर फ्लो हो गया, जिससे करीब दस बीघे गेहूं की फसल जलमग्न हो गई। किसानों का आरोप है कि इससे पहले धान की फसल भी इसी माइनर के पानी से बर्बाद हो चुकी है, ग्रामीणों के अनुसार धान की फसल बर्बाद होने के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री पोर्टल शिकायत दर्ज कराई थी,इस पर नहर विभाग ने अक्टूबर माह में माइनर की सफाई की, हालांकि किसानों का कहना है कि ज़मीनी स्तर पर सफाई अधूरी है, जिससे एक बार फिर से खेतों में पानी भर गया। ग्राम प्रधान राहुल चतुर्वेदी ने नहर विभाग पर कागजों में ही माइनर की सफाई दिखानें का आरोप लगाया उन्होंने कहा कि माइनर किनारे की पटरी पर चलना मुश्किल हो गया है,धान के बाद अब गेहूं की फसल भी डूब गई, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, आपको बताते चलें कि मटियारा गांव निवासी रामवती बाजपेई ने बताया कि उनके ढाई बीघा खेत में धान के बाद अब गेहूं की फसल डूब गई, उन्होंने बताया कि 80 रूपये किलों बीज बोया था, नहर वालों ने सब बर्बाद कर दिया, नहर विभाग की कथित लापरवाही के कारण, उमेश बाजपेई, मिथुन पांडेय, वीरेंद्र पांडेय, ब्रजेश कुमार, मुन्नीलाल और हरविलास सहित कई किसानों के करीब दस बीघा, खेत जलमग्न हो गए, किसानों ने प्रशासन से जल्द पानी निकासी और माईनर की समुचित सफाई करनें की मांग की है।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम सौंपा गया ज्ञापन

औराई विधानसभा क्षेत्र, जनपद भदोही में ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के औराई तहसील महामंत्री नेहाल अली के नेतृत्व में पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं के निस्तारण को लेकर माननीय विधायक दीनानाथ भास्कर के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में बताया गया कि ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा पंजीकृत पत्रकार संगठन है, जो प्रदेश के 18 मंडलों, 75 जनपदों एवं 551 तहसीलों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। बावजूद इसके, ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों को सरकारी सुविधाओं का समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। ज्ञापन के माध्यम से तहसील स्तर पर पत्रकारों को मान्यता प्रदान करने, पत्रकार हितों की रक्षा हेतु स्थाई समितियों के गठन, ग्रामीण पत्रकारों को आयुष्मान कार्ड एवं निःशुल्क बस यात्रा सुविधा, प्रदेश स्तरीय मान्यता व विज्ञापन समितियों में प्रतिनिधित्व, लखनऊ में संगठन के लिए निःशुल्क कार्यालय, ग्रामीण पत्रकार आयोग के गठन तथा पत्रकारों पर एफआईआर दर्ज करने से पूर्व सक्षम अधिकारी से जांच कराने जैसी प्रमुख मांगें रखी गईं। विधायक दीनानाथ भास्कर ने पत्रकारों की मांगों को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री तक ज्ञापन पहुंचाने का आश्वासन दिया।

कृषि विज्ञान केंद्र ऐंठू कलाकांकर में किसान दिवस का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र ऐंठू कलाकांकर में किसान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 80 कृषकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान कृषक नरेंद्र कुमार गौतम निवासी ग्राम सहबाद द्वारा लघु सिंचाई योजना के अंतर्गत लाभ न मिल पाने, कृषक शिवबहादुर यादव द्वारा किसान पंजीकरण में ग्राम एवं ब्लॉक का गलत फीड हो जाने एवं कृषक नरेंद्र सेन मौर्य, राम सुनेर पटेल, राम दुलारे (निवासी सोनमऊ), सुरेश यादव निवासी त्रिलोचनपुर द्वारा छुट्टा पशुओं तथा आम की बागवानी को नीलगाय से बचाने हेतु तारबाड़ (फेंसिंग) की मांग रखी गई। ग्राम साहाबाद के कृषकों द्वारा चकबंदी कराए जाने की मांग की गई। सतीश मौर्य द्वारा डेयरी उद्योग प्रारंभ करने हेतु जानकारी चाही गई। मोहम्मद राजा निवासी मुरस्सापुर द्वारा बकरी पालन योजना से संबंधित जानकारी मांगी गई। भूमि संरक्षण अधिकारी चमन सिंह द्वारा सभी कृषकों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित विभागों को निस्तारण हेतु अवगत कराया गया। इस अवसर पर उपस्थित समस्त विभागीय अधिकारियों द्वारा सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी कृषकों को दी गई। समस्त कृषकों को फॉर्मर रजिस्ट्री करने के लिए बताया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन सिंह द्वारा कृषकों को नई कृषि तकनीकों एवं नवाचारों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। किसान दिवस कार्यक्रम में भूमि संरक्षण अधिकारी चमन सिंह, जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नवीन सिंह, पशु चिकित्सा अधिकारी, सहायक अभियंता (लघु सिंचाई/नलकूप), अधिशासी अभियंता (विद्युत विभाग), एडीसीओ, सहकारिता सहित अन्य विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जागरूकता ही एड्स से बचाव : डीएम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। एचआईवी-एड्स के प्रसार पर प्रभावी नियंत्रण और समय पर जांच व उपचार को मजबूत करने के उद्देश्य से मंगलवार को कलेक्ट्रेट में 'सुरक्षा से सम्पूर्ण सुरक्षा तक' कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद स्तरीय एडवोकेसी बैठक व संवेदीकरण कार्यशाला आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने की। जिलाधिकारी ने कहा कि जागरूकता ही एड्स से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है। सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और एचआईवी से जुड़ी सही जानकारी आमजन तक पहुंचाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि जांच, परामर्श और उपचार की सुविधाओं के प्रति लोगों का भरोसा बढ़ाया जाए तथा समाज में व्याप्त लांछन और भेदभाव को समाप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाएं।

कार्यशाला का आयोजन मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. हरिदत्त नेमी एवं जिला क्षयरोग अधिकारी डा. सुबोध प्रकाश के नेतृत्व में किया गया। बैठक में जनपद के विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी तथा स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ चिकित्सक उपस्थित रहे। जिला क्षयरोग अधिकारी डा. सुबोध प्रकाश ने सुरक्षित व्यवहार अपनाने पर जोर देते हुए बताया कि समय पर जांच और नियमित उपचार से एचआईवी को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने 95-95-95 रणनीति के तहत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर और समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता बताई। बैठक में यूएचएम निदेशक डा. बीसी पाल, आईएमए अध्यक्ष डा. अनुराग मेहरोत्रा, सचिव डा. शालिनी मोहन, डफरिन एसआईसी डा. रूचि जैन, एसएसके प्रभारी डा. रिचा बाजपेई सहित अन्य चिकित्सकों ने एचआईवी-एड्स की रोकथाम, उपचार और जन-जागरूकता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए।

बाल विवाह मुक्त भारत के लिए शपथ दिलाई गई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिले के उसका बाजार कस्बा के किसान इंटर कालेज पर बुधवार को बाल विवाह मुक्त भारत बनाने के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान प्रधानाचार्य संजय कुमार गुप्ता ने सभी को बाल विवाह मुक्त भारत के लिए शपथ दिलाई । प्रधानाचार्य ने बच्चों को बाल विवाह से होने वाले समस्याओं के बारे में बताया । उन्होंने कहा कि बाल विवाह एक गैर कानूनी कार्य है। इसी कारण सरकार ने बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 का प्रावधान किया है। इसमें बाल विवाह करने एवं कराने वाले सभी लोगों के लिए सजा का प्रावधान किया गया है। संविधान में बताया गया है कि विवाह की आयु लड़की की आयु 18 वर्ष और लड़के की 21 वर्ष होनी चाहिए। बालिकाओं और बालकों को बताया गया कि अगर कहीं बाल विवाह हो रहा तो 1098, 1090, 181 पर कॉल करके सूचित करें। सूचना देने वाले का परिचय गोपनीय रखा जाएगा। इस एक छोटे से प्रयास से किसी बालिका का भविष्य अंधकारमय होने से बच सकता है। इस अवसर पर अशोक कुमार यादव, डा सतेंद्र मिश्र, सुनील पाण्डेय, मनोज शर्मा, कैलाश चंद पाठक, राजेश यादव, सर्वेश उपाध्याय,राम दरस यादव, राघवेंद्र सिंह , अविनाश वर्मा, विजय , प्रमोद पाण्डेय, अनिल चौबे, गणेश शुक्ल, अनिल मिश्र, विरेंद्र पाण्डेय, राम उजागिर पाण्डेय आदि रहे।

संक्षिप्त खबरें

निजी नलकूप में फंदा लगाकर युवक ने दी जान, पुलिस जांच में जुटी

हमीरपुर– सुमेरपुर थाना क्षेत्र के बरुआ गांव में एक युवक द्वारा निजी नलकूप में फंदा लगाकर आत्महत्या किए जाने का मामला सामने आया है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।मृतक की पहचान 34 वर्षीय अमरीश पुत्र सत्यनारायण निषाद निवासी बरुआ गांव के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार अमरीश बोलेरो वाहन चलाने के साथ-साथ खेती-बाड़ी के कार्यों में भी परिवार का सहयोग करता था। वह परिवार की आजीविका का प्रमुख सहारा था।परिवार के लोगों ने बताया कि बीते कुछ दिनों से अमरीश परेशान और गुमसुम रहने लगा था। हालांकि उसने किसी से खुलकर अपनी परेशानी साझा नहीं की थी। घटना के पीछे क्या कारण रहे, इसे लेकर अभी स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है। पुलिस भी सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच कर रही है।मृतक अपने पीछे पत्नी पुष्पा देवी, एक पुत्री गौरी तथा दो पुत्र आदित्य और अनिकेतन को छोड़ गया है। अचानक हुई इस घटना से पूरे परिवार में कोहराम मचा हुआ है और गांव में शोक की लहर है।थानाध्यक्ष अनूप सिंह ने बताया कि शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

किशोरी का धर्म परिवर्तन कराने के आरोप में वांछित मौलवी गिरफ्तार

हमीरपुर– मझगवां थाना क्षेत्र में पुलिस ने किशोरी का धर्म परिवर्तन कराने के आरोप में वांछित चल रहे एक मौलवी को गिरफ्तार कर बड़ी कार्रवाई की है। आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद न्यायालय में पेश किया गया, जहां आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। मझगवां थाना प्रभारी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी की पहचान महोबा जनपद के जैतपुर बेलाताल कस्बा निवासी 60 वर्षीय जब्बार उर्फ हाफिज जी उर्फ मौलवी पुत्र अकबर के रूप में हुई है। आरोपी के खिलाफ 19 जुलाई 2025 को मझगवां थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था। तब से वह पुलिस की गिरफ्त से बाहर चल रहा था और लगातार फरार था। पुलिस के अनुसार आरोपी पर एक किशोरी को बहला-फुसलाकर उसका धर्म परिवर्तन कराने का आरोप है। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर आरोपी की तलाश के लिए विशेष टीम गठित की गई थी। इसी क्रम में मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि आरोपी महोबा जनपद के बेलाताल जैतपुर कस्बे में मौजूद है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम 2021 की धारा 3/5 के तहत कार्रवाई की गई है। पुलिस का कहना है कि मामले की विस्तृत जांच जारी है और आवश्यकतानुसार अन्य धाराएं भी बढ़ाई जा सकती हैं।

अज्ञात वाहन की टक्कर से वृद्ध महिला की मौत, परिजनों में मातम

हमीरपुर– राठ कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार को हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे में 62 वर्षीय महिला की मौत हो गई। खेत से काम करके घर लौट रही महिला को धनौरी गांव के पास एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि महिला सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गई। मृतका की पहचान धनौरी गांव निवासी तुलसारानी पत्नी दयाशंकर कुशवाहा के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार, तुलसारानी खेत से काम निपटाकर धनौरी मंडी के पास से अपने घर की ओर जा रही थीं। इसी दौरान पीछे से आए अज्ञात वाहन ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। घटना के बाद आसपास मौजूद ग्रामीण मौके पर पहुंचे और घायल अवस्था में महिला को तत्काल राठ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। वहां डॉक्टरों ने जांच के बाद तुलसारानी को मृत घोषित कर दिया। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस भी अस्पताल और घटनास्थल पर पहुंची। बुधवार को पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। घटना की जानकारी मिलते ही मृतका के घर में कोहराम मच गया। परिजन रो-रोकर बेसुध हो गए। मृतका के पुत्र नारायण कुशवाहा सहित पूरे परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। राठ कोतवाली प्रभारी इंस्पेक्टर ने बताया कि अज्ञात वाहन की तलाश की जा रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की जा रही है ताकि वाहन

अवैध अतिक्रमण पर प्रशासन सख्त गरजा बुलडोजर

● एसडीएम नेहा मिश्रा के नेतृत्व में मंडी समिति की जमीन से हटाए गए अवैध कब्जे, मौके पर मौजूद रहा पुलिस बल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कर्नलगंज, गोंडा। नवीन मंडी कर्नलगंज में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए बड़ी कार्रवाई की है। एसडीएम कर्नलगंज नेहा मिश्रा के नेतृत्व में मंडी समिति परिसर में लंबे समय से चले आ रहे अवैध कब्जों को हटाने के लिए बुलडोजर कार्रवाई की गई। इस दौरान मौके पर प्रशासनिक अमला और पुलिस बल भी मौजूद रहा। प्रशासन को लगातार शिकायतें मिल रही थीं कि नवीन मंडी करनैलगंज की जमीन पर अवैध निर्माण और कब्जे किए गए हैं, जिससे मंडी के संचालन और किसानों को आने-जाने में परेशानी हो रही है। जांच के बाद अतिक्रमण को चिन्हित किया गया और नोटिस देने के उपरांत बुधवार को कार्रवाई अमल में लाई गई। कार्रवाई के दौरान एसडीएम नेहा मिश्रा स्वयं मौके पर मौजूद रहीं और पूरी कार्रवाई की निगरानी की।

बुलडोजर के जरिए अस्थायी दुकानों, टीन शेड और अवैध निर्माणों को हटाया गया। प्रशासन की सख्ती देखकर अतिक्रमणकारियों में हड़कंप मच गया। किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पुलिस बल तैनात रहा। कार्रवाई शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई। एसडीएम ने स्पष्ट कहा कि सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और आगे भी ऐसी कार्रवाई जारी रहेगी। एसडीएम नेहा मिश्रा ने अतिक्रमणकारियों को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि यदि भविष्य में दोबारा अवैध कब्जा किया गया तो और कठोर कार्रवाई की जाएगी। मंडी समिति की जमीन किसानों और व्यापारियों की सुविधा के लिए है, उस पर कब्जा करने वालों के खिलाफ प्रशासन पूरी तरह सख्त है। मंडी में आने वाले किसानों और व्यापारियों ने प्रशासन की इस कार्रवाई का स्वागत किया और कहा कि अतिक्रमण हटने से मंडी में व्यवस्था सुधरेगी और आवागमन आसान होगा।

किसान दिवस जिला मुख्यालय से बाहर आयोजित करने की मांग, भारतीय किसान यूनियन ने सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः– भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के बैनर तले किसानों की समस्याओं को लेकर जिला प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराया गया है। संगठन ने जिलाधिकारी घनश्याम को ज्ञापन सौंपकर किसान दिवस के आयोजन को जिला मुख्यालय से बाहर, किसानों की सुविधा के अनुसार आयोजित करने की मांग की है। ज्ञापन में संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि प्रत्येक माह के तीसरे बुधवार को आयोजित होने वाला किसान दिवस किसानों की समस्याओं के समाधान का एक महत्वपूर्ण मंच है, लेकिन जिला मुख्यालय दूर होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश किसान इसमें शामिल नहीं हो पाते। दूरी, आवागमन की समस्या और खर्च के कारण छोटे व सीमांत किसान अपनी बात प्रशासन तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। भारतीय किसान यूनियन ने सुझाव दिया कि किसान दिवस का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र या तहसील स्तर पर किया जाए, ताकि अधिक से अधिक किसान अपनी समस्याएं सीधे अधिकारियों के समक्ष रख सकें। संगठन का कहना है कि किसान दिवस का उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब किसान बड़ी संख्या में इसमें भागीदारी कर सकें और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान हो।

ज्ञापन में जिले की विभिन्न तहसीलों में किसानों की गंभीर समस्याओं का भी उल्लेख किया गया। बताया गया कि मौदहा तहसील क्षेत्र के कई गांवों में फसलों को जंगली जानवरों से भारी नुकसान हो रहा है। आए दिन नीलगाय, जंगली सूअर व अन्य जानवर खेतों में खड़ी फसलों को नष्ट कर रहे हैं, जिससे किसानों की मेहनत पर पानी फिर रहा है। कई बार शिकायतों के बावजूद ठोस कार्रवाई नहीं हो पा रही है। किसान यूनियन ने चेतावनी दी है कि यदि किसानों की समस्याओं का समाधान समय रहते नहीं किया गया और किसान दिवस के आयोजन में बदलाव नहीं हुआ, तो संगठन को आंदोलन का रास्ता अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इसकी पूरी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। ज्ञापन सौंपने के दौरान संगठन के जिला व तहसील स्तर के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे। किसानों ने प्रशासन से शीघ्र सकारात्मक निर्णय लेने की मांग की है, ताकि किसान दिवस वास्तव में किसानों के हित में सार्थक सिद्ध हो सके।

किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए भाकियू ने सौंपा जिलाधिकारी को ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर ब्यूरो– कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित मासिक जिलास्तरीय किसान दिवस के अवसर पर भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) द्वारा किसानों की मूलभूत समस्याओं को लेकर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोल चबूतरा परिसर में आयोजित इस संगोष्ठी में जिलेभर से पहुंचे किसानों ने अपनी समस्याएं साझा कीं और उनके स्थायी समाधान की मांग की।

संगोष्ठी में प्रमुख रूप से अन्ना पशुओं से फसल संरक्षण, खाद की किल्लत, समय पर बीज व उर्वरक उपलब्ध न होने जैसी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। भाकियू पदाधिकारियों ने कहा कि किसानों की समस्याओं को लेकर संगठन पूरी मजबूती के साथ संघर्ष करेगा और प्रशासन से ठोस कार्रवाई की मांग करेगा।

कार्यक्रम के दौरान संगठनात्मक विस्तार करते हुए सोना देवी को भारतीय किसान यूनियन की जिला महिला महामंत्री पद पर मनोनीत किया गया। सभी सदस्यों ने उन्हें बधाई देते हुए किसानों के हित में सक्रिय भूमिका निभाने की अपेक्षा जताई।

इसके उपरांत भाकियू प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर किसानों की समस्याओं के शीघ्र समाधान की मांग की। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष शिवपूजन निषाद सहित भूपेंद्र भदौरिया, संतोष निषाद, सैय्यद शहबाज अली, रज्जू कुशवाहा, निर्मला देवी, पारस सैनी, शिवम यादव, शिवकरण मिश्रा, वीरेंद्र कुमार एवं अरविंद गोस्वामी समेत दर्जनों किसान मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में लटकता मिला महिला का शव, जांच में जुटी पुलिस

रतनपुर/महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सिसहनिया उर्फ शीशमहल में बुधवार की देर शाम लगभग 6 बजे एक महिला का शव काली माता मंदिर के पास सागौन के पेड़ में फंदे से लटकता हुआ मिला। सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की तैयारी में जुट गई। जानकारी के अनुसार परसामलिक थाना क्षेत्र के सिसहनिया उर्फ शीशमहल निवासी पप्पू अग्रहरि की पत्नी सुधा अग्रहरी उम्र लगभग (40) का शव संदिग्ध अवस्था में गांव के उत्तर काली माता मंदिर के बगल में सागौन के पेड़ से लटकता हुआ बरामद हुआ। लटकते हुए शव को देखकर ग्रामीणो ने परिजनों को सूचना दी। देखते ही देखते मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना पर पहुंची परसामलिक पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्यवाही में जुट गई। तत्पश्चात घटना की सूचना पर सीओ नौतनवां अंकुर गौतम को दिया। मौके पर पहुंच कर सीओ ने जांच पड़ताल कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने का निर्णय लिया।बताया जा रहा है कि मृतका की एक पुत्री रीना (15) व पुत्र विशाल (10) है। मां के मौत के बाद दोनों बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है।

मिशन जलोदय के तहत चन्द्रावल नदी पुनरोद्धार का शुभारम्भ, एक जनपद-एक नदी के संकल्प को मिली गति

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

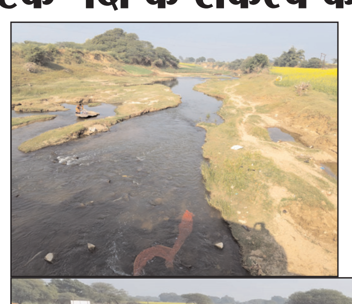

हमीरपुर– जलोदय जल अभियान के अंतर्गत तहसील मौदहा के ग्राम पंचायत पढ़ौरी में बुधवार को चन्द्रावल नदी के पुनरोद्धार कार्य का भूमि पूजन कर शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री (जलशक्ति विभाग) एवं जनपद के प्रभारी मंत्री रामकेश निषाद ने जनपद के जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में किया।इस अवसर पर जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने मिशन जलोदय की कार्ययोजना पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मुख्यमंत्री के आवाहन पर ओडीओपी की तर्ज पर एक जनपद-एक नदी के पुनरोद्धार का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि मिशन जलोदय की शुरुआत आज से एक वर्ष पूर्व हुई थी, जिसके तहत तालाबों, अमृत सरोवरों एवं अन्य जल स्रोतों के संरक्षण का व्यापक अभियान चलाया गया।

जिलाधिकारी ने जानकारी दी कि बीते एक वर्ष में जनपद में 5000 से अधिक खेत तालाबों का निर्माण किया गया, जिससे खेतों का जलस्तर बढ़ा है। नवीन भू-वैज्ञानिक आंकड़ों के अनुसार जनपद के चार विकास खण्ड क्रिटिकल श्रेणी से बाहर आ चुके हैं। इसके सकारात्मक परिणामस्वरूप कई फसलों के उत्पादन में 1100 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री रामकेश निषाद ने कहा कि जनपद की जीवनदायिनी चन्द्रावल नदी का पुनरोद्धार अत्यंत हर्ष का विषय है। यह ऐतिहासिक नदी हमीरपुर जनपद में लगभग 68 किलोमीटर की यात्रा करती है। सरकार का स्पष्ट संकल्प है कि जनपद की ऐतिहासिक एवं पौराणिक नदियों को पुनर्जीवित किया जाए। यह अभियान जनभागीदारी से सफल होगा। उन्होंने कहा कि नदियों और तालाबों का पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व सदियों से रहा है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में नदियों व तालाबों के किनारे अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं, जिन्हें पर्यटन से जोड़े जाने की आवश्यकता है। कभी आस्था का केन्द्र रही चन्द्रावल नदी आज विलुप्ति के कगार पर है, इसलिए इसका पुनरोद्धार समय की आवश्यकता है। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष जयन्ती राजपूत, विधायक सदर डॉ. मनोज कुमार प्रजापति, भाजपा जिलाध्यक्ष शकुन्तला निषाद, मुख्य विकास अधिकारी अरूण कुमार सिंह, डीसी मनरेगा राघवेन्द्र सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी, उद्यमी, खनन पट्टाधारक, ग्राम प्रधान, पत्रकार बंधु, स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

दिल्ली: बच्ची से यौन उत्पीड़न मामले में दोषी को 20 साल की सजा

नई दिल्ली। तीस हजारी की एडिशनल सेशन जज की कोर्ट ने नाबालिग लड़की के अपहरण और यौन उत्पीड़न के मामले में दोषी सूरज कुमार को 20 साल कैद की सजा सुनाई है। कोर्ट ने आरोपी पर 10,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया है। कोर्ट ने कहा कि दोषी ने जो अपराध किया है, वह गंभीर है और इसका पीड़ित पर गहरा मानसिक और शारीरिक असर पड़ा है। कोर्ट ने यह भी आदेश दिया कि पीड़ित को 10.50 लाख रुपये का मुआवज़ा दिया जाए। इस रकम का इस्तेमाल पीड़ित के पोषण, काउंसलिंग और पुनर्वास के लिए किया जाएगा। चूंकि आरोपी के पास भुगतान करने की क्षमता नहीं है, इसलिए यह रकम दिल्ली राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण के जरिए सीधे पीड़ित के बैंक अकाउंट में जमा की जाएगी। घटना के समय पीड़ित 10 साल की थी और अब 13 साल की है। उसके पिता की मौत हो चुकी है और उसकी मां घरेलू सहायिका के तौर पर काम करती है। पीड़ित अपने दादा-दादी के साथ रहती है। कोर्ट ने पाया कि बच्चे को कोई शारीरिक चोट नहीं आई, लेकिन यौन उत्पीड़न की घटनाएं कई बार हुईं। दोषी सूरज कुमार सिक्योरिटी गार्ड का काम करता था।

सांसद के.लक्ष्मण ने नवनियुक्त राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन को कहा युवाओं के प्रणेता, दी बधाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। ओबीसी मोर्चा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद डॉ.के.लक्ष्मण ने भाजपा के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन को युवाओं का प्रणेता बताते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में युवा समृद्ध भारत के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाएंगे। डॉक्टर लक्ष्मण ने नव मनोनीत युवा कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन का केंद्रीय कार्यालय में जोरदार स्वागत किया। उन्होंने कहा कि एक युवा के हाथों में राष्ट्रीय संगठन की बागडोर देकर पार्टी ने यह स्पष्ट संकेत दिया है कि युवा ही देश की असली ताकत है तथा वह प्रधानमंत्री मोदी के विकसित भारत के सपने को पूरा करने में अपनी पूरी ताकत लगा देंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा एक मात्र ऐसी पार्टी है जहां योग्य,अनुभवी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान मिलता है। यहां परिवारवाद नहीं है,जो एक स्वस्थ राजनीति की पहचान होती है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन एक योग्य,अनुभवी एवं ऊर्जावान युवा नेता है, जो पार्टी को नई बुलंदियों तक पहुंचने की भरपूर क्षमता रखते हैं। डॉ. लक्ष्मण ने कहा की श्री नबीन ने गत बिहार विधानसभा चुनाव में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई थी तथा इसके पहले भी पार्टी द्वारा उन्हें कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी गई उन्होंने अपनी लगन,मेहनत से अपनी जिम्मेदारियां का भरपूर निर्वाह किया।

श्रीभूमि जिले के लालछड़ा 21 नंबर अंगनवाड़ी केवल नाम में ही मॉडल है

● छात्र-छात्राओं को विभिन्न सुविधाओं के साथ पीने के पानी की सुविधाओं से वंचित किया जा रहा है!

मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री का ध्यान आकर्षित।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमिः वर्तमान सरकार ने प्रारंभिक बाल विकास की सफलता के लिए मॉडल अंगनवाड़ी केंद्र असम के विभिन्न जिलों में बनाए हैं, जिन अंगनवाड़ी की अभी भी आवश्यकता है, वही निर्माण कार्य चल रहा है। 1975 में समन्वित बाल विकास सेवा (ICDS) के तहत शुरू किए गए ये केंद्र प्री-स्कूल बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण भोजन, उन्नत स्वास्थ्य सेवा और विकासात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने कदम उठाए हैं। इन केंद्रों पर बच्चों को पोषण, स्वास्थ्य और बाल्यकाल शिक्षा से संबंधित आवश्यक सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। लेकिन श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के लालछड़ा जीपी के अधीन लालछड़ा 21 नंबर मॉडल अंगनवाड़ी शिक्षा केंद्र महत्वपूर्ण होने के बावजूद मॉडल केंद्र में शिक्षिका और छात्र विभिन्न कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। शुद्ध पीने के पानी की कमी और बिजली कनेक्शन से वंचित! इस स्कूल की एक शिक्षिका ने कहा, 'हमारे आंगनवाड़ी का छत का हिस्सा टूटकर गिर रहा है, कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं है। बच्चों को डर-डर कर पढ़ाई कराई जा रही है क्योंकि अगर छत का कोई टुकड़ा सिर पर गिरा तो क्या होगा, इसका कोई समाधान नहीं हो रहा है। उन्होंने आगे कहा कि क्लास के दरवाजे और टॉयलेट के दरवाजे लगाने के लिए सही व्यवस्था या कुंडली भी नहीं है, दरवाजा कैसे बंद करेंगे, शौचालय में पानी की कोई सुविधा नहीं है। इस बीच यह जानकारी मिली कि मॉडल आंगनवाड़ी स्कूल का निर्माण कार्य 2022 में शुरू हुआ था और वर्तमान सरकार ने इस पर 25 लाख रुपये खर्च किए। लेकिन इतने खर्च होने के बाद भी तीन साल में निर्माण कार्य अभी तक सही ढंग से और गाइडलाइन के अनुसार पूरा नहीं हुआ, इसलिए निर्माण की स्थिति खस्ता और बुरी है। मॉडल आंगनवाड़ी केंद्र में निम्न गुणवत्ता के सामग्री का उपयोग नहीं किया गया, यही वजह है कि यह इतनी बुरी स्थिति में है। देखा जा सकता है कि स्कूल आंगनवाड़ी केंद्र का भवन अन्य मॉडल स्कूलों की तुलना में छोटा है। इसका मतलब यह समझा जा सकता है कि स्कूल निर्माण कार्य में सरकार के पैसे का कोई उचित उपयोग नहीं हुआ। शिशु शिक्षा विकास के लिए सरकार लाखों रुपये खर्च कर रही है, लेकिन यह पैसा सही तरीके से इस्तेमाल नहीं हो रहा। यह केवल नाम में मॉडल है, लेकिन बच्चों को मॉडल की सुविधाओं से वंचित रखा गया है! उन्हें सही सेवा नहीं मिल रही। बच्चों के अभिभावकों ने कहा असंतोष को प्रकट करते हुए कहा कि जो सुविधाएं आवश्यक और जरूरी हैं, उनके लिए पानी का प्रबंध नहीं है, बच्चों को पानी अपने घर से लाना पड़ता है। हमारी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति जारी है। विभिन्न समस्याएँ गंभीर हैं। इस संदर्भ में लोकप्रिय मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा और शिक्षा मंत्री रनोज पेगु का ध्यान आकर्षित किया गया ताकि बच्चों के भविष्य और जनकल्याण के हित के लिए सही कदम उठाए जा सकें।

हाईस्कूल छात्रा की आत्महत्या,परिवार में मचा कोहराम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः– मौदहा कोतवाली क्षेत्र के पढ़ोरी गांव में मंगलवार शाम एक हृदयविदारक घटना सामने आई, जहां 15 वर्षीय हाईस्कूल छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। खेत से लौटे माता-पिता ने बेटी को कमरे में फंदे से लटका देखा, जिससे पूरे परिवार में कोहराम मच गया। आनन-फानन में छात्रा को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।मृतका नेहा पुत्री राकेश निषाद कस्बे के नेशनल इंटर कॉलेज में कक्षा दस की छात्रा थी। परिजनों के अनुसार, नेहा मंगलवार को रोज की तरह स्कूल से घर लौटी थी। जिस समय उसने यह कदम उठाया, उस समय उसके माता-पिता खेत पर काम करने गए थे, जबकि घर में केवल उसकी बुजुर्ग दादी मौजूद थीं। घटना के समय घर में किसी को भी आत्महत्या की भनक तक नहीं लगी। शाम को जब राकेश निषाद और उनकी पत्नी खेत से घर लौटे तो उन्होंने बेटी को एक कमरे में साड़ी के फंदे से लटका पाया। बेटी की हालत देखकर परिजन बदहवास हो गए और तत्काल उसे फंदे से उतारकर अस्पताल ले गए, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पिता राकेश निषाद ने बताया कि बेटी के इस कदम के पीछे उन्हें कोई कारण समझ में नहीं आ रहा है। पड़ोसी छोटे लाल ने बताया कि राकेश निषाद के पास करीब चार बीघा खेती की जमीन है, जिससे परिवार का पालन-पोषण होता है। परिवार पहले से ही एक बड़े हादसे का दंश झेल चुका है। करीब तीन वर्ष पूर्व उनके सात वर्षीय बेटे नितेश की नदी में डूबने से मौत हो गई थी। नेहा मंगलवार शाम करीब चार बजे स्कूल से सकुशल घर लौटी थी, लेकिन अचानक उसने आत्मघाती कदम उठा लिया। मौदहा कोतवाली प्रभारी संतोष सिंह ने बताया कि छात्रा के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस आत्महत्या के कारणों का पता लगाने के लिए हर पहलू से मामले की जांच कर रही है।

मुजफ्फरनगर में तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आने से दो महिलाओं की मौत

मुजफ्फरनगर जिले के नई मंडी थाना क्षेत्र में भोपा बाईपास पर एक अज्ञात तेज रफ्तार गाड़ी की चपेट में आने से दो महिलाओं की मौत हो गई, जबकि एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, मृत महिलाओं की पहचान राजवीरी (47) और बबली (45) के रूप में हुई है, जबकि सोनिया (23) गंभीर रूप से घायल हो गई। नई मंडी के पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) राजू कुमार साव ने बताया कि यह घटना सोमवार शाम को तब हुई, जब महिलाएं सड़क पार कर रही थीं। सीओ ने बताया कि दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और घायल महिला को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मथुरा हादसे में राठ के नौरंगा गांव की निवासी महिला की मौत व लींगा के दो युवक हुए गम्भीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर– राठ तहसील क्षेत्र के नौरंगा गांव की निवासी पार्वती नाम की एक महिला की मथुरा के पास यमुना एक्सप्रेसवे पर हुए सड़क हादसे में बस में आग लग जाने से जलकर मौत हो गई है। मथुरा के यमुना एक्सप्रेसवे पर हुए भीषण सड़क हादसे ने कई परिवारों की खुशियां छीन लीं। हादसे के दौरान एक मां ने ममता की ऐसी मिसाल पेश की, जिसे सुनकर हर किसी की आंखें नम हो गई। 42 वर्षीय पार्वती ने अपने दोनों बच्चों को जलती बस से बाहर फेंक दिया। उसने अपने बच्चों की जान तो बचा ली, लेकिन खुद उस आग के दरिया से बाहर नहीं निकल सकी और उसकी मौत हो गई।

हमीरपुर के राठ तहसील क्षेत्र के नौरंगा गांव की रहने वाली पार्वती अपने बच्चों प्राची और शनि के साथ नोएडा से पति गोविंद के पास लौट रही थी। सफर सामान्य चल रहा था,किसी को अंदेशा नहीं था कि कुछ ही पलों में जिंदगी मौत में बदल जाएगी। अचानक बस की टक्कर हुई और देखते ही देखते उसमें आग लग गई। चारों ओर चीख-पुकार मच गई। धुएं और लपटों के बीच पार्वती ने मां होने का फर्ज निभाया। उसने बस का शीशा तोड़ा और किसी तरह अपने दोनों बच्चों को बाहर निकाल दिया। बच्चों को सुरक्षित देखकर उन्हें शायद पल भर का सुकून मिला, लेकिन उसी दौरान कांच का टुकड़ा उनके गले में फंस गया। आग और धुएं के बीच वे बस से बाहर नहीं निकल सकीं। वहीं इसी हादसे में राठ कोतवाली क्षेत्र के लींगा गांव के निवासी ऋषिकांत गुप्ता पुत्र सुखलाल गुप्ता और अनिल अहिरवार भी गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। दोनों युवक मजदूरी करने के लिए स्लीपर बस में सवार होकर गुड़गांव और दिल्ली जा रहे थे। अग्निकांड में दोनों युवकों के बैग मोबाइल और पूरा सामान भी जल कर राख हो गया है। इस हादसे में अब तक 13 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं 70 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं।